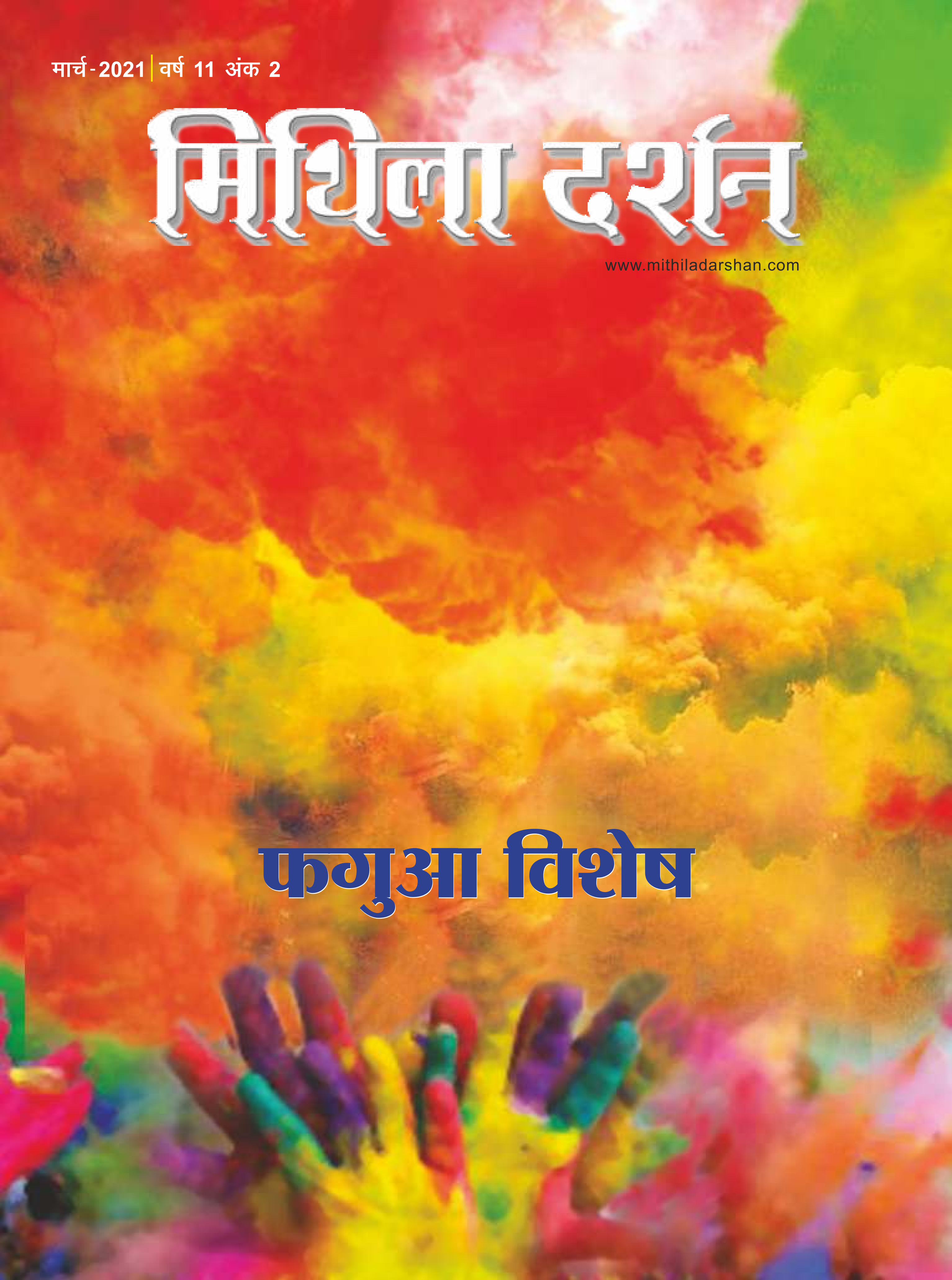
मार्च - 2021 | वर्ष 11 अंक 2

मिथिला दर्शन

www.mithiladarshan.com

फगुआ विशेष



मिथिला दर्शन

साहित्य, समाजक दर्पण

www.mithiladarshan.com

Volume XI No. 2 : March 2021

Published by Suchita Singh for **Mithila Darshan Media Private Limited** from A-132, Lake Gardens, Kolkata - 700 045. While all care has been taken to ensure correct information, the Company does not accept any responsibility or liability for any discrepancy or error. Disputes, if any, are subject to exclusive jurisdiction of competent courts in Kolkata only.

प्रधान संपादक
Prof. Udaya Narayana Singh
Chair-Professor & Head, ACLiS
Amity Centre for Linguistic Studies
Amity University Haryana
Pachgaon, Manesar, PIN - 122 431

सम्पादकीय सम्पर्क
कुणाल
कार्यकारी सम्पादक
302, Rajlaxmi Residency
B-35, Buddha Colony,
Patna-800 001
मोबाइल : 93343 39348

Editorial Office : ***Mithila Darshan***
A-132, Lake Gardens, Kolkata- 700 045
E.mail : mithiladarshan@gmail.com

पायब निज अधिकार कतहु की बिना झगड़ने?
अछि सलाइ मे आगि, बरत की बिना रगड़ने?
- कविवर सीताराम झा



अग्निजीवन

एकदिन भोरे उठि कय इच्छा भेलनि भरिसक इतिहास हननक। से ओना त ओ जीवैत छला अपन मानस-पृथ्वीये में जतय ने होइ छै यात्रा केर कोनो प्रारम्भ ने कोनो उद्देश्य। हमर दुनू के युवावस्था में कलकत्ता केर सर्पिल ट्रामवे जेना अपन रहस्य के भरपूर रूप से छुपा छुपा कय मोरे-भोर गंगा कछेर चलि पड़ैत छल - ठीक तहिना ताज़ा हवा केर सबटा सुगंध ल कय जेना अग्निजीवी मित्रवर कोनो अप्राप्य अनिर्देशक दिसि चलि पड़ल छला ओहिदिन-दूर अस्पष्ट होइत। तकरहि कोनो कमरा सँ भ्राताजी शुकदेव ठाकुर हाथ हिला कय जैना बजा रहल छला हुनका, चलि अएबा ले इतिहासक दिसि। छोड़ू समाज केर सड़ैत गलैत राजनीति केर चिंता, सहित - साहित्यक व्युत्पत्ति के ल कय अणिमा जीक संग कतेको वितर्क, अथवा ढहैत राष्ट्र-व्यवस्था क नाट्य-चित्रण के कोना झूटठों अपन अभिनय प्रतिभा सँ मंच केर पाद-प्रदीप केर सामने उजागर करब तकर सोच, चरैवेति चरैवेति सबटा श्रुति स्मृति सँ विस्मृतिक दिसि।



उद्देश्य पद कतबो नमहर नमहर डेग बड़ा कय भागिं जानि हुनकर हाथ छोड़ा कय, विधेय में मानू नुकायल रहे छलै इतिकथनक कतोक सामग्री। मोन पड़ि रहल छल हुनकर लिखलका मैथिली लोककथा-क (1983) कथा ठठपालक- जे कि पाली मोहन, खजौली केर एहि चिर-तरुण, एहने सब लोक-कथा नानी, माँ आ लात-मामा में सुनने छला। लिखला स एहि जीवनक सबटा श्रव्य जगत, हिज्जै आ व्याकरणक जटाजाल में ओझरा कय रहि जाइत अछि-से ओ जानैत छला। एहन अवलुप्त-प्राय धरोहर के वाग-वर्णन मे जखनहि क्यो जकड़य चाहत, तखने लागत जे एही अपार धन-रत्नक भण्डार छिड़िआयल रहय सेहो नीक, परन्तु ओ लेखनक अथवा आखरक कृति-विकृतिक तनाव मे बंद भ कय ने रहि जाय।

के छला ठठपाल? "देखबा-सुनंबा में सुन्नर, तेहने मेधावी आ तेहने पढ़बा-लिखबा मे चन्सगर?" जे क्यो एतबा पढ़िये कय बूझि सकै छल जे आब भरिसक हिनकर मुंह से एहि पिहानी के - एकरा मे नुकाओल बुझौअल के भेद करय चाहब त हमरा व्याकरण आ' विशुद्धि क मापदंड के दूर हंटा कय राखहि-टा पड़त। 'प्रतिध्वनि' (1982) सनक अनुवाद-कविता केर सर्जक ई जादूगर' (1982), जे अपन भाषांतर करबाक तकनीक केर छाप इतिमध्य छोड़ि चुकल छला-ई अपनहि वैह बेताल छला, अपनहि पुनर्कथन बेताल कथा' (1981) केर - 'ठठपाल बहुत दिन धरि परदेस मे' वास क रहल छला - मधुबनी आ' मिथिला सँ दूर द्वारबंग सँ आगाँ जा कय महानगरीक महा-दानवक गर्भ-देश मे - विद्या भेंटलनि ठठपाल के, 'चारूभर हुनक बुद्धिक चर्चा होमय लागल। पाइयो-कौड़ीक नीक आमदनी होमय लगलनि। एहन सब चाभी केर संधान भेटि गेल छलनि जकरा ताला में डालू आ घुमाऊ त माँ सरस्वती अहाँ क हाथ ध कय ल जैती एहन कल्प-लोक मे जतय गेलाक बादो भ' सकैए लगतनिः 'तखन हिनका अपन गाम, गामक माटि पानीक सोह भेलनि'।

गामक खोज कविता मे अग्निजीवी स्वीकारै छथि जे हमरा गाममे/कौनों वीर दम्पतिक शास्त्रालाप नहि भेल छल/ नहि भेल छलाह अवतरित/ कौनो महापुरूष। मुदा एतबा त अबस्से जे- 'देशक बहुतो गाम सन .. हमरो एकटा गाम छल'। कैहन छलनि औ गाम? त

'एकटा शिव मन्दिर
एकटा डीहबारक थान
एकटा सलहेसक गहबर
एकटा मसजिद..
कतेको टोल
कतेको जाति-धर्मक संयोग सँ बनल
हमर गाम
हमरा सभक गाम छल।'

की छल परिचय एहन अनामा गामक? त

पसर मे जाइत चरवाहक पराती
आ साँझमे दूर नदी कात सँ
बाध-बोनासं भासल अबैत
चौमासा-बारहमासाक स्वर
आँगनसँ
ढेकी जातक संगीतक संग
लगनीक स्वर
कहियो सोहर, कहियो समदाओन
कहियो तिरहुत, कहियो मलार
हमर गामक परिचिति छल'

एहन गाम में घुरलाक बादो - आ कतेको लोक हिनकर स्वागत करनि आ आदर करनि - सर-समाज कुनू काज उदम होए त हिनका अरबधि के बजाओल जाइन आ विचार पूछल जाइन'। मुदा कतबो किछ, छलाह आ रहि गेलाह त भ ठपाले।

तकर बादक गप्प हमरा अहाँ केर सभक दादी-नानी कहनहि छली - टूर देश में जा कय कुनू नीक सं नाम राखि लेबाक उद्देश्य से निकलल ठठपाल के बूझि पड़लनि -एही दुनिया में मनुक्खक भाषा आ मनुक्खक, वास्तव में छइ अनेक प्रभेद। कियैक त आन्हरक नाम एतय राखल जाइत छनि पदमलोचन'

सब देश घुरि कय हुनका लागलनिः

'धनपति देह पर लत्ता-पत्ता नहि
अशर्फी ढोथि पुआर
अमर साहू कें मरिते देखल
भनहि नाम ठठपाल।

आगि सँ झुलसैत एहि जीवन में आब हमरा-सभक शब्द पर सँ, सबटा देल गेल प्रतिश्रुति पर सँ विश्वास उठि गेल अछि। ओ जानैत छलथिन जे कोना कोना कय हमसब शब्दक चीरहरण कयने छी। अजुका युग में 'शब्द' कविता में ओ एक ठाम लिखै छथिः

हमरा लोकनि
अर्थात एकैसम शताब्दीक
सभ्य सुशिक्षित मनुक्ख
शब्दकें बना लेने छी अस्त्र
अस्त्र विभाजनक
अस्त्र शोषणक
अस्त्र संहारक
आइ शब्द, संवेदना नहि
घृणा द्वेषक करैत अछि सृष्टि- संचार

आउ-जौं आर किछु नहिये क सकियनि, एहि अग्निजीवी के सलाम करियनि।



रामलोचन ठाकूर

जन्मदिन (18 मार्च 1949) पर
आइ आश - आकाशक नीचां
मेघक क्रंदन
आशंका - ठनकाक हृदयबेधक
कटु गर्जन
जन्मदिनक शुभ छनमे आंखि
सभकें अछि भीजल
लोचन खोलू राम! कहू
'देखू..... एलौं......चल!

–भीमनाथ झा

कवि, व्यंग्यकार, अभिनेता, संपादक, अनुवादक, मैथिली सेनानी, मिथिलादर्शन क पूर्व कार्यकारी संपादक विगत 12.02.2021 स अपन कोलकाता आवास,चिराग अपार्टमेंट, इटालगाछा रोड (दमदम एयरपोर्ट) कोलकाता 28 स निखोज छइथ ।

विस्मरण क व्याधि स पीड़ित ठाकूर जी के हेरबाक समस्त प्रयास निष्फल ...... हुनकर एना विलोपित होएब अतिशय पीड़ादायक अइ।

–संपादक

ठाकुरजी परिवारक
सम्पर्क : 90072 67031
98314 74891

सत्ताक 'गुमान' आ किसान आंदोलन

• सुकान्त सोम

देश कें पछिला छौ मास सँ बेसी समय सँ आंदोलित करयवाला किसान आंदोलन आ दिल्लीक घेराबंदी कत ओ कोन अवस्था मे अछि? ओकर भवितव्य की छै? आंदोलनक नेतृत्व एकरा जीवित रखबाक लेल कोन रणनीति बनाओलक अछि आ ताहि पर कोना काज क रहल अछि? केन्द्र सरकार एकर शमन-दमन ल क की सोचइए आ ओकर की तैयारी छै? देशक मुख्यधाराक मिडियाक बहुलाँश आंदोलनक अद्यावधि कार्यक्रम आ तकर प्रभावक आकलन करैत ओकर भविष्य कें कोना देख रहलए? एहने कतोक प्रश्न कें राष्ट्रीय विमर्श सँ बाहर क देल गेलइए किंवा कैल जा रहलइए। आ एहि राजनीतिक परिदृश्य मे देशक पाँच राज्यक- पश्चिम बंगाल, असम, तमिलनाडु, केरल आ पुडुचेरी- विधानसभाक चुनाव भ रहलइए। एहि पाँतिक प्रकाशन धरि एहि चुनावक परिणाम आबि गेल रहत, नव सरकारक हुलिमालि मे राजनीति आ लोक बाझल रहत। एहि उत्तेजक वातावरणक अछैतहुँ राजनीतिक- बौद्धिक विमर्शक केन्द्र मे ई नहि छै जे केन्द्र आ राज्यक नेतृत्वकारी सत्ता-राजनीति सँ पछिला पाँच वर्षक भीतर देश किंवा एहि पाँच राज्य कें की-की भेटलै, एहि पाँच वर्षक अभ्यंतर जीवन बेसी सहज भेलइए की दुरुह? एहि पाँच राज्यक चुनावी- आ देशक आन हिस्साक- विमर्श मे ई नहि छै जे पेट्रोल-डीजले नहि, एलपीजी गैस सेहो आब साप्ताहिक स्तर पर महग भेल जा रहलए। डीजल-पेट्रोलक दाम समस्त कीर्तिमान कें पाछू छोड़ैत शतक पूरा कय रहलए त एलपीजी सिलेंडर आब जै दिन मे ने हजारी भ जाय। मुदा, तइयो हमर देशक बौद्धिक- राजनीतिक विमर्श धार्मिक उन्मादक विषय सँ बाहर नहि निकलि रहलए। दिन-प्रतिदिन बढ़ैत महँगी आ बेरोजगारी सन दुःश्चक्र देश कें कनियो त्राण नहि भेट रहल छै। राष्ट्रीय आ बलाँश मे राज्यक सत्ता पर काबिज राजनीतिक समूह जे चाहइए, सैह होइ छै- जे रोगी कें भावे, सैह मिडिया देखाबै। जय हो, निधोख भ कहियौ!

किसान आंदोलनक सबसँ महत्वपूर्ण दौर मे लालकिलाक प्राचीर पर 'किछु उत्साहित आंदोलनकारी' क किरदानी सँ केन्द्र सरकार के खूब लाभ भेटलै- आंदोलन कें बदनाम करबाक सभटा ब्योंत अनायास करा देल गेलै। तकराबाद सँ केन्द्र सरकार आ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) मे शामिल दल सभक नेतृत्व आंदोलन कें बदनाम करबाक खूब अभियान चलौलक आ से चलिए रहलइए। किसान आंदोलनक संदर्भ मे सत्ताधारी भाजपा- आ तैं सरकारक सेहो- नेतृत्वक दूतरफा रणनीति छै- आंदोलन कें बदनाम करबाक कोनो अवसर कें खूब भजाओल जाए; दोसर, किसान प्रतिनिधि सभ सँ कहियो सकारात्मक ओ ठोस प्रस्तावक संग वार्ता नहि क आंदोलनकारी कें थका क पस्त क देल जाए। भाजपा आ एनडीए मे शामिल दल सभक संग-संग केन्द्रक नेतृत्वकारी नौकरशाहीक मानब छै जे एहि तरहें किसान आंदोलन मोदी-राजक आन कतोक विरोध-आंदोलन जकाँ स्वतः समाप्त भ्न जेतइ- अपटीक खेत मे प्राण चल जेतैक। लालकिलाक घटनाक बाद किसान आंदोलन आक्रामकता आ जन-किसान भागीदारीक अभाव भ गेलै। सरकारक चुप्पा दमनक कारणें कतोक किसान संगठन एहि सँ अलग भ गेल। कतोक किसान संगठन भाजपा शैलीक राष्ट्रवादी भ तीनू नवका कृषि कानून कें स्वीकार कय्न लेलक। दिल्लीक सीमा सभ सँ रऊँटी (टेंट) सभ तेजी सँ उखड़ लगलइ। सरकार आ मीडियाक बहुलाँश मानि लेलक जे आंदोलन फुस्स भ गेलइए आ अपन अघोषित समापनक बाट जोहि रहलए। की वास्तविकता सैह छै? कथमपि नहि। राकेश टीकैत किंवा आन आंदोलनकारी किसान नेता की कहै छथि, ताहि पर नहि जाऊ- मौसम आ आंदोलनक भौगोलिक विस्तार कें देखियौ। किसानक कहब अछि- खेतियो करब, सरकार सँ लड़बो करब। से देखाइयो पड़ै छै। दिल्लीक सीमा पर किसानक संख्या कम भ गेलइए, मुदा सरकारक काँटवला तारक घेराबंदी (बाड़बंदी) बढ़ि गेलइए, उत्तर प्रदेश आ पंजाब हरियाणा सँ दिल्ली जाएवला हाइवे सभ पर अलकतराक संग सुल्फा सन काँटी सेहो खूब लगा देल गेलइए- भारत-पाक सीमा सँ बेसी खतरनाक ढंग सँ।

विचार कें बान्हि क नहि राखल जा सकइए तहिना जे आंदोलन पैघ उद्देश्य सँ आगाँ बढै छै, से बान्ह-छेक कें स्वीकार नहि करइए। एहि तथ्य कें बिहारे नहि, भारतक आमजन नीक जकाँ जनइए, ओकर देखल आ भोगल छै। हिन्दी पट्टी मे एकर सबसँ पैघ उदाहरण 1974क छात्र-जेपी आंदोलन अछि। आपात्कालक दौर मे आंदोलनक कोनो उचा-वर्च कतहुँ नहि देख-सुन मे अबै, लगैत रहै जे सभटा खत्म भ गेलै। परञ्च आम चुनावक घोषणा होइतहि संपूर्ण राजनीतिक परिदृश्य बदलि गेलै। 1077 मे चुनाव परिणाम की भेलै से कहबाक प्रयोजन नहि। सतरंजीक नीचाँ जेना पानि पसरै छै आपात काल मे तहिना इंदिरा-विरोधी आंदोलन गामे-गाम पसरि गेल रहै। से, अहू बेर किसान आंदोलन पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड आ राजस्थानक समेत कतोक नव इलाका मे गामे-गामे पसरि रहलइए- खाप आ किसान पंचायत- महापंचायत सँ सैह त संकेत

भेटइए। दिल्ली सीमा सँ किसान सभ खेत मे घुरि रहल छथि- पाकल फसल काट लेल आ अगिला फसलक व्यवस्था मे। मुदा ताहि सँ की, महिला किसान सभक समूह दिल्लीक सिंघु, टिकरी, गाजीपुर, शाहजहाँपुर सीमा पर जुमि गेलइए। कोनो आंदोलन मे महिलाक भागीदारी महत्व त रखितै छै, विशिष्ट राजनीतिक संकेत सेहो दइ छै। पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब आदि राज्यक ग्रामीण क्षेत्र मे भाजपा आ एकर सहयोगी दल सभ कें जाहि जन-आक्रोशक सामना कर पड़ि रहल छै, से बिहार आंदोलनक पुनरावृत्ति सन लगइए। तहिया आंदोलन विरोधी नेता सभ- विशेष रूप सँ काँग्रेस आ भाकपाक- कें ग्रामीण बिहार मे एहने विरोधक सामना कर पड़इ छलनि। जेपी-छात्र आंदोलन, गुजरातक नव निर्माण आंदोलन, दक्षिणक द्रविड़ आंदोलन, बंगाल मे काँग्रेस विरोधी माकपाक आंदोलन, असमक छात्र आंदोलन आदि कतोक आंदोलन-अभियान एकर टटका आ जीवंत प्रमाण थिक। ई सभ आंदोलन भने सीमित अर्थे मे सफल भेल हो। ई मान मे कोनो असौकर्य नहि जे अधिकाँश आंदोलन अपन घोषित उद्देश्य कैं हासिल नहि कएलक, मुदा तात्कालिक सत्ता परिवर्त्तनक वाहक त भेबे कैल। राजगद्दी पर आसीन भ फेंच काढ़ि फुफकार छोड़इत नाग कैं सभ दौर मे 'जनतांत्रिक सत्ता परिवर्त्तन' क एहि तथ्य आ एकर इतिहास कैं स्वीकार करबा मे असौकर्य होइत रहलइए। की देशक मौजूदा सत्ता-समूह एही सोचक शिकार भ गेल लगइए? निर्णय हम अहीं पर छोड़ै छी। संसदीय जनतंत्र- जे भारतक घोषित सत्ता व्यवस्था थिक- मे बहुमते जरूरी नहि छै, संविधान ओ संविधानवाद आ अल्पमतक सम्मान ओ समावेशी शासन नीति सेहो जरूरी छै। आ यैह कारण छै जे संसद-विधायिका में मोट-मोट आखर मे लिखल रहै जे 'विपक्ष भी सत्ता का अंग है।' से भ रहलए की? संसद- विधायिकाक सोपान पर माथ नमोला किंवा एहि सोपानक धूल-कण कैं त्रिपुंड जकाँ ललाट पर लपेटला सं किंवा देश-विदेशक हजारहुँ कैमराक फ्लैशलाइट मे संविधान-रक्षाक सप्पत खेला मात्र सँ संविधानक रक्षा नहि होइ छै। 1946 सँ ल नवम्बर, 1949 धरिक संविधान सभाक विचार विमर्शक कार्यवाही पढ़ला सँ ई बेसी स्पष्ट हैत- संविधानक अक्षरेटा नहि, ओकर भावना कैं स्वीकार करब आ तकरा सरजमीन पर उतारब ओहि सँ बेसी जरूरी छै । भारतीय संविधानक वास्तुकार बी. आर. अम्बेडकर कैं पढला-गुनला सँ ई आरो बेसी स्पष्ट हैत। आ तखने इहो साफ हैत जे जनतांत्रिक अभियान के कोना-कोना 'जनताँत्रिक उपकरण' सँ लैस 'हिटलरी गुमान' क सामना कर पड़ि रहलइए। किसान आंदोलन सत्ताक एही 'हिटलरी गुमान' क मारि खा रहलए।

नरेन्द्र मोदी- अमित शाहक राजनीति आ सत्ता शैलीक- आ किसान आंदोलन लेल सेहो- देशक पाँच विधानसभाक आसन्न चुनाव अग्निपरीक्षा साबित होअ जा रहलए। कोलकाताक राइटर्स बिल्डिंग (पश्चिम बंगाल सचिवालय) मे आसन जमाब लेल भाजपा कोनो सीमा धरि जा रहलए आ जैत। पूर्वोत्तर आ पूर्वी भारतक- बिहार कैं छोड़ि- सबसँ महत्वपूर्ण ई भूखंड भाजपा आ ओकर सहयोगी दलक सत्ता राजनीति सँ एखन धरि मुक्त अछि। साम्प्रतिक भारतक ई राजनीतिक यथार्थ मोदी-शाहक भाजपाक आँखि मे निरंतर गड़ि रहलइए- चोखेर बाली जकाँ। सौँसे देश कैं भगवा रंग मे रंगैल देखक अभिलाषाक ज्वर मे अहर्निश तपि रहलए मोदी-शाहक भाजपा। आ एहि ताप सँ पीड़ित भ देशक विभिन्न प्रांत मे कोना-कोना सत्ता हासिल क रहलए से कहबाक बेगरता नहि- कतहुँ वैध जनादेश सँ, त कतहुँ जनादेशक अपहरण क क। बिहार सहित कतोक राज्य एकर उदाहरण अछि। संसदीय कार्यवाही कैं देखियौ त ओडिशाक नवीन पटनायक राष्ट्रीय राजनीति मे व्यावहारिक रूप सँ ओकर संग छथिहे। मुदा पश्चिम बंगाल एखनो ओकर संकटक कारण बनले अछि- अभेद्य दुर्ग। आब मोदी-शाहक भाजपा एहि अभेद्य दुर्ग कैं ध्वस्त करबाक कोनोटा ब्योंत कैं बाकी नहि छोड़ चाहइए, नहि छोड़त- युद्ध आ राजनीति मे सभटा चलै छै, ताहि निति पर चलैत। केरल सेहो ओकर पहुँच सँ बाहर रहलइए, एखन रहबे करतै। तमिलनाडु मे काँग्रेस हो किंवा भाजपा दुनू द्रमुक आ अन्ना द्रमुकक कान्ह पर अछि। तइयो भाजपाक राजनीतिक औकात काँग्रेसहुँ सँ खराब छै। असम मे सत्ता मे वापसीक मादे भाजपा आश्वस्त जकाँ अछि। हाँ, पुडुचेरी मे ओकरा राज-पाट भेट जेबाक उम्मीद छै, सेहो क्षेत्रीय दलक भरोसे। मुदा प. बंगाल मे भाजपाक की हेतै से कहब कठिन। साम-दाम-दंड- विभेदक कतोक उपाय कइयो क राइटर्स बिल्डिंग धरि ओकर पहुँचब एखनो कठिने लगै छै। किसान समुदायक सड़क पर उतरलाक बाद देश मे विधानसभाक पहिल आम चुनाव भ रहल छै। ई सत्य जे किसान आंदोलन मे आक्रामकताक संग शामिल कोनो भूखंडक विधानसभाक चुनाव नहि छै, मुदा एहि चुनाव सभक परिणाम तीनू नव कृषि कानूनक मादे ओकर पक्ष- विपक्ष मे नव चर्चा त शुरु कइए देत। एहि पाँचो विधानसभाक पहिने आ आंदोलनक अभ्यंतर राजस्थान, पंजाब आ गुजरात मे पंचायत आ स्थानीय निकायक चुनाव भेलै। गुजरात किसान आंदोलन सँ दूरे रहल आ ओतहि भाजपा अपन झंडा बुलंद कएलक। ओहुना गुजरात मोदी-शाहक राजनीतिक प्रयोग-स्थली रहलए। मुदा, पंजाब मे भाजपा त मटियामेट भइए गेल, ओकर पूर्व सहयोगी शिरोमणि अकाली दल कैं सेहो अपमानजनक पराजयक सामना कर पड़लै। राजस्थान सेहो भाजपा कैं कोनो सुख नहि देलकइ। एहना मे बंगालक चुनाव परिणाम राष्ट्रीय राजनीतिक विमर्श लेल बड़ महत्वपूर्ण बनि गेलए- किसान आ आन कोनो जनतांत्रिक आंदोलन लेल सेहो आ मोदी-शाहक भाजपा लेल सेहो।

संपर्क : 94732 78686 / 82105 38044

बजट प्रावधानः ऊंटक मूंह मे जीरक फोड़न

• सी.ए. आनन्द कुमार

"विशेष परिस्थिति मे अनठेबाक प्रवृति उचित भ सकइए। परंतु सब बात के अनठओनाइ निश्चित रूप स विनाशकारी छी।"



सामान्यतः विकलांग आ कोविड-19 क झमारल भारतक अर्थव्यवस्था क लेल प्रस्तुत केन्द्रिय बजट अही अनठेबाक प्रवृतिक द्योतक अइ।

उत्तरोत्तर बढ़इत स्वास्थ्य-संकट, व्यापक बेरोजगारी, निरंतर घटइत क्रय-क्षमता, खाद्य-पदार्थक बढ़इत दाम प्रभृति क खतरा स घेराएल अर्थव्यवस्था क लेल एहि वर्षक बजट मे, पूरने बातक दोहराव, बिन जांचल-परखल आंकड़ा आ वाग्जालक मनोहर वितान टा ठाढ़ कएल गेलए!

बजट प्रावधान

		2020-21	2021-22	वृद्धि
कुल खर्च	अरब मे	34,503	34,832	(+)329
फुल आय	"	16,017	19,764	(+)3747
मौद्रिक घाटा	"	18,486	15,068	(-)3418
मौद्रिक घाटा/जी.डी.पी.	प्रतिशत	9.5	6.8	
सकल घरलू उत्पाद (जी.डी.पी.)	अरब मे	200,000	230,000	(+)30,000

बजट, 'आत्मनिर्भर भारत' के सिद्धान्त क बात करइत निम्न छः प्रभाग पर केन्द्रित अइ ;

1. स्वास्थ्य
2. संसाधन एवं मूलभूत संरचना
3. समेकित विकास एवं समुन्नति-आकांक्षा
4. न्यूनतम शासन एवं अधिकतम प्रशासन
5. अविष्कार-शोध एवं विकास, तथा
6. मानव-संसाधन के प्रोत्साहन।

1. बजट मे, कोविड-19 क टीका क लेल 350 अरब के प्रावधान छइ। अर्थात प्रति व्यक्ति 250 टाका। टीका क एक डोज के लागत छइ 750-1250 टाका। त इ बाकी 500-1000 टाका कत स आओत? व्यापक बेरोजगारी तथा देशक दूर-दराज क्षेत्र मे कोनो तरहक सार्थक स्वास्थ्य-सेवा के अभाव मे, टीकाकरण क शत-प्रतिशत लक्ष्य के केना प्राप्त कएल जेतइक? एहि प्रश्न पर बजट मौन अइ !

रेलवे क आधारभूत संरचना क निर्माण-नवीकरण क लेल 2018-2030 तक कम-स-कम 50,000 अरब के आवश्यकता मानल गेल छइक।

96% कार्यकारी अनुपात पर कार्यरत भारतीय रेल मात्र 22 अरब नफा प्रतिवर्ष कमा सकइए। बजट प्रावधान 1000 अरब छइ। अर्थात अनुमानतः 4000 अरब प्रतिवर्ष खर्च क आवश्यकता क स्थान पर रेलवे लग मात्र 1022 अरब उपलब्ध छइ। बाकी क लेल ओ की करत, ताहि लेल बजट मे कोनो योजना नइ।

आर्थिक वर्ष 2020 क अंत तक देशक सरकारी बैंक क सम्मिलित एन.पी.ए. मोटामोटी 6800 अरब छलइक। एहि बजट मे, बैंक सभक लेल वित्तिय सहयोगक प्रावधान छइ 200 अरब, अर्थात एन.पी.ए. क लगभग 3%। एकरे ने कहल जेतइ, 'ऊंटक मूंह मे जीरक फोड़न'।

आर्थिक वर्ष 2021-22, कोविड-19 क बादक पहिल वर्ष होएत। 2020-21 क तुलना मे खर्च क वृद्धि मे 1% के प्रावधान कएल गेलइए। एहि स आर्थिक घाटा 9.5% स 6.8% भ जाएत से असंभव सन बात भेल !

2. वर्ष 2020-21 क घोषणा छल जे 2022 तक, कृषि-आय के दूगुन्ना क देल जाएत। से त भेल नइ। आब, एहि बजट मे कहल गेलए जे कृषि-उत्पाद क न्यूनतम-विक्रय-मूल्य (एम.एस.पी.) लागत के डेढ़ गुणा होएत। स्पष्टतः, इ पूर्व घोषणा क विचलन छी। तइयो अही वर्षक घोषणा क हिसाब स अनुमानतः 300-400 अरब के खर्च होएत आर एकरा लेल बजट मे कोनोटा प्रावधान नइ। पुनः, लागत क आकलन लेल कोनो टा जांचल आंकड़ा क अभाव मे, लागत क गणना आ एम.एस.पी. निर्धारण मे एकरूपता बेस कठिन अइ। तइयो, जं एम.एस.पी. बढ़इए त खाद्यान्न क मूल्य मे कम-स-कम डेढ़ गुणा क वृद्धि होएत। वर्तमान परिस्थिति मे एहि मूल्य-वृद्धि क सामना केना कएल जाएत ताहि पर कोनोटा विचार नहि कएल गेलए।

'एक राष्ट्र-एक कार्ड' महत्वाकांक्षी योजना छी। एकरा लेल समेकित-जन-वितरण-प्रणाली-प्रबन्ध (आइ.एम.पी.डी.एस.) के स्थापना कएल गेलइए। इ प्रबंध 36 (राज्य एवं केन्द्र-शासित

प्रदेश) मे स मात्र 10 टा मे कार्यरत अइ। एकर गति के देखइत, एहि योजनाक कार्यान्वयन दूर के ढोल टा बूझा रहलए।

देशक अनिवार्यता छइ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा। परंतु एहि तथ्य के अनठबइत, शिक्षण-संस्थान सभक संख्या मे वृद्धिक बात कएल गेलए। अहूठाम अनेको निष्क्रिय-मृतप्राय संस्थान, सबहक सुधि लेबाक कोनोटा चर्चा पर्यंत नहि कएल गेल!

3. 'पूरान गाड़ीक कबाड़ी-करण' तथा वीमा क्षेत्र मे विदेशी-निवेश (एफ.डी.आइ.) मे वृद्धिक बात मूढ़ गणनाक ज्वलंत उदाहरण छी! पथ-परिवहन द्वारा वायु-प्रदूषण अनुमानतः 14% मात्र होइए। अर्थात पूरान गाड़ी सब के रास्ता पर स हटा देला पर 14% तक वायु-प्रदूषण कम होएब संभव होएत। औद्योगिक-प्रतिष्ठान सब, वायु-प्रदूषण मे अनुमानतः 40% के योगदान करइए जकरा साफे अनठा देल गेलए।

विनिवेशीकरण क लक्ष्य 1750 अरब निर्धारित कएल गेल जे पछिला वर्ष सब स बेसी अइ। परंतु सरकार, कोनो वर्ष मे विनिवेश्य क लक्ष्य पूरा नइ क सकलए। जं अहू वर्ष सएह भेल त आर्थिक घाटा आर बढ़त।

विदेशी निवेश (एफ.डी.आइ.) के 49% स बढ़ा क 74% करबाक लक्ष्य, 'जीवन वीमा निगम' (एल.आइ.सी.) मे विनिवेश क योजनाक अर्न्तगत कएल गेलए। कोविड-19 स उत्पन्न आर्थिक-संकट दुआरे एहि एफ.डी.आइ. क प्रभाव नगण्य होएत। एकरा संग, श्रमिक-संगठन सबहक द्वारा एहि विनिवेश आ एफ.डी.आइ. क प्रबल-विरोध होएब संभावित अइ। फलतः एहि लक्ष्यक प्राप्ति संदिग्ध अइ।



4. 'न्यूनतम शासन आ अधिकतम प्रशासन' सरकारक एकांगी सोचक अनुरूप संचालित अइ। जेना;

'लघु औद्योगिक-व्यावसायिक संस्थान' सब पर जोर देला स व्यावसायिक क्षेत्र मे प्रशासनिक-समस्या के त अवश्ये कम करत परंतु एकरा संग 'आर्थिक-अनुशासन' के क्षति पहुंचाओत आ टैक्स-चोरीक प्रवृत्ति के बढ़ाओत !

'शोध एवं विकास' (आर. एन्ड डी.) क लेल 500 अरब के प्रावधान, सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) क मात्र 0.5 प्रतिशत होइए। इहो खर्च, पांच वर्ष मे कएल जाएत। एकरा नगण्य मानल जाए त अत्युक्ति नइ होएत।

न्यायिक-व्यवस्था, तत्काल स्वीकृत क्षमता क 60% पर काज क रहलए। कोनो तरहक सुधार, एहि कार्यकारी क्षमता के बिना बढ़ओने संभव नइ होएत।

0.05 अरब तक के आय बला लघु-दातव्य-संस्थान (स्मॉल चैरिटेबल ट्रस्ट) के लेल छूट के प्रावधान, शासन त अवश्य कम करत परंतु देखल गेलए जे बिना छूट क स्थिति पर्यंत मे दू संस्थान सब टाका-हेराफेरी (मनी लाउन्ड्रिंग) मे संलिप्त रहइए !

5. अर्थ-व्यवस्था मे अनुमानतः 7.7% के संकुचन भेलए। परंतु बजट, 11% के वृद्धि के कल्पना क रहलए। अर्थात् कुल 18.7 के सकल बढ़ोत्तरी! जखन कि पछिला 75 वर्षक सामान्य वा उन्नतशील अवस्था पर्यंत मे 18% के वृद्धि नइ भ सकलए। तखन वर्तमान संकटग्रस्त अवस्था मे इ लक्ष्य केना पूरा भ सकत?

6. आय-कर मे कोनो वृद्धि नइ कएल गेल। ओकरो सब पर नइ, जे एहि कोविड-19 काल मे आशातीत आय वृद्धि दर्ज केलकए, जेना कि दबाइ कंपनी सब आ एफ.एम.सी.जी. कम्पनी सब। कर लगाओल गेलए 250,000 स अधिक भविष्य-निधि क व्याज पर। इ अत्यंत अदूरदर्शी प्रावधान छी। किएक त 15000 स अधिक भविष्य-निधि अंशदान स्वैच्छिक छइ तथा कंपनी सबहक मानव-संसाधन प्रभाग (एच.आर.) आराम स वेतन-संरचना मे आवश्यक परिवर्तन क क कर-मुक्तिक उपाय ताइक लेत। संगहि, वर्तमान परिस्थिति मे वेतन-वृद्धि क कल्पना असंभाव्य अइ।

किछु आर घोषणा, जेना

(1) 75 वर्ष स अधिक आयुक नागरिक के इनकम-टैक्स-रिटर्न भरबा स मुक्ति

(2) डिजिटल-पटल स लेन-देन केनिहार संस्थान सब के टैक्स-ऑडिट-स मुक्ति आ

(3) नव गृह-ऋण पर अतिरिक्त कर मे छूट, बस कहक लेल छूट अइ। अर्थ-व्यवस्था पर एकर कोनोटा प्रभाव नइ पड़तइ !

निष्कर्षतः केन्द्र सरकार, अर्थ-व्यवस्था के पूनर्जीवन प्रदान करबाक कोनोटा प्रयास नइ क रहलए।

संपर्क : kkumaranandjha@rediffmail.com

सुभद्रा इज माय हिरोइन

• *कमलानंद झा*

गौरीनाथक उपन्यास दागमे 'माधुरी' नैष्ठिक ब्राह्मण डाक बाबूक बेटी अछि। दूर-दूर तक प्रतिष्ठित आ कलामी पंडितजीक बेटी सुभद्रा जखन एकटा दलित लड़का संग भागि गेल, त गाममे घमासान मचि गेल। सुभद्रा आ नारायण दूनू अत्यंत मेधावी विद्यार्थी छल। स्वतंत्र चित्त मनुक्ख भ जीबाक आ किछु सार्थक करबाक आकांक्षासँ दूनू ई 'भीषण' डेग बढौने छल। एक दिन माधुरी स्कूलसँ आबि सुभद्रा इज माई हिरोइन कहैत नाच लागल छल। ओकर माय तमसा क' चुल्हिमे लागल चेरा फेंकने रहै। ओकर मुँह झरकि गेल छलै। दाग त समयक संग मेटा गेलै, मुदा एहि बातक दाग दूर- दूर तक पसरि गेलै आ ओकर बियाह पर ग्रहण लागि गेलै।

मैथिली उपन्यास बहुत दिन धरि बियाह-दान आ ओकर विभिन्न समस्या सभ पर विचार करैत रहल। मुदा मैथिली उपन्यासक लगभग सै वर्षक बाद मैथिल अंतरजातीय विवाहक (घर-परिवारक मर्जीक विरुद्ध) सपना, संघर्ष आ विडम्बना पर गरिमायुक्त उपन्यास लिख़बाक श्रेय गौरीनाथ के जाइ छनि।

सुभद्राक घटना वर्ण व्यवस्थाक भीषण त्रासदी दिस संकेत करैत अछि। वर्ण व्यवस्थाक विसंगति पर विचार कयनिहार विद्वान लोकनिक मानब छनि जे परस्पर बेटी-रोटीक संबंध वर्ण व्यवस्थाक बंधनकेँ ढील क सकैत अछि। जाहि समाजमे वर्ण व्यवस्थाक जकड़न जतेक मजबूत रहत, ओ समग्र समाज ओतबे पिछड़ल आ विकाससँ दूर रहत। जँ कोनो दू वर्णक लड़का-लड़की परस्पर विवाह करैत अछि त ई सामाजिक परिवर्तन आ विकासक दिस बढायल डेग मानल जायत। सचेत मैथिल लड़की माधुरीक लेल 'सुभद्रा इज माय हिरोइन' एहि पृष्ठभूमिमे छलैक। मुदा ओकरा एहि लेल भारी दाम चुकबय पड़लै।

उपन्यासक केन्द्रमे अछि एकटा पंडित गाम। ओहि गाममे छथि एकटा ख्यातनामा पंडीजी माने इतिहास पुरुष पंडित भवनाथ मिश्र। हिनक प्रताप गामे नहि बीस-पच्चीस गाममे पसरल अछि। पूरा परोपट्टा हिनकासँ डेराइत छल, कहि सकै छी जे धाख मानैत छल, आदर करैत छल। एहि प्रतापी पंडितजीक सुलक्षणी सुपुत्री सुभद्रा हठात एकटा दलित 'छौड़ा' नारायण संग भागि जाइत अछि।

नारायण संग सुभद्राक भागि गेलाक बाद पंडितजीक दुर्बाशायी क्रोध, सामाजिक लांछना जनित अपराध-बोध, महात्म्य टूटि जयबाक असह्य पीड़ाक शाब्दिक रूपांतरण उपन्यासक वैशिष्ट्य अछि। पंडितजी जेना-तेना अपन भीतर हिम्मतक संचार करैत छथि आ निर्णय करैत छथि जे ओ सभसँ पहिने एक महान कुलवंशक ब्राह्मण आ पंडित छथि, एकटा छिनारि उढ़री छौड़ीक बाप मात्र नहि। जँ ठानि ली त प्रलय मचि जायत। करबाक एतबे जे सम्पूर्ण ब्राह्मण समाजकेँ ललकारबाक अछि।

सम्पूर्ण 'चमर' टोलीकेँ 'भकसी झोंकबाक' लेल ओ गामक कलामी चतुर षड्यंत्रकारी प्रोफेसर साहेब आ मुखियाजीक शरणागत होइत छथि। भकसी झोंकबाक प्रलयंकारी तैयारीक लोमहर्षक वर्णन उपन्यासकार कयलनि अछि। एहि तैयारीमे विधायकजीसँ ल क थाना धरि कोना मैनेज कयल जाइत अछि तकर विश्वसनीय वर्णन उपन्यासमे भेल अछि।

पंडीजीकेँ बड़ मनोरथ रहनि एकटा बेटीक लेल। दू टा बेटा त छलन्हिहें। पंडिताइनकेँ जहन तेसर बेर कल्याणक योग्यता भेलनि त कन्यादानक पुण्य प्राप्ति हेतु मनेमन कालीमायसँ कामना कयने रहथि जे बेटिए होनि। सुभद्रा जेहने देख मे सुन्नरि, तेहने मधुर बोल। छेटगर होइत देरी पंडीजीक सभ जिम्मेदारी अपना उपर ल लेने छलि। पढ़ मे तेहने तेजगर। कहियो दोसर स्थान पर नहि आयल। साहित्य प्रेमी कामतजी सुभद्राकेँ पढ़बैत छलाह। सुभद्राक साहित्य रूचि देखि ओकरा साहित्य आ वैचारिक पोथी सेहो पढ़बाक हेतु दैत छलाह। प्रोमचंद स ल क भगत सिंह आ सीमेन द बउआरक द सेकेण्ड सेक्स क हिन्दी अनुवाद सुभद्रा पढ़ि गेल। किछु दिन नारायण राम सेहो सुभद्राकेँ पढौने छल। ओ दू साल सीनियर छल सुभद्रासँ आ सभ दिन फर्स्ट अबैत छल। एही दूनूक सामीप्यक कारणे घटलै एहन 'दुर्भाग्यपूर्ण' घटना।

गाम छोड़बासँ पहिने नारायण सुभद्राकेँ बुझयबाक बहुत प्रयास कयने रहै। ओ कहने रहै जे गाममे तूफ़ान मचि जायत। सुभद्रो स्पष्ट कहने रहै जे जँ डर होइ छोउ त ई प्लानिंग छोड़ि दही, कारण बज्र खासतौ तोरे परिवार आ टोल पर। दूनूकेँ एक दोसराक चिंता रहैक। सुभद्राक दृष्टि साफ़ रहैक- 'गाममे रहि जाहि जीवनक कल्पना कयने छल से संभव नहि छलैक। हमर निर्णय अकारण नईं एए। हम बुझै छी जे हमर बाबू कुल-खानदान देखि कोनो धनिक पांजिवाला घरक शो-पीस बना देताह। मुदा हम अपन इच्छासँ सुख-दुःख भोग बला मनुक्ख बन चाहैत छी। अपना बारेमे अपने निर्णय ल सकयवाली... हमरा नईं कोनो जातिक श्रेष्ठता चाही, नईं कोनो जातिक नीचता, हम मात्र मनुक्ख भ, अजाति भ, अपना बल पर किछुओ कर चाहै छी। एहि आकांक्षा संग सुभद्रा नारायण संग भागि जाइत अछि। दिल्लीमे

आगूक पढ़ाई करैत अछि, पत्रकारिताक कोर्स करैत अछि आ अपना बले नीक पत्रकार बनैत अछि। हिन्दीक प्रसिद्ध कवि आलोक धन्वाक कविता 'भागी हुई लडकियाँ', सुभद्राक मनोवेगकेँ बहुत नीक जकाँ अभिव्यक्त करैत अछि-

महज जन्म देना ही स्त्री होना नहीं है
तुम्हारे उस टैंक जैसे बंद और मजबूत
घर से बाहर
लड़कियाँ काफी बदल चुकी हैं
मैं तुम्हें यह इजाजत नहीं दूंगा
तुम उसकी संभावना की भी तस्करी करो
वह कहीं भी हो सकती है
गिर सकती है
बिखर सकती है
लेकिन वह खुद शामिल होगी सब में
गलतियाँ भी खुद ही करेगी
सब कुछ देखेगी शुरू से अंत तक
अपना अंत भी देखती हुई जाएगी
किसी दूसरे की मृत्यु नहीं मरेगी।

दलित वास्तविकताक उद्घाटन 'दाग' उपन्यासकेँ गंभीर दलित उपन्यास बनबैत अछि। घर, परिवारक रहन-सहन, खान-पान, ओढन-पहिरन तथा आर्थिक स्थिति आदिक अत्यंत सजीव चित्रण उपन्यासकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि। नारायण रामक परिवारक एकटा काज मुइल गायक खाल हटेबाक सेहो रहैछ। ई अत्यंत दुसाध्य कार्य होइत अछि। सवर्ण समाजक लेल एकर वर्णनो असह्य। कल्पना कयल जा सकैत अछि जे एतेक घृणास्पद काज ओहि समाजकेँ कर पड़ैत छैक। नहि करौ त सवर्ण समाजकेँ मुइल गाय, बड़द, महींस आदि पशु आदि काल भ जायत। एतेक पैघ काज ओ करैत अछि, मुदा एहि लेल ओकरा सम्मान देबाक बात त फराक, समय-समय पर गारि-मारि खाय पड़ै छै। उपन्यासमे प्रसंग आयल अछि जे एक बेर नारायण रामक बापकेँ आबयमे किछु देरी भ गेलै त मुइल गायक मालिक ओकरा खूब गरिएलक। उपन्यासमे गाय खलबाक विस्तृत चित्रण भेल अछि। मैथिली उपन्यासक लेल ई सर्वथा नव बात अछि। बिना ओहि काज के बुझने ओ कार्य करैबलाक महत्व प्रतिपादित नहि भ सकैत अछि। कहबाक आवश्यकता नहि जे जूता सभक लेल कतेक जरूरी? तही जूताक लेल जे चमड़ा निकालल जाइत अछि ओ काज एतेक अपमानजनक कोना भ सकैछ। रस्तामे चलैत जखन जूता टूटि जाइत अछि त हम सब कतेक बेगरतासँ जूता बनबयबलाकेँ तकैत छी। जूता बनबा क अपन इज्जत बचबैत छी। कहबाक आशय ई जे इज्जत बचबयबलाक इज्जत कियक नहि।

चरित्र उपन्यासक कलेवरकेँ सुनिश्चित आधार प्रदान करैत अछि। चारित्रिक गढ़न उपन्यासक पठनीयताकेँ बनाक रखैत अछि। कोनो रचनाक चारित्रिक विशेषता ई होइछ जे छोटसँ छोट चरित्रक अपन निजी विशेषता होयबाक चाही। भले ओ कनिए काल लेल कथामे प्रवेश कएने हो, पाठकक मनोदशा पर अपन प्रभाव जरूर छोडैक। दागमे बहुत रास छोट-छोट चरित्र अछि, जेना नारायण रामक कक्का, माय, बाप, युवा मोर्चाक धनेसर, माधुरी आ सुभद्राक बेटा। सभटा चरित्र, पाठक उपन्यास पढ़लाक बाद मोन राखत। ई चरित्र सभ बिजलीक चमक जकाँ कथामे अबैत अछि आ अपन इजोत छोड़ि चल जाइत अछि। छोट-छोट चरित्रसँ उपन्यासमे विविध रंग, विविध मूड आ विविध परिवेशक रचना होइत अछि। गौरीनाथ एहि तरहक चरित्र सृजनक कुशलतासँ दागकेँ महत्वपूर्ण उपन्यास बनबैत छथि।

पंडितजी आ फ्रोफेसर साहेब दाग उपन्यासक प्रमुख चरित्र छथि। एहि दूनूक चरित्र निर्माणमे उपन्यासकारक सृजनशीलता देखैत बनैत अछि। पंडितजीकेँ जतय अपन कुलशील आ पांडित्यक अभिमान छनि, ओतहि प्रफेसर साहेबकेँ अपन बुद्धिचातुर्य आ षडयंत्री होयबाक गुरूर। पंडितजी ब्राह्मणवादक घोर समर्थक छथि, मुदा छथि सहज आ सरल। हुनक चरित्रमे ब्राह्मणवादक पोषण अर्जित नहि, प्रदत्त अछि। एहिसँ बाहर ओ सोचियो नहि सकैत छलाह। पंडितजी बहुत गंभीरतासँ सोचैत छथि जे जँ ई परम्परा टूटि जायत त मानवता समाप्त भ जायत। पंडितजी मनवताक रक्षा हेतु कुलशील आ पारम्परिक मर्यादाक रक्षा चाहैत छथि। प्रोफेसर साहेब सभटा बुझैत छथि, ओ कुटिल छथि। ब्राह्मणवाद आ हिन्दूक राजनीतिक उपयोग आ अपन षडयंत्रक व्यापारसँ धन जोड़ चाहैत छथि। पंडीजीक बहुत रास जमीन एहि 'सुभद्रा-गमन' प्रकरणमे ओ पंडीजीसँ लिखा लेलनि। उपन्यासमे एहि दूनूक चरित्र-सृजनमे, एहि अंतरकेँ खूब नीक जकाँ स्थापित कएल गेल अछि।

पंडितजीक चारित्रिक निर्मितिमे जे विकास क्रम गौरीनाथ देखौलनि अछि, ओ कलात्मके नहि मार्मिको अछि। सुभद्राकेँ भगलाक बाद पंडीजीक परशुरामी क्रोध धीरे-धीरे आत्मदया आ आत्म-करुणामे परिवर्तित होमय लगैत अछि। दस वर्षक बादो ओ सुभद्राकेँ अपराधी बुझैत छथि। ओकर मुँह देखा जयबाक भयसँ भयभीत छथि, मुदा क्रोध कतहु विलुप्त भ गेल छनि। ओ क्रोध आत्म-पीड़ामे व्यक्त होइत अछि। ओहि दिन जहिया सुभद्राक गाम अयबाक संभावना छलैक, ओ अपनाकेँ एकटा अंधकूपमे (बंद घर) बंद क लैत छथि। पंडितजीक द्वंद्व, तनाव आ रस्साकशीकेँ उपन्याकार विलक्षण कल्पनाशीलता संग उद्घाटित कयलनि अछि।

नारायण राम उपन्यासक कथा नायक अछि आ सुभद्रा नायिका। एहि दूनूक चरित्रक माध्यमसँ उपन्यासक काया ठाढ़ होइत अछि। सुभद्रा परिवर्तनकामी स्त्री अछि आ अपना मोनसँ जीबक आकांक्षी। संघर्षक अकूत क्षमता सुभद्राक चरित्रमे छैक। स्त्री लेल कोनो तरहक सामाजिक परिवर्तनक रास्ता अपमान आ लांक्षनासँ होइत जाइत छैक। पहिल स्त्री जे सती होयबासँ मना कयने होयत ओकरा बहुत लांछना सह पड़ल हेतैक। जे पहिल स्त्री

विधवा विवाह केने हैत ओकरा कोन तरहक अपमान सह परल हेतैक तकर अनुमान लगाओल जा सकैछ। सुभद्रा अही श्रृंखलाक एकटा मजबूत आ चैतन्य स्त्री अछि। एक दिन एहन आओत जे इहो परिवर्तन सहज आ आम भ जाएत। सुभद्रा मात्र अपन जीवनक मुक्ति हेतु ई काज नइं कयलक अछि, ओ सम्पूर्ण मिथिला आ कि सौंसे देशक स्त्रीक मुक्तिक कामना करैत अछि। एहि लेल ककरो ने ककरो आगू बढ़ि डेग उठाबए पड़तैक।

दाग उपन्यास मैथिली उपन्यासक संरचनामे सार्थक आ सर्जनात्मक हस्तक्षेप करैत अछि। एहि उपन्यासक शिल्पगत वैशिष्ट्य ई जे मात्र पाँच दिनक घटनाकेँ महाकाव्यात्मक गरिमासँ युक्त करैत अछि। उपन्यासक कथा आश्विन नवरात्रक पंचमी तिथिसँ आरंभ होइत अछि आ विजयादसमीक रात्रिमे खतम भ जाइत अछि। मात्र डेढ़ सौ पृष्ठक पाँच दिनक घटनाक उपन्यास पढ़लाक बाद पाठककेँ मैथिल समाजक भिन्न-भिन्न आ नब-नब परिघटनाक व्यापक सरोकारसँ साक्षात्कार होइत छैक, जे महाकाव्यात्मके उपन्यासमे संभव होइछ। पाँच दिनक घटनाकेँ स्मृति आ फ्लेश बैक शैलीक उपयोगसँ उपन्यासकेँ व्यापक परिप्रेक्ष्य देल गेल अछि। उपन्यासमे फ्लैश बैकक सामान्य उपयोग नहि भेल अछि। वस्तुतः उपन्यास स्मृति कोलाज अछि। कोनो एक पात्रक स्मृति नहि। अलग-अलग पात्रक स्मृतिसँ उपन्यासक स्थापत्य तैयार कयल गेल अछि। उपन्यासक महीन बुनावट कथाक एकरसताकेँ भंग करैत अछि। घटनाक क्रमिक विकास नहि राखल अछि। पहिलुक घटना बादमे, बादक घटना मध्यमे, मध्यक घटना आरंभमे। एहि तरहें घटनाकेँ 'जिकजैक' शैलीमे राखल गेल अछि, मुदा पाठककेँ कतहु कथा पढ़बामे कठिनाई नहि होइत छनि।

सम्पर्क : 86305 63805

पांचों पीर

• प्रदीप कांत चौधरी *(समाजशास्त्री)*

सूफी एवं भक्ति संप्रदाय के प्रस्फुटन स अनेकों संत आ पीर उत्पन्न भेलाह। भारतीय मध्ययुग मे हिंदू समाजक परिधि पर रहय वला अछूत जाति सबके चारू तरफ स अवहेलने भेटैत छलन्हि। अहि परिवेश मे फकीर आ डफाली के रूप मे एक टा एहन समुदायक उदय भेल जे अछूत सबहक धार्मिक अनुष्ठानक अंग बनि गेलाह आर हुनकर सबहक पारंपरिक पूजा पद्धतिक भीतर इस्लामक पीर आ वली के स्थापित करय के प्रयास भेल। पंचपीरिया संप्रदायक उद्भव प्रायः अहि तरहक परिघटनाक परिणाम अछि। दलित एवं पछुआएल समुदायक कतेको लोक अपना के आइयो पंचपीरिया कहैत छथि। यद्यपि अधिकतर व्यक्ति पांच पीरक नाम बतयबा मे असमर्थ रहैत छथि। मुदा एहि सामाजिक तबका मे पंचपीरिया बहुत सशक्त संप्रदाय अछि। चूंकि पीर बाबा मुसलमान छथि ताहि लेल पंचपीरिया परिवार मे सुग्गरक बलि रोकि देल गेलैक। भ सकैत अछि फकीर सभक एक टा उद्देश्य इहो रहल होनि। मुदा एतेक उदारता स दोसर धर्मक संपूर्ण तत्व के स्वीकार करैत ओकरा भीतर अपन जगह बनाब के विधि, सामाजिक अध्ययन लेल अद्भुत विषय अछि।

बिहार एवं उत्तर प्रदेशक बहुत पैघ हिस्सा मे पसरल पंचपीरिया संप्रदायक जड़ि प्रायः एक हज़ार वर्ष पुरान रहल अछि। एहि संदर्भ मे विलियम क्रूक के अवलोकन ऐतिहासिक रूप स एहि संप्रदायक पहचान स्थापित करबा मे सहायक भ सकैत अछि। क्रूक के अनुसार पंचपीरक सबसं विख्यात पीर इस्लामक संस्थापक पैगंबर मोहम्मद, अली, फातिमा आर हुनकर पुत्र हसन आ हुसैन छलाह। मुदा पंचपीरिया मे शामिल पीर लोकनिक कतेको अलग-अलग नामावली भेटैत छैक । असगरे बनारसक इलाका मे पांच तरहक नामावली भेटैत छैक। मुदा ओहि मे सब स प्रचलित नामावली **गाज़ी मियां, अमीना सती, सुथल, अजब सालार, पलिहार** क छैक। बिहार मे प्रचलित नामावली मे **गाज़ी मियां, हठीला, परिहार, सहजमाई** आर **अजब सालार** छैक। संपूर्ण पूर्वी भारत मे एहि संप्रदायक पुजैगरी डफाली समुदायक फकीर होइत छथि जे गाज़ी मियांक गाथा गबैत आर डफली बजबैत घुमैत रहैत छथि। पासी आर चमार समुदायक लोक अपन घरक आंगन मे लकड़ी के पांच टा खुट्टी ठोइक क ओकर पूजा करैत छथि। ई पूरा संप्रदाय गाज़ी मियांक उपासना पर केंद्रित अछि। हुनकर असली नाम सैय्यद सालार मसूद छलन्हि आ ओ गजनीक सुल्तान, महमूदक भातीज छलाह। हुनकर जन्म प्रायः 1015 ई. मे भेल छलन्हि। ओ अवध पर होमय बला पहिल आक्रमणक सेनापति छ्लाह आ अनुमानतः बहराइच लग 1034 ई. मे कोनो युद्ध मे मृत्यु के प्राप्त भेला। हिनकर मजार बहराइचक एक टा सूर्य मंदिर के भीतर छन्हि, जेकरा कारण ओ मुस्लिम के अतिरिक्त हिंदू समुदाय मे सेहो लोकप्रिय भ गेला। (विलियम क्रूक, पृ. 129-131)

मीरा साहब

अहि प्रकार कतेको दलित एवं पिछड़ा जाति मे मीरा साहब के पूजा देल जाइत छन्हि।मीरा साहबक विषय मे कहल जाइत छन्हि जे बहुत पईघ ओझा-गुनी छलाह जे **ज़ैन खान** नामक एक टा जिन्न के अपना वश मे केने छलाह। ओना त मीरा साहब के अजमेर मे दफन कैल गेल रहैन लेकिन हुनकर एक टा दरगाह मुरादाबाद के नजदीक अमरोहा मे आ एक टा बूंदी मे सेहो स्थित छन्हि। करनाल के इलाका मे प्रचलित खिस्सा मे हुनका बगदादक वली कहल जाइत छन्हि। ओ थरवा के राजा के विरूद्ध एक टा युद्ध मे सैय्यद सेना के नेतृत्व करैत छलाह आ ओहि लड़ाई मे तोपक गोला लागय के कारण हुनकर माथ धड़ स अलग भ गेलैन। ओहि जगह पर अखनों खंडहरक अवशेष बचल छहि जे ई खिस्सा के किछु प्रामाणिकता दैत अछि। आइयो अपन भागिन **सैय्यद कबीर** संग हुनका पूजा देल जाइत छन्हि। (विलियम क्रूक, पृ. 160)

मोहम्मद बाबा

फील्डवर्क के क्रम मे हम सीवान शहरक सीमान पर स्थित बभनौली गाम मे पहुंचलहुं। ओहि गामक एक टा ब्राह्मण परिवार मे हमरा कुलदेवता **मोहम्मद बाबा** भेटलाह। हमर आश्चर्यक सीमा नहि रहल। घर के बुजुर्ग महिला स पुछला पर ज्ञात भेल जे अहि परिवार मे कोनो पुरखा के ओत के कोतवाल पकड़ि कय जहल द देलकनि। लाख मिन्नत मनुहारक बादो हुनका रिहाई नहि भ रहल रहैन। एक दिन एक टा फकीर हुनकर गाम मे आयल आ विधवा माय के उदास देखि क कारण पुछलकनि। पूरा बात जानि क फकीर कहलकनि जे यदि अहां मोहम्मद बाबा के पूजा दी त अहांक पुत्र वापस आइब जेता। ब्राह्मणी कहलखिन जे यदि हमर पुत्र आइब जेता त हम जरूर पूजा देब मुदा पहिने नहि देब। किछु सप्ताह मे हुनकर पुत्र रिहा भ क आइब गेलाह। हुनकर परिवार अखनो मुहम्मद बाबा के कुलदेवता के रूप मे पूजा करैत छन्हि। फकीरक सुझायल विधि स अढ़ाई-अढ़ाई किलो चाउर, दालि, पूरी, तरकारी, खीर तैयार क माघ मासक शुक्ल पक्ष मे कोनो बुध दिन चढ़ायल जाइत छन्हि। इ कोन प्रकारक इस्लाम भेल ओहि फकीर के? नाम मोहम्मद बाबाक अतिरिक्त सब किछु कुलदेवता वाला अनुष्ठान। दरभंगा स्थित हमर एक टा कायस्थ मित्र कहलैन जे हुनकर पूर्वज कोनो समय मे इलाहाबाद स आएल छलाह । परिवार मे कोनो संतान नहि बचइत छलन्हि। एक टा

फकीरक आशीर्वाद स संतान जीब गेलैन। ओकरा बाद स हुनकर परिवार मे पीर बाबा के कुलदेवता मानल जाइत छन्हि आ फकीर आइब कय आंगन मे मुर्गा के बलि दैत छन्हि।

जिन बाबा / मलंग बाबा

पश्चिमी बिहार मे जिन बाबा आ मलंग बाबा के संप्रदाय बहुत प्रचलित आ लोकप्रिय अछि। अनुमानतः जेना नाथ संप्रदाय के जोगी सब बिहार के कतेको गाम मे रहैत छलाह ओहिना गाम के सीमान पर मुस्लिम फकीर आ पीर सब सेहो छलाह, जिनका लग हिंदू आ मुसलमान सब तरह के लोक अपन कष्ट स मुक्ति पाबय लेल गोहारि लगबैत छलाह। प्रायः हिनके संप्रदाय जिन बाबा आ मलंग बाबा के रूप मे प्रचलित भेल। हिनकर सबहक मजार पर खीर, लंगोटा, खरांऊ आ विशेष रूप स गांजा चढ़ाओल जाइत छन्हि। गोपालगंज के हथुआ प्रखण्ड के बड़कागांव मे जिन बाबाक लोकप्रिय थान छन्हि। अहि प्रकार पश्चिम चंपारण के रामनगर मे मुजरा गांव मे मलंग बाबाक थान देखल जा सकैत अछि। बरक गाछक तर बनल जिन बाबाक थान बरहम बाबाक थान स प्रयाप्त समानता रखैत अछि। मलंग बाबा के स्थान मे सांकेतिक मजार रहैत छन्हि जाही पर लोक चादर चढ़बैत अछि। आब आगू चाहे जे किछु होइ मुदा इतिहास मे इ बात दर्ज रहत जे हिंदू धर्म के परिधि पर करोड़ों एहन लोक छलाह जिनकर आराध्यदेव पीर बाबा छलखिन आ फकीर एवं डफाली हुनकर पुजेगरी छलाह।

सम्पर्क : 98184 46601

स्त्री-अभिव्यक्तिक स्वर छै डहकन

• विभा रानी

डूबि जो रे सैयां, धंसि जो रे सइयाँ
सौतिनिया ल आनल, अभागल हमर सइयाँ..

विवाह-दान,काज- परोजन आदि में गाएल जाएबला गीत सभ मुख्य रूप स स्त्रिगणे द्वारा गाओल जाइत छै।

स स्त्रिगणक दुनिया चाहे कतबो व्यस्त किंवा अस्त-व्यस्त कियैक नहि हुअए, गीत सदिखन हुनका आओरक कंठ मे बसले रहैत छै,बल्कि बुझू जे काजक बोझ आ दुख के कम करबा लेल ओ सभ गीतक आश्रय लइत छथि। स्त्रिगणक मुंह में सेहो प्रकृति एक्के सनक जीह देने छै। मुदा, जेना-जेना समाज तथाकथित रूप से प्रगतिशील होइत गेलै, ओकरा अभिव्यक्तिक अधिकार स बेदखल करैत गेलै। स्त्री छवि के रूप में समाज, सीता के निर्मित क देलकै। ओ ई देखब बिसरि गेलै जे शस्त्र- शास्त्र आ नीति- ज्ञान के संग-संग सीता, गृह कार्य सेहो सीखने हेतीह आ संगहि गीत-नाद, नृत्य आदिक औपचारिक- अनौपचारिक शिक्षा सेहो नेने हेतीह। परंतु हमर समाज सीताक एहि व्यावहारिक, अकादमिक, सांस्कृतिक ज्ञान आ ओकर मनोविज्ञानक विश्लेषण पर चुप छै। ओ सभ सीताक मौन भाव पर बलिहारी छै आ सीताक मौन पर पूर्णतः सहमतपूर्ण तरीका स मौन छै-

किए बाबा धिया के बोली लेल छीनल
किए बाबा भेजल बिदेस
अंचरो न छूअल, काजरो न सूखल,
एते किए देलहुं मोन के ठेस..

एहेन स्थिति मे स्त्रिगण लेल मात्र एक्कहि टा रास्ता बचि जाई छै आ ऊ रास्ता छै- गीतक रस्ता। कनेक सोचू, जाहि स्त्री लेल ढेर रास पाबंदी रहल हुअए, जकरा खुलि के कहियो अपन अंगना कि अपन कोठरी में दू टा गप्प करबाक आज्ञा नहि हुअए, ओकर कोठरी, जकर खिड़की अत्यंत छोट और रोशनदानक ऊंचाई पर होइत हुअए, जत बारह बजे दिनो मे अधरतियाक अन्हार पसरल रहैत हुअए, जाहि कोठरी में पैसला पर दू मिनट अहाँ के अपन आंखि के स्थिर कर पड़य, जाहि से अहाँ ओहि कोठरी के देखि सकी। एना मे स्त्रिगण अपन मोनक अभिव्यक्ति कोना करथु? तहन अपन अभिव्यक्ति लेल पारंपरिक और संस्कार गीत चुनैत छथि। अही संस्कार में हुनक अभिव्यक्तिक संसार छै, अभिव्यक्ति क संस्कार गीत छै आ जिनगीक संस्कार छै।

हमर जनतबे, स्त्रिगण जल छथि। जल के अहाँ छानन-बन्हन मे नहि राखि सकै छी। एम्हर स बान्हब, ओम्हर स रस्ता निकालि लै छै जल। तहिना स्त्रिगण सेहो अपना के अपने जल जकां भिन्न-भिन्न रस्ता आ मार्ग पर ल जाइत छथि आ अपन अभिव्यक्तिक विभिन्न माध्यम के बाहर निकालि के ओकरा सभक संगे अपना के एकाकार क लैत छथि। अही स, बियाह-दान, छठिहार कि मुंडन जहन ओ सभ गबैत छथि त स्पष्ट छै जे ओ ककरो खराब नहि लागै छै, अपितु हुनका सभ के प्रशंसे भेटै छै।

त जहन स्त्रिगण देखलन्हि जे अपना के बाहर निकाल लेल इएह एक गोट मार्ग अछि त ओ सभ एकरे अपन मंच बनौलन्हि आ एकरे अपन अभिव्यक्तिक रास्ता। प्रत्येक शुभ अवसर पर ओहि अवसर विशेषक गीत गेनाई आ सभ अवसर पर सुमरनी जकां डहकन के जोड़ि देनाई, जाहि से नेहक चिकनाई बनल रहय।

स्त्री अभिव्यक्तिक ई डहकन कएक स्तर पर छै- एक,बियाह-दान के समय वर पक्ष लेल, दोसर, बियाह-दान के समय घर में एकत्र भेल अन्य नोतदार सभ लेल, तेसर,समाजक प्रत्येक वर्ग आ समुदाय लेल आ चारिम,अपन पति लेल। समाजक एकीकरणक ई स्वरूप हमर 'वसुधैव कुटुंबकम'क स्वरूप अछि, जे जाति, धर्म, ऊंच-नीच, अमीर गरीब, छुआछूत आदि से फराक एक गोट सार्वकालिक मानव स्वरूप प्रस्तुत करै छै।

घरक चौहद्दी मे चकरघिन्नी नचैत स्त्रिगण कोना के अपन व्यस्तताक हर पल के आनंद के स्त्रोत में बदलि दैत छथि, जहन कि हुनक व्यस्तता में पीड़ा सेहो छै, दासता सेहो आ बंधन सेहो। यदि ओ अपना के गीतक माध्यमे अभिव्यक्त नहि करौथु त सरिपहुं हुनक शरीर में सांस सेहो चलय से मना क देत।
विवाह में स्त्रिगण समधि, भैंसुर आ बरियातिक संगे-संगे वर पक्षक अनेक संबंधीगण, जेना मामा, फूफा, चाचा, नाना, दादा आदि-आदि-हिनका सभ लेल डहकन गबईत छथि-

आजू सुभ दिन मंगल गाबहु
हरी के लागल जेवनारी जी
जे नहि खायत पूरी मिठाई
ढेका अपन संभारथु जी।...

अहि ठाँ मात्र स्त्रीगण छथि- उम्र आ वर्ग स अलग। हम अपने जहन डहकन गाबय लेल भरि टोला जाय छलहुं त'बिनु कोनो संकोचे सभ वरिष्ठ जन लेल गबै छलहुं। बाद में हुनके सभक पएर छुबि के आशीष सेहो लैत छलहुं। अहि ठाँ नाटक जकां उद्देश्य छै- परफॉर्मेंस।
दुआरि पर बारियाति सभक एलाक संगहि शुरु भ जाइत छलै डहकन, जे मरजादी भोजन धरि चलै छलै। कन्यादान में डहकन गबैत स्त्रीगण भैंसुर के गारि पढ़ई छथिन्ह-

साड़ी देलियई चढ़ावे लागी,
पेन्ह लेलकै भैंसुरा,
अरे छम छम नाचे भैंसुरा,
अरे नटुआ मिललइ भैंसुरा,
अरे हिजड़ा मिललइ भैंसुरा,
श्याम सलोनी गौरा के छछूंदर मिललइ भैंसुरा।

स्त्री अभिव्यक्तिक ई एक गोट पक्ष भेल। दोसर पक्ष में अपना घर पर विभिन्न आयोजन पर एकत्र भेल गोइंति सभ छथि- ननदि, ननदोसि, देवर,भौजाई,बहनोई आदि। हिनको आओर लेल डहकन। एतय धरि जे सारि आ सरहोजि लेल सेहो स्त्रीगण सभ गबै छथि- पुरुषक ब्याज स। सासु आ ननदि अपन पारंपरिक रूप में बहु लेल प्रताड़नाक केंद्र बिन्दु रहल छथि। तैं हिनका प्रति अपन मोनक सभटा अरमान निकाल लेल स्त्रिगण नाना तरीका स गीत गाबि के हुनका आओर के खिझाबैत छथि-

सासु के भेलै बेटी, ननद के भेलै बेटा
हमरा त भेलै बनरबा रे, जिया जर गेल हमर
मर गेलै बेटी मर गेलै बेटा,
जुग जुग जिए बनरबा रे, जिया जुड़ गेल हमर

तेसर पक्ष में विवाह मे प्रत्येक वर्ग आ समुदायक सहयोग रहै छै- भांति-भांतिक नवाचार आ रस्म सहित। कुम्हार ओहि ठाँ स माटिक बर्तन, धोबिन के अँचरा आ ओकर लट से चुबईत जल! मान्यता छै जे ओकर अँचरा आ ओकर लट से चुबईत जलक धार भावी दुल्हन क सुख- सौभाग्य के बढ़बै छै। बांसक सूप, दौरा, डाला आदि ल क आबयवाला समुदाय! हिनका सभक सहयोगक बिन विवाह संपन्न नहि भ सकै छै। आखिर माटिक दीप, घैल,पौती सभ के आनि क देतै? नाना रंग स बनल तोता, मैना, चिड़ई, गाछ, सुरूज़, चंद्रमा,धान आदि अंकित पौती- डाला सभ कोना भेंटतै, जौं हिनक सभक सहयोग नहि रहल त। त जहन स्त्रीगण बिध कर लेल हुनका ओहि ठाँ जाइत छथि त देनदार पक्ष अपना दिसि से हुनका सभक स्वागत प्रेम से करै छथि आ एम्हर वर वा वधू पक्ष दिसि स डहकनक स्वर फूटि पड़ई छै। वर वा वधू पक्षक स्त्रिगणक डहकनक मध्य कुम्हाईन आ अन्य सभ किओ मुसकी छोडैत सभ बिध-बेवहार पूर्ण करै छथि। गारि-गीत नहि भेला पर वएह सभ टोकियो दैत छथि- 'जा,सुखले- सुखले?' स्त्रिगण ठिठोली करैत हुनका सभ लेल गीत गबैत छथि-

पातर पातर झींगा मछरिया पातर दुनु ठोर गे,
पातर कुम्हईन छिनरो घर में पैसल चोर गे,

*

भाग भाग धोबिनिया छिनरो, तलबल भैंसा एतौ गे,
तलबल भैंसा छुरी चलेतौ, बनरा डांड़ देखेतौ गे।

पंडित आ हजमा बिन त विवाह संपन्न हेबाक कल्पने नहि कएल जा सकइछ। पंडित लेल जगत प्रसिद्ध ई गीत छै-

अकलेल बभना, बकलेल बभना
एक रत्ती नून ला, करइए खेखना
हजमा आ हजमीनिया लेल गीत छै-
अइहे गे नऊनिया देबौ जोड़ा लाल साड़ी
हमर भैया खेत से ऐलन्हि, धोय दे पिछाड़ी।

आ अहि सभ से ऊपर हमर सैयाँ,जिनक आतंक तर सभ समय दबल स्त्रीगण। भने अहाँ कतबों कही जे आब जमाना बदलि गेल छै। किन्तु, पितृसत्तात्मकताक कील-कांटी एना ने समाज में ठोकि-ठोकि के गरल छै, जाहि मे फुसियो सनक गप्प पर पतिक अहम, पत्नीक जिंदगी के उम्र भरि दूभर बनबैत रहल अछि। उदाहरण लेल,पति द्वारा जोर से बजनाई- स्वाभाविक! पत्नी बाजल त ओतबे अस्वाभाविक। ऐहेन में ई डहकने सभ स्त्रिगणक अभिव्यक्तिक स्वर बानि क अबै छै, जाहि मे ओ पतिक आतंक से मुक्त भ क हुनको लेल ठिठोलीक रास्ता खोलैं छथि-

पूरी खाए ननद बिचारी, हलवा ननदोईया
रसगुल्ला खाए हम न्यारी, पत्तल चाटे सइयाँ।

स्त्री अभिव्यक्तिक ई ओ स्वरूप छै, जकरा स्त्री स्वतन्त्रताक पक्षधर विद्यापति सेहो गाबि गेलाहए-

पिया मोर बालक, हम तरुणी गे,
कोन तप चूकल, भेलहुं जननी गे

स्त्रीगण अपन संसार स्वयं रचै छथि, अपने खोहि मे रहै छथि, ओही मे प्रसन्न सेहो भ जाइत छथि। नहि करतीह, मोनक गुबार बाहर नहि निकलती त संसार में कहबा लेल वयस्क, मुदा विचार से अर्ध वयस्कक संख्या दोगुना-चौगुना भ ने जेतै! तैं हे स्त्रीगण! अपन अभिव्यक्ति के पानिक धार बना क राखू। एम्हर से रस्ता नहि भेंटय त ओम्हर स बनाक आगाँ निकलि जाऊ। मुदा, निकलू अवश्य। गाऊ अवश्य-

खूबे खाऊ यौ दुलहा, खूब मोटाऊ यौ दुलहा
अपना चोकटल चोकटल गाल के फुलाऊ यौ दुलहा..

सम्पर्क : 88797 70891

पाठशाला मे मैथिली

● कमलेश झा *(मैथिली आंदोलनी)*

कोनो भाषा के मारबाक सबस कारगर हथियार छइ - ओकरा पाठशाला स हटा देल जाए। मैथिलीक संग सैह कएल गेलइए। एकरा पाठशाला मे आनल जाए ताहि प्रयासक कथा अइ कमलेश झा क संस्मरण-धारावाहिक।

-दू-

लगभग एक डेढ़क समय रहैक। एकटा अजनबी, बगय बानि बेछप, मैल धोती मोचरल-माचरल कुर्ता, माथपर पाग, हाथमे छड़ी कांख तर झोड़ा परिधानमे, महाराज लक्ष्मेश्वर सिंह मेमोरियल कओलेज दिस टुघरल जा रहल छलाह। कालेजक प्रवेश द्वारक आसपास छात्र आ शिक्षकक आबा-जाही रहैक। गेटपर दरबान बिराजमान। संयोगवश मैथिलक शिक्षक उमाकांत बाबू पान खेबाक लेल गेटसँ निकलि रहल छलाह। हठांत सामने पड़लखिन जयकांत बाबू।। अचंभित उमाकांत आगु बढ़ि चरण स्पर्श कयलखिन। आब पान खायब छोड़ि जयकांत बाबूके अरियाति कओलेजक शिक्षक कक्षमे आदरपूर्वक ल गेलखिन। शिक्षक कक्षमे शिक्षककें प्रायः जयकांत बाबूक नाम सुनल रहनि। जखन उमा बाबू जयकांत बाबूक परिचय देलखिन तखन शिक्षक कक्षमे उपस्थित सभ शिक्षक, सम्मानमे ठाढ़ भ गेलाह। पहिने आदरपूर्वक जयकांत बाबूके कुर्सी पर बैसाओल गेलनि। असलमे जयकांत बाबू बैजूजीसँ भेंट करबाक निमित्ते आयल छलाह। अपना अभियानक जनतब देबाक रहनि आ बैजूजी सँ सहयोग लेबाक रहनि। बैजूजी माने प्रोफेसर बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू'। महासचिव, विद्यापति सेवा संस्थान एवम कओलेजक सचिव। एम्हर ओम्हर जे शिक्षक रहथि से सभ जयकांत बाबूक नाम सुनि तुरंत शिक्षक कक्षमे उपस्थित भ गेला। संयोगवश बैजूजी रहथि कालेज परिसरमे। ओहो शिक्षक कक्षमे उपस्थित भेलाह। कुशलक्षेमक बाद अपना अभियानक सूचना देब जयकांत बाबू आरंभ केलनि। एक आध मिनट सुनलाक बाद बैजू बाबू अपन तर्क देब आरंभ केलनि। शिक्षक कक्षमे उपस्थित सभ शिक्षक चुपचाप हिनका लोकनिक वाद-विवाद सुनि रहल छलाह। ककरो कियो सुनबाक लेल तैयार नहि। ई इर घाट त ओ वीर घाट।

पाठशालामे मैथिली अभियानक नेतृत्व डॉ0 जयकांत मिश्र क रहल छलाह। हम हुनका संग द रहल छलियनि। हम रही, मिथिला संघर्ष समितिक प्रतिनिधि।। हम अपन व्यक्तिगत अनुभव कहैत छी। साम्यवादी विचारधाराक लोकक झांसामे मैथिली संस्थासँ जुड़ल रही। संस्था दू सालक बाद टगान हारि देलक। तैं हम बिना संस्थाक भ गेल रही। जयप्रकाश नारायण सम्पूर्ण क्रान्तिक बिगूल बजा देने रहथिन। देशक समाजवादी चिंतकमे जोश आबि गेल रहैक। अगत्या एकटा नव संस्था 'मिथिला संघर्ष समिति', लोकक सोझां आयल, 1974 ईस्वीमे। हमरा सबहक पथ-प्रदर्शक रहथि प0 हरिश्चंद्र मिश्र 'मिथिलेन्दुजी। ओ संघर्ष समितिक पहिल उद्देश्य रखलनि, मिथिलामे मातृभाषा मैथिली माध्यमसँ शिक्षा। कलकत्ताक मैथिली भाषी अनुरागी, मिथिलामे मैथिलीक लेल अभियान चलाओत। मिथिला मे मैथिलीक संस्था की करत? डॉ0 कांचीनाथ झा 'किरण' लगभग तीन दशक मैथिलीक प्रचार प्रसार केने रहथि मिथिलामे। शिक्षाक माध्यम मातृभाषा मैथिली नहि बनि सकल। जयकांत बाबू सेवा निवृत्त छथि। साधन संपन्न छथि। मैथिलीक प्रति समर्पित छथि ।हुनको अपन संस्था छनि। अपन पत्रिका छनि। पहिल दिन रात्रि विश्राम लालबागमे भेल। दोसर दिनसँ रात्रि विश्राम हमर पूअरहोममे। आब दरभंगासँ बाहर गाम देहातमे अभियान पसरल।। मिथिला संघर्ष समिति दिससँ पोस्टर छपाओल गेल।। आगु बढ़ल अभियान।

पाठशाला मे मैथिली लेल मिथिला संघर्ष समिति पोस्टर छपौने रहय। आब हमर दिनचर्या रहय पोस्टर साटब। भरि दिन हाथमे लईक डिब्बा आ कांखतर झोड़ामे पोस्टर। जहां तहां पोस्टर साटी। जखन तखन अवधेशजीक प्रतिष्ठान पर चल आबथि ।हिनकर व्यवसाय बाउल वेयरिंगक छनि। जान पहचान कलकत्ताक राजेंद्र छात्र निवाससं छल। अवधेशजीक गाम छनि काकरघाटी टीशनसं उत्तर भुसकौल। सुखी संपन्न परिवार। खाता भोगता लोक। हिनका प्रतिष्ठान पर पड़ोसी मुन्नाजी,दशरथजी आदिक उठब बैसब रहनि। हमरा कतहु कतहु देबालके चुनेटय पड़य तखन नारा लिखी 'धियापूताके प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा मैथिली मे दिआउ'। एक दिन सकाले दशरथजीक संगे हराही पोखरिक पुबरिया उत्तरबरिया कोनक आसपास स्टेशन रोड मे नारा लिखि रहल छलौं। दशरथजीक हाथमे रंगक बरतन आ हम लिखि रहल रही। एकटा अनजान लोक ठाढ़ भ क हमरा सभहक गतिविधि देखि रहल छलाह। नारा लिखलाक बाद ओ भद्र लोक सहटिके हमरा सभहक लग अयला। अपन परिचय देलनि 'हम रोसड़ा कालेज मे मैथिलीक शिक्षक छी। हमर नाम प्रो श्रीशंकर छी। हमर गाम तमोरिया स्टेशनसं दक्षिण चारि किलोमीटर मधुरा अछि ।अहां हमरो क्षेत्र मे मैथिली क प्रचार करितौं'। हम ओहि क्षेत्रसं परिचित रही। ई परिसर मधेपुर थिक। बाबू जानकी नन्दन सिंहक जन्मभूमि। हम अपन स्वीकृति प्रोफेसर झाकें देलियनि।

क्रमशः...

सम्पर्क : 74848 18313

पोर्ट ब्लेयर स्थित सेलुलर जेल

कालापानी

• **रबीन्द्र नारायण मिश्र** *(साहित्यकार)*



सन1843क प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन स ब्रिटिश हुकुमत हिल गेल। विदेशी सम्राज्य पर आक्रमण ततेक जोरदार छल आ ओहिमे भागीदारी ततेक सशक्त छल जे ओकरा सभ स हारब एकटा गंभीर चुनौती बनि गेल। देशभक्त लोक सभकेँ प्रताड़ित करबाक हेतु आ ओकरा सभकेँ देशसँ फटकी करबाक उद्देश्य सँ अंग्रेज सरकार अण्डमान निकोबार दीप समूहक चेथम टापूपर जेलक निर्माण प्रारम्भ केलक जे स्वच्छ पानिक अभावमे आगू नहि बढ़ि सकल। तकर बाद रोज टापूपर काज प्रारम्भ भेल। 10 मार्च 1885क 200 स्वतंत्रता सेनानी एहि टापूपर पहुँचलाह। तकर बाद तीन जल-जहाजसँ 442 स्वतंत्रता सेनानीकेँ आनल गेल। ओहिमे सँ अधिकांश जमींदार, नबाब, लेखक, कबि आ सम्पन्न लोक सभ छलाह। हुनके सभकेँ जंगल काटि-काटि जेलक निर्माणक काजमे लगाओल गेल। हुनका सभकेँ गुजाराक हेतु एकआना नौ पैसा रोज देल जाइत छल।

अंग्रेज सभकेँ स्वतंत्रता सेनानीपर भरोस नहि रहए। सजा प्राप्त कैदी सभकेँ रातिक अन्हारमे चेनसँ बान्हि कए वाइपर नामक टापू पर राखल जाइत छल। वाइपर टापू पर एकटा जेल आ फाँसी घर सेहो बनाओल गेल। स्वतंत्रता आन्दोलनक कतेको सेनानी लोकनिकेँ फाँसी एतए देल गेल। उत्तर-पच्छिम सीमान्त प्रदेशक पाठान, शेर अलीकेँ ब्रिटिश भाइसराय लॉर्ड मायोक 8 फरवरी 1872क हत्याक आरोपमे 11 मार्च 1872क एतहि फाँसी देल गेल। प्राप्त जानकारीक अनुसार अण्डमानवासी बिआ लालाकेँ एतहि फाँसी देल गेल। ओतहि एकटा अज्ञात स्वतंत्रता सेनानीकेँ सेहो फाँसी देल गेल। तोखा नामक कैदी (संख्या 21545)केँ 12 दिसम्बर 1869क फाँसी देल गेल। जगन्नाथपुरी महाराजा वृज किशोर सिंह देव, वाइपर जेलमे राखल गेल रहथि, जतए 1879 मे हुनकर देहान्त भए गेल।

एहेन क्रूर व्यबस्थाक भग्नावशेष भारतीय संगे ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा कएल गेल क्रूरताक साक्षीक रूपमे ढहल-ढनमनाएल अखनहुँ विद्यमान अछि। आइ-काल्हि वाइपर टापूक दू-महला जेलक मात्र चबूतरा अवशेष अछि। बाहर दिस चारक छोट भाग ध्वस्त देबाल मात्र बँचल अछि जतए अनगिनित देशभक्त लोक सभ अखनहुँ जा कए गुम्म पड़ि जाइत छथि।

कालापानी प्राप्त कैदी सभहक संख्या ततेक बढ़ि गेल जे वाइपर टापूक जेल छोट पड़ि गेल। तखन अंग्रेज सरकार पोर्टब्लेयर मे नव जेलक निर्माण 1896 ई. मे प्रारम्भ केलक। एहि निर्माण काजमे 600 कैदीकेँ लगाओल गेल। 1906 ई.मे जेल बनि कए तैयार भए गेल।

साइकिलक सातटा स्पोक जकाँ बनल जेलक बीचमे केन्द्रिय टावर छल, जाहिपर ठाढ़ एकमात्र पहरेदार सातो जेल-घरपर नजरि रखैत छल। एहिमे कुल मिला कए 663 सेल छल। 21टा वार्डन दिन-राति जेलक सातो भागक तीनू तल्लाक देखभाल करैत छलाह।

कैदी सभकेँ काजक कठोर कोटा देल जाइत छल जकरा पूरा करब असम्भव छल। जे कोटा पूरा नहि केलक तेकरा भयानक यातना देल जाइत छल। कैदी सभ एकर विरोधमे कएक बेर सामुहिक आमरण अनशन केलक। आमरण अनशनमे तीन गोटा मरि गेलाह। 1937 मे 45 दिनक अन्तिम हड़ताल भेल। तकर

बाद महात्मागान्धी आ रबीन्द्र नाथ टैगोरक अनुरोध पर कैदी सभकेँ भारतक जेल सभमे पठा देल गेल।

पोर्ट पोर्टब्लेयर स्थित सेलुलर जेल स्वतंत्रता सेनानी लोकनिपर अंग्रेज द्वारा कएल गेल अत्याचारक मूक दर्शक रहल अछि। एहि जेलक सात खण्डमे सँ आब मात्र तीनटा बँचल अछि, शेष चारिटाकेँ नष्ट कए देल गेल। स्वतंत्रताक बाद एहि जेलकेँ राष्ट्रीय संग्रहालयक दर्जा देल गेल। एहि जेलक मुख्य द्वार लग स्वतंत्रता आन्दोलन सँ जुड़ल चित्र सभहक प्रर्दशनी अछि। ओहि भवनक प्रथम तलपर आर्ट गैलरी, नेताजी गैलरी आ स्वतंत्रता आन्दोलन सँ जुड़ल पुस्तकालय अछि। समस्त स्वतंत्रता सेनानीक स्मृतिमे एहि जेलक लगीच अनवरत जरैत स्वातंत्र ज्योति राखल अछि।1906 ई.मे निर्मित सेलुलर जेल 23.5 फीट x 7 फीटक छोट-छोट कोठरीसँ बनल अछि जाहिमे लोहाक ग्रीलक द्वार लागल अछि। कैदी सभकेँ एक-दोसरसँ फराक रखबाक हेतु एहन निर्माण कएल गेल छल।

जेलक मुख्य द्वारपर दू-महला प्रशासकीय भवन अछि। मुख्य द्वारक बाम भागमे दोसर दू-महला भवन अछि जे ओहि समयमे जेल-अस्पतालक काज करैत छल। मुख्य द्वारक दहिन भागमे फाँसीघर बनल छल जाहिमे तीन व्यक्तिकेँ एकसंग फाँसी देल जा सकैत छल। तीनू कोठरी फराक-फराक छल। फाँसी घरमे बाहरी देबालक दोसर दिस एकटा केबाड़ खुजैत छलैक जाहिबाटे फाँसी चढ़ाओल गल व्यक्तिक लहास बाहर कएल जा सकैत छल। फाँसी घरसँ सटल हिन्दू तथा मुसलमान हेतु फराक भनसाघर छल। ओकर बीचमे इनार छल जाहिस पेयजल उपलब्ध होइत छल।

भारतक स्वतंत्रता आन्दोलनक किछु प्रसिद्ध सेनानी सभ एहि जेलमे रहल छथिजाहिमे प्रमुख नाम अछि - सावरकर बंधु, मोतीलाल वर्मा, बाबूजी राम हरि, पण्डित परमानन्द, कधा राम, उल्लासकर दत्त, वरिन कुमार घोष, भाई परमानन्द आदि। स्वतंत्रता आन्दोलनसँ जुड़ल किछु पैघ-पैघ षड्यंत्रमे सजा प्राप्त स्वतंत्रता सेनानीकेँ कालापानी भेलापर एतए राखल गेल छल। एहिमे प्रमुख मामला सभमे अलीपुर बम केस, नासिक षड्यंत्र, लाहोर षड्यंत्र केस आदि प्रमुख अछि।

एहि राष्ट्रीय संग्रहालयक एक प्रमुख आकर्षण थिक- प्रकाश एवम ध्वनि कार्यक्रम। एहि कार्यक्रमकेँ देखि कए बारंबार रोमांच भए जाइत अछि। लोक चुपचाप स्वतंत्रा आन्दोलनक पुरोधा सभहक आत्म बलिदानक खिस्सा सभ देखैत-सुनैत अछि। लगैत अछि जेना भूतकालक आन्दोलनकारी सभहक जीवन वृतान्त सद्यः प्रकट भए गेल हो। फाँसीपर चढ़ल हुतात्मासभ कहि रहल हो-'हे भरतवंशी! अहाँ हमर बलिदानकेँ बिसरि नहि जाएब।'

पोर्टब्लेयर जेबाक हेतु जल जहाज वा हवाई जहाज उपयुक्त साधन अछि। ओहिठाम रेल सेवा नहि अछि। चेन्नई, कोलकाता एवम विसाखा पत्तनमसँ पोर्टब्लेयर हेतु नियमित जल जहाज खुजैत अछि। महिनामे तीन वा चारिटा जहाज कोलकाता एवम



वाइपर टापू पर बनल फाँसी घर

चेन्नई सँ पोर्टब्लेयर पहुँचैत अछि आ दू-सँ-चारि दिनमे सुस्ता कए आपस भए जाइत अछि। विसाखापत्तनमसँ मासमे एकबेर पोर्टब्लेयर क जल जहाज खुजैत अछि। एहि यात्रामे 40 सँ 50 घण्टा लगैत छैक। समुद्री यात्रा कते गोटाकेँ पचै नहि छनि आ ओ दुखित पड़ि जाइत छथि। पोर्टब्लेयरक हेतु हवाई जहाज चेन्नई, कोलकाता, एवम हैदरावाद हवाई अड्डासँ खुजैत अछि। एहि यात्रामे दू घन्टा समय लगैत अछि। सुरक्षा कारणसँ ईजहाज सभ भोरक समयमे उड़ैत अछि। हम दिल्लीसँ चेन्नई आ चेन्नईसँ पोर्टब्लेयर गेलहुँ। आपसी यात्रा सेहो ओही मार्गसँ सम्पन्न भेल।

23 नवम्बर 2010क हम सभ चेन्नई हवाई अड्डापर पहुँचलहुँ। ओहिठाम राजाजी भवन स्थित अतिथि गृहमे रहबाक व्यबस्था छल। ओतए कनीकाल सुस्ता कए हम सभ ट्रेन द्वारा तिरुपति विदा भए गेलहुँ। 18 नवम्बर 2010क रातिमे आपस चेन्नई अएलाक बाद हम राति विश्राम ओतहि केलहुँ। रस्ता हेतु, बहुत रास पुरुकिआ, ठकुआ सभ बना कए लए गेल रही जे चेन्नई अतिथि गृहमे राखि देने रहिऐक। आपस अएलहुँ तँ सभ पुरुकिआ, ठकुआ मूसक पेटमे चलि गेल रहए वा छिन्न-भिन्न भए गेल रहए। 20 नवम्बरक भोरे हम सभ पोर्टब्लेयर हेतु विदा भेलहुँ। 26 घन्टाक यात्राक बाद पोर्टब्लेयर पहुँचलहुँ। ओहिठाम राज्य पर्यटन विभाग द्वारा संचालित टील हाउसमे हमरा सभहक ठहराबक व्यबस्था छल। कनिक्के कालमे हम सभ ओतए व्यवस्थित भए गेलहुँ।

अण्डमान एवम निकोबार द्वीप समूह केन्द्र शासित क्षेत्र अछि। बंगालक खाड़ी एवम अण्डमान समुद्रक मुहानापर अवस्थित ई द्वीप समूहक राजधानी पोर्टब्लेयर थिक। एहि द्वीप समूहक कुल रकबा 3185 वर्ग मीटर अछि। एहिमे अण्डमान एवम निकोबार दूटा द्वीप समूह अछि। नीकोबार द्वीप समूहक राजधानी कारनीकोबार अछि।

अण्डमान निकोबार द्वीप समूहमे छोट-पैघ 572 टापू अछि जाहिमे अधिकांश (550) अंण्डमान द्वीप समूहमे आ 22 टा नीकोबार द्वीप समूहमे अवस्थित अछि। अण्डमान एवम नीकोबारक बीचमे 150 किलोमीटर चाकर दस डिग्री चैनेल (समुद्री रस्ता) अछि। एहि

बाटे चीन, जापान, सींगापुर, थाइलैंड, मलेशियाक जल जहाज जाइत अछि।
पोर्टब्लेयर पहुँचि हम सभ अतिशय उत्सहित रही। हवाई अड्डासँ सोझे राज्य पर्यटन विभागक अतिथि गृहमे आरक्षित आवासपर पहुँचलहुँ। पोर्टब्लेयर अण्डमान निकोबार द्वीप समूहक राजधानी अछि। समुद्रिका संग्रहालय, मानव जाति संग्रहालय (Anthropological Musium) रोज द्वीप, वाइपर द्वीप, मैटीन पार्क, गाँधी पार्क, जंगल संग्रहालय, विज्ञान केन्द्र, हावलक द्वीप, चिड़िया खाना आदि ओहिठाम क प्रसिद्ध दर्शनीय स्थान अछि।
टील हाउसक खिड़कीसँ समुद्रक मनोरम दृश्य तखन चरमोत्कर्षपर पहुँचि जाइत छल जखन प्रातःकालीन सूर्यक किरणक स्पर्श समुद्र तलसँ होइत सूर्यक प्रतिविम्ब क्षितिजपर लटकल रहैत छल। आवागमनमे प्रयुक्त जहाज सेहो घरे बैसल देखाइत छल। टील हाउसमे भोजन, जलखै, चाह इत्यादि सभ घरे जकाँ बना कए देल जाइत छल। माछ खेनिहार हेतु तँ ओ स्वर्ग छल। बहुत साधारण दरपर ओहिठाम समुद्री माछ बनल-बनाओल भेटि जाइत छल।
संयोगसँ संग्रहालयमे घुमैतकाल हमर एकटा मित्र सपरिवार भेटि गेलाह। ई एकटा आश्चर्यजनक घटना छल। ओ जलसेना (नेभी)क अतिथि गृहमे ठहरल रहथि। मुदा ओहिठामक भोजनक व्यवस्थासँ ओ सन्तुष्ट नहि रहथि। हुनका हम सभ अपन अतिथि गृहमे समुद्री माछक नोत देलिअनि जाहिसँ ओ बहुत सन्तुष्ट तथा प्रसन्न भेलाह।


रोज टापू पर सुस्ताइत लेखक

ओहिना घुमैतकाल लोधी कालोनीमे हमर डेराक एकदम पाछूमे रहनिहार पड़ोसी भेटि गेलाह। यद्यपि मुहाँ-मुहीं हम सभ एक-दोसरकेँ जनैत रही। एकाध बेर कनीमनी गप्पो-सप्प भेल रहए, मुदा नीकसँ परिचय तँ पोर्टब्लेयर मे भेल। कतेक आश्चर्यक बात थिक जे सालो लगपास रहए-बला लोक तखन परिचित होइ छथि जखन ओ घरसँ हजारो कोस दूर सन्योगसँ भेटि जाइत छथि। अकस्मात नेभीक म्यूजियममे ओ देखेलाह। फेर कनी-मनी एक-दोसरकेँ देखि घुमि कए आगू बढ़ि गेलहुँ। मुदा जखन फेर दोसर ठाम भेटलाह तखन तँ ने हमरे रहल गेल आ ने हुनके। घर तँ लग-पास छलहे, लोदी गार्डेनमे सेहो नित्य ओ दुनू व्यक्ति देखाइत रहैत छलाह। मुदा परिचयक ई क्रम ओतहि धरि रहल। दिल्ली आपस अएलाक बाद फेर ढाकक तीन पात। असलमे दिल्लीक संस्कृति लोकपर हाबी भए जाइत अछि।
हमरा सभकेँ जोगारसँ एकटा स्थानीय चालक गाड़ी सहित भेटि गेल छल। ओकरा ओहिठामक जानकारी रहए। तैँ ओकरा संगे रहलासँ मदति होइत छल। मुदा ओ छल पैसाक लोभी। मौका पबिते पाइ बँचा लैत छल। प्रातःकाल हेवलाक टापू जेबाक हेतु ओकरा टिकट आनए देलिऐक। ओ आनिओ देलक मुदा पैसा बेसी लए लेलक। प्रातःकाल जखन जल-जहाज पकड़ए गलहुँ तँ रहस्य खुजल। टिकटक दर ओहिठाम लिखल छल। टिकट आसनीसँ ओहिठाम स्वयं लए सकैत छलहुँ आ अतिरिक्त पैसा जे लागल से बँचि जाइत।
पोर्टब्लेयर सँ दू किलोमीटरक दूरीपर अवस्थित रोज टापूकेँ पूबक पेरिस कहल जाइत अछि। अंग्रेज अपना जमानामे एहिठाम सुख-सुविधाक समस्त साधनक व्यवस्था केने छलाह। बेकरी, क्लब, शुद्ध पानिक व्यवस्था, रहैक हेतु नीक-नीक घर, मन्दिर-मस्जिद, चर्च, खेलेबाक स्थान आदि-आदि ई सभ व्यबस्था कैदी सभहक श्रमक दुरुपयोग कए प्राप्त कएल गेल छल। एहिठाम करीब पाँच सए ब्रिटिश परिवार रहैत छल। आब ओहिठाम बनल भवन सभ ध्वस्त भए गेल अछि। कएटा ध्वस्त देबाल गाछक डारि सभहक मदति लेने ठाढ़ अछि। अंग्रेजक पलायनक बाद स्थानीय लोक सभ मकानसँ मुल्यवान वस्तु ,नीक-नीक लकड़ीक सामान सभ गाएब कए देलक। आब ई पूरा क्षेत्र भारतीय जल सेनाक अधीन अछि। एहिठाम दोकान-दौरी नहि अछि।
किछु समय धरि ई क्षेत्र जापानक अधीन छल। द्वितीय विश्व युद्धक दौरान प्रयुक्त जापानी बेकर अखनो देखल जा सकैत अछि। पोर्टब्लेयर सँ 39 किलोमीटर उत्तर-पूबमे 113 वर्ग किलो मीटरक रकबामे अवस्थित हावलक टापू अपन प्राकृतिक सौन्दर्यक हेतु प्रसिद्ध अछि। पोर्टब्लेयर सँ एहिठाम आबक हेतु रोज सरकारी एवम निजी जल जहाज उपलब्ध अछि। अण्डमान निकोबार प्रशासन द्वार पोर्टब्लेयर सँ हेलीकाप्टर सेहो उपलब्ध रहैत अछि। हावलक टापूपर रहबाक हेतु सर्वोत्तम स्थानमे सँ सरकारक पर्यटन विभाग द्वारा संचालित डालफिन रिजोर्ट अछि। एहिमे पूर्व आरक्षणक व्यवस्था पोर्टब्लेयर मे कएल जाइत अछि।
हावलक टापूक लगपास राधानगर, विजयनगर, एलीफेंट, कालापत्थर बीच प्रसिद्ध अछि। राधानगर बिच एशियाक सर्वोत्तम बीचमे सँ मानल जाइत अछि। स्कूबा डाइभींग एहिठामक प्रमुख गतिविधिमे शामिल अछि। एहि लेल प्रशिक्षित मार्गदर्शकक मदति लेबाक चाही आ प्रयास करबाक चाही जे एकटा संगी संगमे रहथि जाहिसँ जरूरी भेलापर एक-दोसरकेँ मदति कए सकी।
दोसर दिन भोरे हम सभ जहाज पकड़ि हावलाक लेल विदा भेलहुँ। लोक सभ अपन-अपन स्थान पर बैसि गेल रहथि। जहाज सीटी देलक आ विदा भेल। जहाजमे मनोरंजन हेतु टीवी लागल रहए। खेबा-पीबाक जोगार रहए। समुद्रमे प्लास्टिक नहि फेकबाक चेतौनी बारंबार देल जाइत रहए। किछु कालक बाद

समुद्रक पानिक रंग बदलल बुझाएल। हावलक पहुँचलाह बाद हम सभ एकटा जीप केलहुँ जे दिन भरि हमरा सभहक संगे रहल आ सभठाम घुमौलक।

एकटा नाओ ठीक कए कए हम सभ राधानगर बीच विदा भेलहुँ। नाओमे हम दुनू गोटेक अलावा नाविक मात्र छल। डरो होइत छल। कएक बेर नाओ हिलकोरा दैक। राधानगर बीच पहुँचलापर हमरा लोकनि थोड़े काल एमहर-ओहमर घुमलहुँ। एकटा गुजराती दंपति पहिनहिसँ ओतए रहथि। पति-पत्नीक बएसमे बहुतोक फर्क रहनि। पत्नी बाहरे प्रतीक्षा करैत छलखिन आ ओ स्वयं मार्गदर्शकक संग समुद्रमे गोंता लगबए गेल रहथि। हुनका देरी होइत देखि पत्नीकेँ दम फुलैत छलनि। आशंकामे परेशान रहथि जे कहीं किछु भए ने जानि। अन्ततोग्तवा, ओ पानिसँ निकललाह, तखन हुनकर पत्नीकेँ जान-मे-जान आएल।

राधनगर बीचक लगपास जंगल छल। किछु कालमे हम सभ ओही नाओसँ आपस हेवलक अएलहुँ आ जीपसँ विजयनगर बीच पहुँचलहुँ। रस्तामे बंगाली सभ बंगलामे गप्प-सप्प करैत देखाइत छलाह। बंगाली महिला सभकेँ काली पूजा करैत देखलिअनि। समुद्रक किनारा जतए कतहु होइक, दृश्य लगभग एक्के रंग रहैत अछि। विजयनगर बीचपर हमसभ थोड़ेक काल सुस्तेलहुँ। एमहर-ओमहर घुमलहुँ। समुद्रमे घुसि कए पानिक गछार सँ आनन्दित भेलहुँ। फेर आपस जीपसँ हैवलक पहुँचलहुँ। ओहिठाम लगपास कएटा चीज सभ देखलहुँ आ जल जहाजपर बैसि पोर्टब्लेयर विदा भए गेलहुँ।

रात्रि विश्रामक बाद प्रातःकाल हम सभ पुनश्च जल जहाज पकड़बाक हेतु विदा भेलहुँ। घरेसँ जहाजक सीटी सुनाइ पड़ैत रहैत छल। जहाजो कएक तरहक छल। हम सभ निजी जल जहाजमे टिकट लेने रही जे अपेक्षाकृत कम समयमे यात्रा कए लैत छल, साफ-सुथरा छल आ किछु आधुनिक सुख-सुविधा सेहो रहए। सभसँ पहिने हम सभ रोज आइलैन्ड पहुँचलहुँ।

ओहिठामक खण्डहर सभ देखि मोनमे भाव अबैत छल जे समय ककरो नहि। सैकड़ो कैदी सभहक शोषण कए जबरन दिन-राति श्रम करा कए ओहिठाम किसिम-किसिम केर सुविधा युक्त भवन, कार्यालय, क्लब हाउस, बेकरी, जल संशोधन आदिक व्यबस्था कए अंग्रेज सभ रहैत छल। मुदा आब की अछि? निर्दोष लोक सभहक चीत्कार दुर्दांत कथा, ओहि गाछ सभहक डारिपर कहुना कए अँटकल मकान सभहक भग्नावशेष...।

जल जहाजसँ निकलि कए तय समयमे आपस आएब अनिवार्य रहैत छल, अन्यथा जहाज दू बेर सीटी मारत आ चलि पड़त। एहि चिन्ताक कारण नियत समयसँ पूर्वे हम सभ जहाजपर आबि गेलहुँ। जहाज वाइपर आइलैंड दिस विदा भेल।

आइलैंड पहुँचि कनी दूर पएरे चलि कए ओ भयावह स्थान आएल जतए आजादीक दीवाना सभकेँ अंग्रेज फाँसी दए दैत छल। ओहिठाम विषधर सभहक कारा छल। जीबैत आदमी सभकेँ ओहि सुनसान स्थानपर छोड़ि देल जाइत छल। तकर अन्त सोचसँ परे छल। एहन क्रूर होइत छल अंग्रेज।

पोर्टब्लेयर गेनिहार पर्यटक एकटा उद्देश्य - ओहिठाम लगपासमे रहनिहार जनजातिकेँ देखब रहैत अछि। एहि हेतु स्थानीय प्रशासनक स्वीकृति पहिनहिसँ लेब जरूरी अछि। एहि टापूमे जरबाकेँ अलाबा Sintinoloreorge, Great Andamanire, तीन आओर तरहक जनजाति रहैत छथि जिनकर संख्या निरन्तर घटि रहल अछि। पर्यटक सभ सफारीपर जाइतछथि आ जरबाकेँ देखि आनन्दित भए जाइत छथि। ओ सभ अखनो सामान्य जीवन-यापनसँ बहुत दूर छथि। पर्यटक सभ भोजन सामग्री दए कए हुनकर सभहक चित्र लेबाक प्रयास करैत अछि।

कएक बेर आओर-आओर तरहक उपराग सेहो सुनबामे अबैत अछि। स्थानीय लोक द्वारा जरबा महिलाक शोषणक मामला सभ सेहो सुनबामे अबैत अछि। स्थानीय प्रशासन एहि तरहक घटना सभकेँ गंभीरतासँ लेलक अछि। पर्यटक सभहक हेतु अलग रस्ता बनाबक प्रयास भए रहल अछि जाहिसँ जरबा लोकनिक जंगलक बासा अधिक सुरक्षित रहि सकए।

सेलुलर जेलक सीढ़ी लग ओहि जेलमे समय बितओनिहार सैकड़ो लोकक नाम अंकित अछि। ओहिमे अधिकांश वंगाली सभहक नाम लगैत छल। एकाधटा नाम अपनो सभहक ओहिठामक बुझाएल।

साँझमे लाइट एवम साउण्ड कार्यक्रममे स्वतंत्रता संनानी सभहक त्याग आ आत्म बलिदानक गाथा कहैत कार्यक्रम देखि-देखि कोन देशभक्त रोमांचित नहि होएत। रहि-रहि कए मोन होइत छल जे भारतीय स्वतंत्रता संग्रामक हुतात्मा सभकेँ क्रूरता पूर्वक जान लेनिहार अंग्रेज सभहक नरेठी दाबि दी।

कएक बेर आँखिसँ नोर बहैत रहल। जखन प्रकाश किरण फाँसी घरपर पड़ैत छल तँ पश्चाताप ओ पीड़ासँ मोन भरि जाइत छल। की हम सभ अपन पूर्वजक बलिदानकेँ व्यर्थ जाए देब? की हम सभ एतेक कठिनतासँ प्राप्त स्वतंत्रताक रक्षा कए सकब? लता मगेंशकरक एवम प्रदीपक गाओल गीत- 'ऐ मेरे वतन के लोगों, तुम खूब लगा लो नारा...' गबैत-गबैत 24 तारिखक भोरे हम-सभ पोर्टब्लेयर हवाई अड्डापर चेन्नईक जहाजपर चढ़ि गेल रही, एहि संकल्पक संग राष्ट्र प्रेमक एहिअमर दीपक निरन्तर प्रज्जवलित राखबाक हेतु सदति प्रयत्नशील रहबे ओहि हुतात्मा सभहक प्रति सही श्रद्धांजलि होएत।

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलनक पृष्ठभूमिपर अचल ठाढ़ अण्डमान निकोबार आइलैंड माने कालापानी भारतीय जनमानसकेँ युग-युग धरि झंकृत करैत रहत। भारतीय स्वतंत्रता संग्रामक दौरान हजारो पुरुष-महिलाक बलिदान व्यर्थ नहि जाए, ओकर स्मरण बनल रहए आ ओहिसँ प्रेरणा लैत अपन देशक गौरव-गरिमामे हम सभ योगदान करैत रही, ताहिलेल जरूरी अछि जे समय-समयपर सम्पूर्ण देशक लोक स्वतंत्रताक एहि पवित्र तीर्थक दर्शन करथि।

सम्पर्क :99685 02767

फगुआक रंग: आजुक संग

• **शैलेन्द्र आनंद** *(कवि- नाटककार)*

फगुआ जीवनमे रंग भरबाक आम लोकक संग-चलवाक आत्मानुरागी पाबनि थिक जकरा अदौ सँ बहुत उत्साह आ उमंगक संग हमरालोकनि मनबैत आबि रहल छी। से कहियो बहुत उत्सुकताक संग फगुआक बाट जोहल जाइत छल। चारु दिशा, हास-परिहास आ ठहक्का सँ अनुगुंजित रहैत छल। 'फगुआक गायनक पूर्वाभ्यास तीन-चार सप्ताह पूर्वहि आरम्भ भ जाइत छल। संध्याकाल-चारूभर सँ ढोल-मजीरा आ डम्फाक थाप पर... शिव मठ मर शोभे लाल धुजा गबैत, मस्त जोगीराक सा..रा.. रा..रा.. रा.., आत्मविस्मृत क दैत छल कहियो।

आब ने ओ देवी आ ने ओ कराह। समय बदलि गेल। वर्तमान समय एहि पावन पर्वक दुश्मन बनि गेल! भूमंडलीकरणक बिहाड़ि मे प्रेम आ सौहद्रताक गाछ जड़ि-मूल सँ आरड़ाकए खसि पड़ल। नवयुगीन सोच फगुआक अर्थ बदलि देलक। विकासक एहि नवगछुली मे घृणा, छल-प्रपञ्च सम्बन्धक दुराव आ अनैतिकताक फल लटकल अछि। लोक 'एकांत जीवन पसीन करैए, अरस्तूक परिभाषा- 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी थिक ' बदलि गेला अछि। एकटा नव परिभाषा गढ़ल गेल-मनुष्य असामाजिक प्राणी थिक। जैकरा नह आ दाँत होइत छैक'। फगुआ बदलि गेल ताहि सँग समाजक परिस्थिति, आहार-व्यवहार,आचार-विचार सभ पर प्रभाव पड़ल। नीक प्रभाव पड़ितय त सभ सहि विकासक गुण गबितै। मुदा ई त करोना भाइरस स बेसी खतरनाक अछि। कैराना भाइरस' देह से विलग कएलक आ ई नवका भाइरस गेहस अंततः एकर प्रथम आहार मानवीय सरोकार बनल।

गामक एकटा लोक के पुछलियैक, की यौ मरर गाम! टोलक की हाल मरर कहलनि- की पुछैत छी? उन्टा बसात बहैए आब टोल -पड़ोस मे। सभ अपन स्वार्थ मे अंध अछि। क्यो ककरो ताकयवाला नै। जय जगदीश, पचे-पचीस, सबटा-चुरा-दही, हमरे दिश। आ ठहक्का मारि, हँसैत हमर हाल-चाल लेलनि। गप्पक क्रमकें बढ़बैत हम अपन बात पर एलौं। कहलियनि बहुत दिनुक बाद, एहि बेर फगुआक छुट्टीमे गाम आबि सकलहुहें। इच्छा अछि जमि क रंग-अबीर खेलाइ। मरर बजलाह-कत छी, समय ठमकले छै? कियो घर स नहि निकलत। सभ घरहिमे कचरम कूट करत भरि इच्छा दारु पीअत आ टी.वी पर होरी देखत। अहाँ के मीता जे बिरहा गाबय-'राम जोड़ी रे ...की नाम छेलै? ओकर हाल कहु। मरर कनेक काल चुप्प रहलाह पुनः बजलाह-नहि नीक। बेचारा अपने सम्पूर्ण जिनगी जे बेटा-पुतौह के खातिर राति -दिन एक कय के दस कट्टा अरजि देलकै। बेटा के पढ़ा-लिखा, मनुक्ख बना देलकै वैह बेटा बाप स भिन्न भ क खाइ-ए आ बाप-माय के मुंह तकबैए।

अर्थक पाछू भागैत लोक, अर्थपिशाच बनल, अन्त हीन दौंड़ मे प्रविष्ट भ गेल अछि। ने आगू ताकि रहल अछि ने पाछू, मात्र भागल जा रहल अछि। लक्ष्यहीन, संवेदनहीन, एकाढ़ बनल एहि लोकक कोनो पड़ाव नहि छैक। अंतहीन यात्रा क पथिक बनल लोकक लेल फगुआ क मर्म अर्थहीन अछि। टाका कमयवाक होड़ मे दारूक ब्लैक मार्केटिंग नीक धंधा छैक। जाहि मे 16 /17 वर्षक छौंड़ा सभ आगि मूतैए। ई सभ ड्रग्स क अभ्यासी बनि गेल-ए। लारवर्के खाक करबा मे लागल, ई देशक भविष्य, फगुआक अर्थ, मात्र नशापान कें बुझि, हत्या आ बलात्कार कें पुरुषार्थ बूझि रहल अछि। सभतरि आलीशान बंगला आ बंगलामे रहैत लोक, जानबरो सँ खसल। फगुनी हवाक कोनो सिहकी नहि, शिव मठ पर शोभे लाल धूजा बला गाम, पतनुकान ल लेलक। जोगीराक स्थान, जबीरा लेलक। गवन करवा मे जे जतेक जाबीर, ओकर फगुआ ओतेक मस्त। फगुवाक रंग बेदरंग भ गेल। मांस आ मालपुआ खाइत लोक, माल -जाल सदृश पाउज क रहल अछि। ननदि मोबाइल पर. फगुआक आनन्द ल रहल छथि त भाउज लेपटॉप पर देओर, द्वारा प्रेषित खजुराहो चित्रकला क अभिनव रूपसँ सम्मोहित छथि। फगुआक अर्थ 'भोजन, ओकर रंग सेक्स क प्रदर्शन मात्र रहि गेल अछि-एहना स्थिति मे पूर्व क फगुआक सुमार करब आवश्यक प्रतीत होइछ। अतीत सम्पूर्ण रुप सँ तीत नहि होइछ।

वर्तमान विकासक क्रम, मानव कें असभ्यावस्था दिश उन्मुख क देलक अछि। संस्कृतिक गरिमा समाप्तप्राय अधि। लोक संवेदन हीन भ गेल! समरसताक सर्वथा अभाव झलकि रहल अछि असहजता पराकाष्ठा पर पहुँच चुकल अछि। एहना स्थिति मे फगुआक रंग-अबीर जिनगी मे रंग भरबा लेल बेलल्ला रहत। फगुआ आएत, फगुआ जाएत मुद्दा किछु नहि बुझाएत। रामक ई देश रावणक लंका बनि जाएत। तें सम्पादक जी अपन पत्रिकामे रंग भरथि। जाहि सँ उन्मुक्त कंठें फगुवाक फागु मे स्वर भरि सकी आ डम्फाक ताल पर कहि सकी जोगिरा सारा रा.. रा... रा... रा...।

सम्पर्क : 85212 02514



फगुआ

•जटाधर पासवान *(संस्कृतिकर्मी)*

ऋतु बसंत समशीतोष्ण वातावरण में रंग आ उमंगक पावनि फगुआ प्रायः सब पाबनि सँ अनोखा पाबनि मानल गेल अछि। हमरा सब सालो भरि अनेकानेक पाबनि - त्योहार मनाबैत,छी मुदा फगुआ के आनन्दे किछु आउर अछि। हमारा सब वसंत पंचमी सरस्वती पूजा के विहाने से फगुआ गेनाइ शुरू क दैत छियै। बड़-बुजुर्ग संग नवतुरियो लोकनि कोनो दलान पर एकत्रित भ सायंकाल सँ भानस-भात धरि डम्फा के थाप आ झाल मजीरा के करकल ध्वनि संग फगुआ झुमरा आ जोगिरा-विरहा के सवाल-जवाब से वातावरण के अनघोल क दैत छथि।

घर-घटकैती, जात- बारात सब में रंग-अबीर लगेनाई के प्रचलन सेहो शुरू भ जाइत अछि ।शहरी इलाका मे खासक नोकरीहारा लोकनि सेहो होली सँ पहिने एक-दोसर के रंग-अबीर लगबै के प्रचलन बनेने 'छथि ओ सब ओकरा'होली मिलन समारोह' कहै छथिन। गांव-देहात में होली मिलन समारोह नै मनाओल जाइ छै ।



होली स एक दिन पहिले सम्मत जराओल जाइ छै। सम्मत जरएबाक लेल पर्याप्त मात्रा में लकड़ी-काटी गोरहा-गोरहन्नी के ढेर निर्धारित स्थान पर लगाओल जाइ छै।

फगुआ मे देवी-देवताक चढ़ौनाक चिन्ता नै रहे छै। खान-पान, कपड़ा लत्ता, पर वेसी जोर रहे छै। ऐ पर्व में माछ-माउस पर सवसे बेसी जोर रहे छै। तें दुआरे एकरा मांसाहारी पावनि कहल जाइ छै। मादक पदार्थ तारी,-दारू आ भांग सहो खूब चले छै। ओना त मादक पदार्थ के सेवन नीक बात नै छै मुदा जोश आ उमंग के लेल त चाही। पी लेलाक बाद इहो देखल जाइ छै कि मनुष्यक अन्दर के इन्सान जागि जाइ छै । गांव-घर मे जे कोनो तरहक मतान्तर वा छोट मोट बात ल क एक दोसर से बोला-भूकी बन्द रहें छै फगुआ में सब समाप्त भ जाइ छै। विना ककरो मध्यष्थता के स्वयं एक दोसर के गला मिलि रंग-अबीर लगा सब गिला सिकवा दुर क लैत अछि ▷ई फगुएटा में देखल आइ छै आ ऐ मे मादक पदार्थ के श्रेय सेहो खूब रहे छै।

पाबनि के पहिल बेला रंग-अबीर के जमि क धुरखेल होइ छै।कत्तौ महिला के टोली ,त कत्तौ पुरुष पुरुष के नवतुरिया सवक गजबे टोली रंग अबीर के अलावा धूल -गर्दा संग-संग कपड़ा फार फगुआ सेहो चलैसार मे छै। तें दुआरे नवतुरिया सब ए बेला मे पुरान -धुरान कपड़ा-लत्ता पहिर क' रहे छै। इ माइन क' चलै छै जे एकरा फाइड़ देल जेतै।

धुरखेल के समापन के पश्चात सब कियो नहा - सोनाक नव-नव कपड़ा पहिर एक दोसर के निमंत्रण पर जमिक' खेनाइ-पीनाइ होइ छै। फगुआ के दोसर बेला मे केवल अबीर लगाओल जाइ छै। बड़-बुजुर्ग के पाएर पर अबीर के लगा हुनका से आशीर्वाद लैत छै,-आ बड़ - बुजुर्ग मांग में अबीर के टीका लगा सब के आशीर्वाद दैत छथि।

संग-संग आब फगुआ गेनाई के रसमंजरी,कार्यक्रम दोसर बेला सांयकाल धरि चलैत रहैत छै। गाम-घर मे दू तरहक टोली रहै।एक त सम्भांत वर्गक जे पढ़ल -लिखल मालिकाना समुदाय जिनकर फगुआ साहित्य आ शास्त्रीयता पर आधारित रहै छन्हि।

होली का संग खेलव, तबला हमारी विदेश–।

सां-नि धम म प ध ग- रे, सा रे ग म म प म प-

हुनका लोकनिक साज - बाज, हारमोनियम तबला', नाल आदि रहै छन्हि। ओ सब कोनो दूरा-दलान पर बैसक गाबै जाइत अथि । मुदा दौसर दिश अनपढ़, गांव के भोला-भाला गरीबहा लोक-भाषाक झमकौआ होली के टोली, जे सबके दूरा-दरबज्जा पर घुमि घुमिक फगुआ गबैत छल। हुनकर सबहक साज बाज डम्फा, झाल, करताल ढ़ोल -पिपही आदि। ठेठ लोक भाषा मुह जुबानी रचना - सिया झाडू नामी केश राम लइहें सोने के ककहिया–। शास्त्रीय संगीत के कोनो ज्ञान नै, मुदा लय सुर के पक्का।

जखन ई टोली घूमैत-धुमैत दोसर टोली के समीप आमना-सामना होइत अछि त डम्फा के थाप धीमा भ जाइत देखि ओ सब (मालिक दीगर) मनक बात बूझि जाइत छलखिन्ह। 'तों' सब थम्हि किएक गेलहक,' तोरे सबहक त प्रतीक्षा छल। दहक झमकोआ होरी। एकर बाद त डम्फा के दे दनादन थाप, फगुआ के टाहि हिनिका कोन कमी-भोला बाबा छैन देबैया'—। तेकर बाद त जोगिरा फेर बिरहा-' आब रे जोरिया' रे – किनका पोखरिया जोरिया, ए झिलमिल पनिया रे, किनका पोखरिया रे सेमार, किनका पोखरिया रे– जोरिया ए रेहू रे मछरिया लेकिन कौने पापी घिचै महजाल–

झुमरा - 'चलै के जे सोझ बटिया, चलली कुबटिया हे

गरिये गेलै अंगुरिया में कँटवा गरिये गेले । केए मोरा कँटवा निकालत हे ननदी केए मोरा हे दरदिया हरि लेत केए मोरा ––।

जेकरा कहियो एक आखर से भेंट नै से एक से बढ़ि क' एक सवाल-जवाब अपन जोगीरा, बिरहा आ झुमरा मे करैत छल, जे केहन-केहन पढ़ुआ बाबू सब के निरुत्तर आ अचम्भित क दैत छल। मालिक दिगर खुश भ ओहि गबैया सबके बकसीश प्रदान करैत छलाह। एहि तरहें सौहार्दपूर्ण वातावरण मे फगुआ मनाओल जाइत छल।

की ओ जमाना छलै। संसाधन के अभाव, तैयो लोक सब बड़ खुश छल। समय साल बीतैत गेलै, संस्कृति आ परम्परा सब बदलि गेलै। आब केओ ककरो से मतलब नै राख चाहे छै। फागुन मास अबिते ओ सब दृश्य मन पड़ि जाइए! फागुन मे फगुआ एखनो गाबै छी, मुदा मनेमन- फगुआ आएल, फगुआ गेल, फगुआ चलिए गेल।

सम्पर्क : 94309 88178

गप्पू दासक होरी

• **सच्चिदानंद सच्चू** *(उपन्यासकार - पत्रकार)*

गप्पू दासक टांग अबाह छनि मुदा मोन अखनहुं फरहर छनि। 1950 मे जनम भेल रहनि। 20-22 सालक रहल हेता त' पापी पेट पुरैनियां ल गेलनि। साल भरि त कोनो बात नै मुदा फागुन मास अबै त दिन गिनब शुरू क देथि। बसंत पंचमीक बादे सं मोन ठेहियाए लागै छलनि। रिटायरमेंटक बाद गामहिमे रहैत छथि। बसंत पंचमी अहू बेर संपन्न भ गेल अछि आ अहू बेर गप्पू **बाबूक** इएह स्थिति छनि मुदा टांग ल क लचार छथि। हुनकर टांग कोना टूटलनि, एकर पांछा सेहो एकटा खिस्सा छै। इएह बसंत पंचमीक दू दिनक बाद रिटायर भ क गाम आएल रहथि। नोकरीक अंतिम पांच सालमे पारिवारिक झमेला किछु बेसिये बढ़ि गेल रहनि। से ऐ पांच साल ओ गाम नै आबि सकला। पांच साल बाद, जहन रिटायर केलाक बाद गाम एला त देखलनि जे, ने ओ रामा अछि आ ने ओ खटोला! गामक कीर्तन मंडलीक सदस्य छलाह मुदा पुरैनियां प्रवासक कारणें कीर्तन मंडलीमे सक्रियता नहिञे जकां रहनि। बसंत पंचमीक बाद जहन गाम आबथि त **जेना** भूत सवार भ जाइ छलनि। जोगीरा आ बिरहाक तैयारी शुरू भ जाइ छल। कतेक बेर जहन ओ गाम अबथि त ढोल छराओल जाय। रिटायरमेंटक बाद जहन गाम स्थायी रूपसं आबि गेलाह त मोन बनौने रहथि जे एकटा हरमुनियां कीनिक कीर्तन मंडलीकें दिऐ। मुदा गाम एलाक बाद देखैत छथि कि जे गाम मे त जोगीरा, **फागु** आ बिरहा गबै बला लोके नै अछि। हरखू यादव लमसम पचासक उमेरमे परदेस ध लेने छल। पैंसठ वर्षक उमेरमे भरत झा स्वर्गवासी भ गेल रहथि। टुनमुन, मुनमुन आ लखना सभ सेहो परदेस ध लेने रहै। ढोलक ककरा लग छै आ झालि ककरा लग सेहो भांज लागब मोसकिल छलै। कतेको जगह खोज - पुछारि केलाक बाद लखनाक स्त्री कहलकनि जे ढोल आ झालि हुनका लग राखल छै। मुदा ई की! ढोल त पानिमे भीजिक बेकार भ गेल रहै। वैह ढोलकें ठीक करेबा लेल मधुबनी गेल रहथि कि टेंपूसं उतरबा काल पैर हूसि गेलनि। दहिना पैर टूटि गेल रहनि। डाक्टर कहलकनि आपरेशन करब पड़त। मुदा प्लास्टर करबाकें गाम आबि गेलाह। घर आबिते गप्पू दादी कहने रहथिन - आर करू बुढ़ारीमे घीढारी!

बूढ़ीक ई गप्प सूनिक दर्दसं फिरिशान भेल गप्पू दासक चेहरा पर सेहो मुस्कान नाचि उठल रहनि। टूटा लाइन जोड़िक कहने रहथि - **होरीमे** की बुढ़बा, की जवान! होइछै सभ समान। बुढबाके चढ़ै छै **जुआनी** बुढ़िया होइ छै दिवानी **जोगीरा** स..र...र..र...

ओइ बेरक बाद सभ होलीमे गप्पू दासक मोन मसुआएले रहि जाइ छनि। प्लास्टर केलाक बादो दहिना टांग अबाहे रहि गेलनि। एकटा मूठबला छड़ीक सहारे दलान - दरबज्जा कहुना क लैत छथि, सएह ... चौकी पर पड़ल - पड़ल अपन अतीतमे ओझराएल रहैत छथि। एह! पहिने की **होरी** होइ छल! अंगनामे माउस भुजाइत रहैत छल आ दरबज्जा पर ताड़ीक घैल राखल रहैत छल। लोक आबि रहल-ए। ताड़ी पीबि रहल-ए आ गाबि रहल-ए जोगीरा स र .. र र र...

ओइ साल गप्पू दासक बड़की बेटी सुलेखिया भांग पीबि लेने छलि। भरत झाक बेटी सुनितिया कहांदन कहने रहै जे भांग पीबिक लोक कहांदन नीक बनि जाइ छै। भरत झाक घरमे कुंडी - सोंटा राखल रहैत छलनि। सुनितिया कहने रहै जे बाबू भांग पीलाक बाद एकदम गाय बनि जाइ छै। जएह कहू तहीमे हं कहि देलक। सुनितियाकें जहन कोनो बात मनेबाक रहै त सांझक प्रतीक्षा करैत छल। से ओइ दिन सुनितियाकें कहला पर सुलेखिया भांग पीबि लेने छल। तहिया गप्पू दासक माय अर्थात सुलेखियाक दादी जीबिते रहथिन। बूढ़ी वैष्णव - बेरागी छली से **होरीक** दिन हुनका लेल आलू - परोरक तरकारी सुलेखियाकें बनेबाक रहै। चूल्हा पर माउस रन्हा रहल छलै। घरमे स्टोव रहै। सुलेखिया स्टोव पर आलू - परोरक तरकारी चढ़ा देलक। लार - चार करैत रहल। लगभग घंटा भरिक बाद दादी कहलखिन की भेलौ गे सुलेखिया। सुलेखिया कहलक इएह होइछै दादी। दादी दस - पंद्रह मिनटक बाद फेर पूछलखिन - भेलौ गे? ई कहैत दादी घरमे एली - हे गै धोंछिया! स्टोव पजारलही नहिञे आ लार -चार करै छही। सुलेखियाक माथ पर जना भांग चढ़ि गेल रहै। ओ झटसं उठल आ भरि बाकुट अबीर दादीक मुंहमे लगाक नाच लागल - जोगीरा सर... र र र ....

जहन पुरनका गप्प मोन पड़ै छनि त गप्पू दासक मोन कछमछा उठै छनि। केहन जमाना छलै आ केहन जमाना आबि गेलै। सबहक घर नीक नीकुत बनै मुदा सभ दोसरेक घरमे पेट भरि लै छल। गप्पू दासक सेहो इएह हाल रहनि। भोरे चलि जाइथ नित्यानंद झा ओत। हुनका ओत जलपान केलाक बाद नित्यानंद बाबूक संगे निकलि पड़थि। अपना ओत आबथि। ताबत धरि ताड़ीक घैल दरबज्जा पर सुगन महतो राखि देने रहैत छल। नित्यानंद बाबू सोइत छलाह। हुनका ओत दारू - ताड़ी वर्जित रहैत छल। मुदा नित्या बाबू गप्पू दासक संगत मे ताड़ीक स्वाद **चिख** लेने रहथि आ नव - नव **पियांक** बनि गेल रहथि। ओइबेर त हद क देने रहथि नित्या बाबू। गप्पू दासक दरबज्जा पर आठ बजे

जे ताड़ी पीबा लेल बैसला त बारह बजे दुपहर धरि ताड़ी पिबैत रहला। दूटा घैला खतम भ गेलै त झूमैत - झामैत नित्या बाबू एत सं विदा भेलाह। बाटेमे मंडलजीक घर रहनि। मंडलजीक दरबज्जा पर सेहो ताड़ीक घैल संगे जमघट लागल छल। ओना त नित्या बाबू झूमैत - झामैत आगू बढ़ल जा रहल छलाह मुदा मंडलजीक नजरि हुनका पर पड़ि गेलनि। अबाज देलखिन - की यौ नित्या बाबू? कत से अबै छी?

- आर कत सं! गप्पू भाइक ओत सं अबै छी!

- हं, हं! किएक ने। अहांके त खाली केथबाके ताड़ी नीक लगैए! धनुकबाक ताड़ी अहां किएक पीब!

मंडलजीक व्यंग्य वाणसं नित्या बाबू ओझरा गेला। कहलनि - से नै कहू, ताड़ी त ने केथबाके होइ छै आ ने धनुकबाके। ताड़ी त पसिबाके होइछै यौ मंडलजी!

आ फेर नित्या बाबू मंडजीक दरबज्जा पर बैस रहला। दू - तीन घंटा फेर पियांकी चलैत रहलै। सांझ होम लगलै त नित्या बाबू तलमलाइत उठला आ फेर कत चलि गेला से ककरो ठेकान नै रहलै। सांझ खन रमेश झाक दरबज्जा पर जोगीरा चलि रहल छलै तखने बिहरिया आबिक कहलक जे नित्या बाबूक लहास खरहोरिमे पड़ल छनि। रंग मे भंग भ गेलै। लोक हाकरोस करैत खरहोरि दिस दौड़ल। नित्याबाबूकें लादिक दरबज्जा पर आनल गेल। अंतिम क्रिया कर्मक तैयारी होम लागल। ठठरी बनेबाक लेल बांस कटा गेल। ठठरी बनि रहल छल कि तखने नित्या बाबू फुरफुराक उठला - की यौ अहां सभगोटे ठीक छी ने! की सभ गोटे पर भांग चढ़ि गेल अछि?

नित्या बाबूकें देखि क सबहक आंखि जेना आश्चर्यसं फाटि गेल होइ। बिहरिया त कहि उठलै - ई नित्या बाबू छियौ आ कि नित्या बाबूक भूत!

लोक सभ ठहक्का लगब लागल। फेर शुरू भ' गेलै जोगीरा सर... र..र... र...

गप्पू दासकें मोन छनि। बसंत पंचमीक बाद ओ सभ फिरिशान भ जाइत छलाह। महादेवक मंदिर मे बसंत पंचमीये सं कार्यक्रम शुरू भ जाइत छलै। सांझमे मंडलीक सदस्य सभ ढोलक झालि ल क मंदिर मे उपस्थित भ जाइत छल आ रातिमे लगभग दस बजे धरि होरी, जोगीरा - बिरहा चलैत रहैत छल। कोनो साल कोनो सदस्य अनुपस्थित भ गेल त चिंता बढ़ि जाइत छलनि। की कहत आन गामक लोक? एकरा गाममे एकटा जोगिरा - बिरहा गाब बला लोक तक नै छै! एहन स्थितिमे गामक नव लोक सभकें जोड़ल जाइत छल। ओकरा सभकें ट्रेंड कयल जाइत छल आ फेर होरीमे जमि जाइत छलै जोगीरा।

आब कोन गामक लोक दूसत। आब पहिनेबला बात - व्यवस्था कोन गाममे रहि गेलैए कोनो गाममे नै। आब त सभ गामक वैह हाल अछि। सबहक अपन-अपन राग छै आ सभ इएह रागमे बेहाल रहैए। ककरो दोसरक रागसं कहां कोनो मतलब छै। राग - बिराग केत गप्पे छोड़ू। आब त रंग - अबीरसं सेहो लोक सभकें दिक्कत होम लागल छै। काल्हिएक त गप्प छै। पप्पू लाल कहैत छल। बाबा रंग - अबीरमे सेहो किदन मिलल रहै छै। लोकक मुंह - कानमे फोंका - फुंसी निकल लगै छै। पप्पूक गप्प पर गप्पू दास कहने रहथि - आइ - काल्हिक लोकक चमड़ीयो तन्नूक होइ छै। एसी आ पंखाक हवा लोक सभकें सुकुमार बना देने छै। हमरो जमानामे त होली होइ छलै। हमरो दूटा भौजी छलीह - लाल भौजी आ नीका भौजी! हरियरका रंगमे केराक रस फेंटिक रंग लगा दिऐन। तीन - चारि दिन धरि भूत बनल रहैत छलीह। फरक केनाइ मोसकिल रहै छल जे के नीका भौजी छथि आ के लाल भौजी!

पप्पूसं गप्प करैत - करैत गप्पू दास फेर अतीतमे ओझरा गेल रहथि - एहन जमाना नै छलै ओ। होरीमे लोक रंगकें सहर्ष अंग लगबै छल। आब त रंग लगेबासं पहिने लोक ई सोच - विचार कर लगैए जे हिनका ई नीक लगतनि की अधलाह।

पहिने ताड़ी आ भांगक चलन छलै। मुदा एमहर आबि क दारूक चलन बढ़लै। पहिने गाम गाममे दारूक दोकान खूजल। ताड़ी दोकानक जमघट दारू दोकान पर लाग लागल। ओइ साल त होलीमे गजब भ गेल रहै। रमेसरा एते दारू पीलक जे ओकर प्राण चलि गेलै। आइ धरि गाममे कहियो रंगमे भंग नै भेल रहै, से भ गेलै। मुदा बिहारमे त आब शराबबंदी छै। आ ई शराबबंदी एतेक सफल छै जे अहांकें सांझक बाद रस्ता पर चलनिहार बेसी गोटेक पैर लड़खड़ाइत भेटत। ताड़ीक बिक्री कमि गेलै त लोक घरे - घरे दारु बनाएब शुरू क' देलक-ए। आब गाममे एकर निर्माण कुटीर उद्योग जकां भ रहल अछि। लोक सभ दारू पीअत आ सूति रहत। आब के गाएत बिरहा आ के गाएत जोगीरा। सभ अपनहिमे मस्त। गप्पू दासक गप्प सूनिक पप्पू बाजल - से की कहै छी बाबा! आब कोनो पहिने बला बात छै। आब त सबहक मोबाइलमे छै जोगीरा आ बिरहा। लिअ सुनू - मिथिलामे राम खेलथि होरी, हो मिथिलामे....

ई गीत सुनिते जेना गप्पू दास झूमि उठल रहथि। सोझां गप्पू दादी ठाढ़ छलखिन। गप्पू दादीकें देखिते हुनकर मुंहसं निकललनि - परदेसिया लए धोतिया रंगाबे गोरिया, परदेसिया...

- धौर, ठीके अहां बुढारीमे घीढारी करै छी।

गप्पू दादी मुंह बिझकौलनि।

- यै, होलीमे त बुढबो जबान भ' जाइछै ने! अहूं कोनो कम सुन्नरि नै ने छी!

गप्पू दादी लजा गेली। पप्पू सेहो मूड़ि झुका क हंसि रहल छल। मोबाइल मे जोगीरा बाजि रहल छलै।

मोबाइल - 7462889335

फगुआ मे सभ सं फराक

बाबाधामक हरि-हर मिलन

• **कुमार राहुल** *(कवि-पत्रकार)*

एक दिस बाबामंदिर, दोसर दिस ह्यदयापीठ (श्मशान, जतय सतीक ह्यदय अस्थि खसल छल) आ बीच मे रंग-अबीर सं सराबोर देवघरिया मानुष। कंठ सं निकसैत अलमस्त संगीत- मसाने मे खेले होरी दिगंबर, मसाने मे खेले होरी... ठीके मिथिलाक आन क्षेत्रक होरी सं अलग अछि देवघरिया फाग. अबीरक बेसी प्रयोग आ शिव-कृष्णक भक्ति मे डूबल देवघरिया लोक एक मास तक फगुआ खेलाइत छथि. ताहू मे मुख्य होरीक दोसर दिन तं आरो बेसी। एक मास तक प्रतिदिन सांझ मे एखनहुं फाग गएबाक परंपरा बचल छैक. हरि-हर मिलन तं केवल एत्तै टा होइत छै।

कविकोकिल महाकवि विद्यापति, लोककवि आ प्रख्यात सरदार पंडा भवप्रीता नंद ओझा, जनकवि पंकज आदिक रचना सं चुनल-बीछल भक्ति गीत- बाबा खेले होरी रे..., वृंदा बोन में भगवान गोपी संग में... आदि होरी गीतक स्वर रागिनी केकरो मोहि सकैत छै। देवघरिया संस्कृति मे संगीत आ ताहू मे भवप्रीतानंदक भक्ति गीत चूरा-पेड़ा जकां मिझरायल अछि।

भवप्रीतानंदक गीत मे होरीक सुंदर वर्णन छै, आ इ लोक कंठ मे एखनो बसल अछि। सरदार पंडा अपन कल्पना सं कृष्णक वृंदावन मे गोपीक संग होरी, बाबा बैद्यनाथक होली आदि लोकभाषा में गीत लिखने छथि, जेकरा आइयो देवघर मे आमजन मनोयोग पूर्वक गबैत अछि।

फगुआ (होरी) ओना त मिथिलाक सभ क्षेत्र मे अपन-अपन हिसाबें मनाओल जाइछ, मुदा देवघर (बाबाधाम)क फगुआ सभ सं अलग तरहें अनाओल जाइछ। झारखंडक देवघर मे स्थित द्वादश ज्योतिर्लिंग मे सर्वश्रेष्ठ कामनालिंग बाबा बैद्यनाथ धामक होरी सभ तरहें अलग अछि। इ एक मात्र एहन ज्योतिर्लिंग अछि जतय होरीक दिन हरि केर हर सं मिलन होइत अछि। चैत्र कृष्ण प्रतिपदा पर आयोजित होइ बला एहि मिलन समारोहक बादे भक्त भगवान शिव पर अबीर चढ़बैत छथि।

ओना बाबाधाम मे फगुआ वसंत पंचमी सं शुरू मानल जाइछ। वसंत पंचमी पर बाबा मंदिर में भक्त उमड़ि पड़ैत छथि। खास बात इ जे खाली मिथिलाक भक्ते बाबा कें तिलक चढ़बैत छथि। ऐ दिन पूरा बाबा मंदिर परिसर भक्त सं पटल रहैत अछि। हर हर महादेव, हर हो भोला, जय शिव स मंदिर गूंजायमान रहैछ। भक्त बाबा पर जल, अबीर, आमक मज्जर, धान के शीश चढ़ा कें मंगल कामना करैत छथि। बाबा कें तिलक चढ़ेबाक लेल माता पार्वतीक नैहर सं लोक अबैत छथि। ऐ मे मिथिलाक के मुजफ्फरपुर, दरभंगा, पूर्णिया, कटिहार, किशनगंज, अररिया, मधुबनी, सहरसा, मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर, सीतामढ़ी, मधेपुरा, मुंगेर, सुपौल आ नेपाल के तराई क्षेत्र मुख्य रूप सं शामिल अछि।

सभ भक्त बाबाक पूजा केलाक बाद भैरवक पूजा करैत छथि। लड्डू भोग लगाओल जाइछ। एकर बाद होरी खेल शुरू भ जाइछ। सभ आपस में एक-दोसर कें अबीर-गुलाल लगा कें बाबाक तिलकोत्सवक आनन्द मनबैत अछि। एक क्रम मे मिथिलाक भक्तक द्वारा बाबा पर शुद्ध घी अर्पित करबाक परंपरा अछि। सभ भक्त अपन-अपन घर मे बाबा कें चढ़ेबाक लेल शुद्ध घी जमा करैत अछि। एकरा पंचमीक दिन बाबा पर अर्पित करैत अछि। बाबा मंदिर इस्टेटक दिस सं एहि शुद्ध घी सं बाबाक सालोंभरि दीप जराओल जाइत अछि। मिथिलाक भक्त, बाबा पर चढ़ेबाक लेल दू डिब्बा गंगाजल, धानक शीश, शुद्ध घी, भांग आदि संग लेने अबैत छथि। एकर विशेषता यैह छैक जे वसंत पंचमी दिन सं गाम-घर मे एकर बाद सांझ कें फाग-गायन शुरू भ जाइत छै आ इ होरी केवल अबीर-गुलाल सं खेलाएल जाइत अछि. एकरा सूखा होली सेहो कहि सकैत छियैक। ऐ मे पांडा समाजक लोक सेहो शामिल होइत छथि।



बाबामंदिरक गर्भगृह मे हरि-हर मिलनक अलौकिक दृश्य

परंपराक अनुसार चैत्र कृष्ण प्रतिपदाक दिन एतय भगवान श्रीविष्णु (हरि) स्वयं आबि कें भगवान शिव (हर) क संग होरी खेलाइत छथि। इ एक मात्र एहन ज्योतिर्लिंग थिक, जतय होरीक दिन हरि क हर सं मिलन होइत अछि। ऐ मिलन समारोहक बादे भक्त भगवान शिव पर अबीर चढ़बैत छथि। ऐ मिलनक बाद बाबानगरी में होरी खेलब शुरू भ' जाइछ।

परंपराक अनुसार, मंदिर परिसर स्थित राधा-कृष्ण मंदिर सं विष्णुक अवतार श्रीकृष्णक प्रतिमा कें उत्साहक संग बाबा बैद्यनाथ मंदिरक गर्भगृह मे ल जा कें बाबा बैद्यनाथक शिवलिंगक ऊपर राखल जाइत अछि। ऐ तरहें हरिक हर के संगे मिलन कराओल जाइत अछि। ऐ अद्भुत होली मिलन कें देखबाक लेल हजारोंक संख्या मे श्रद्धालु प्रत्येक साल देवघर अबैत छथि। संगहिं हरि आ हर केर मिलनक बाद एक-दोसर कें अबीर लगा कें होरी खेलाइत छथि।

हरि आ हर क मिलनक संबंध देवघरक शिवलिंगक कथा सं जुड़ल मानल जाइत अछि। कथाक अनुसार, रावण स्वयं भगवान शिव सं वरदान मे शिवलिंग लए कें लंका जा रहल छल। बाट मे जखन रावण कें लघुशंका लगलैक, त ओ शिवलिंग कें ब्राह्मणक वेष मे आयल भगवान विष्णु (हरि) कें थमा देल। भगवान विष्णु ओइ शिवलिंग कें थोड़क काल बाद ओतहि जमीन पर राखि देल। शिवलिंग दैत काल शिवजी रावण सं कहने छलाह जे शिवलिंग जतय कतौ एक बेर भूमि पर राखि देल जायत, ओ ओतहि स्थापित भ'जायत। ऐ तरहें शिवलिंग कें रावण अपन संग लंका नहि लए जा सकल। हर (शिव) कें शिवलिंगक देवघर में स्थापित होइ मे हरिक संग हेबाक कारणें प्रत्येक साल हरि आ हरक मिलन देवघर में कराओल जाइत अछि। बाबानगरी मे होली पर्व मनेबाक अलग परंपरा अछि। खास बात इ जे एतए दू दिन तक रंग खेलायल जाइत अछि। बाबानगरी मे होरी सं अधिक बसियौरा होरी खेलायल जाइत अछि। एतुक्का लोक कहैत छथि जे रंग खेलेबाक असली मजा दोसरे दिन अबैत छै। भवप्रीतानंद ओझाक किछु गीत जे देवघरिया जनमानस मे एखनहुं रचल-बसल अछि-



बाबामंदिर प्रांगण मे भक्तक भीड़

*

भाँगें आँखि ढुलू-ढुलू, भाँगें आँखि ढुलू-ढुलू
भाँगें आँखि ढुलू-ढुलू
जटाँ बीचें गंगा कुलू-कुलू
भाँगें आँखि ढुलू-ढुलू।
ईश्वर शिव सुंदर, हेम गौर कलेवर,
भाँगें आँखि ढुलू-ढुलू।
देहा पें सँपा छुलू-मुलू
भाँगें आँखि ढुलू-ढुलू।
कपारें किशोर चाँद, हाँड़ाँ बाघ-छाल बाँध,
भाँगें आँखि ढुलू-ढुलू।
कान में धथूर झुलू-झुलू
भाँगें आँखि ढुलू-ढुलू।
रमत वृषभ पे, कारे गौरी गणेशर
भाँगें आँखि ढुलू-ढुलू।
नाचे भूता हाँसे खुलू-खुलू
भाँगें आँखि ढुलू-ढुलू।
भवप्रीताक निवेदन, अन्तें दीहा श्री चरण,
जमें ताकी रहे मुलू-मुलू
भाँगें आँखि ढुलू-ढुलू।

*

देखु जोगिया के रंग, देखु जोगिया के रंग
तपसी के भेषधारी नारी अरधंग।
विहसित पंचमुख, आनन्द उमंग
कपारें अगिनि जटां गंग तरंग।
हाथें अभयवर, कुठार कुरंग
शीश पे मुकुट जे विकट भुजंग।
गौर वरण तीन नयन सुढंग
भाले सुधाकर, गलें गरल प्रसंग।
अनका के देथिन अन्न वसन सुरंग
अपना ले भांग गोला, रहथि उलंग।
भवप्रीताक देव हर चरण सुभंग
देहा छाड़िक उड़ेबेरी पराण विहंग।

*

भजत रह हर पद कमल
भगत-जन-नरकशमन, करण मन सफल
रजत वरण, पनच वदन, असम नयन मदन
दहन दमन शमन बल!
चरम वसन, गरल-अशन, सदन-वर-अचल
तन पेकत उरग चपल, झल-मल-शव भसम धवल
सजल जट सकल।
वलद ऊपर, रमत नगर, नमत अमर दल
भवस कहत 'भव' ई वचन, जनम-परण-करह-हरण
वरह पट अटल
तवऊ भवन गमन करण करह पथ सरल।

*

देव देवी हरषित नाचे अपसरिया
बरसाबे, सभीं फुलवा के झरिया
कि बरसाबे
ब्रजपुरें गोप-गोपी आनन्दें भरिया
दही घोरी, सभीं खेले पिचकरिया
कि दही घोरी
दही सें पिछरी भेल, गोकुल नगरिया
दौड़ैतें खसै कते जे सुन्दरिया
कि दौड़बैतें
भवप्रीता कहै हरि, ने जाय्ह बिसरिया
भौव सागर तीरें, दिहा पद-तरिया
कि भौव सागर।

संपर्क:-9431778575





पूर्वोत्तर भारत मे होली

• ललित कुमार झा *(साहित्यकार)*

असम मे बहुत रास लोक होली कें मैथिलीए जकाँ फगुआ कहैत अछि। एहि ठाम फगुआ श्रीमंत शंकरदेव द्वारा स्थापित सत्र (नाम घर) सँ जुड़ल अछि।सत्र सभमे फगुआ मे दोलयात्रा निकालल जाइत छैक। श्रीमंत शंकरदेव एकशरणिया मतक प्रवर्तक छलाह। एहि मतमे एक मात्र भगवान, श्रीकृष्ण कें मानल जाइत अछि। होली दिन श्री कृष्ण केर दोल यात्रा (डोला यात्रा) होइत छन्हि। श्री कृष्ण केर प्रतिमा डोला मे विराजमान क सत्रक आसपास घुमाओल जाइत छैक।गामक लोक सभ श्रीकृष्ण भक्ति मे सराबोर फगुआ गबैत यात्रा करैत अछि। ओहि टोली पर आ डोला पर ग्रामीण लोकनि लाल रंग आ अबीर समर्पित क आनन्द मनबैत अछि।

असमक बरपेटा सत्र आ माजुली सत्रक होरी उत्सव बेसी प्रसिद्ध अछि। देश विदेश सँ पर्यटक लोकनि एहि अवसर पर अबैत छथि। गुवाहाटी मे दोलगोविंद आ कामाख्या मंदिर मे सेहो नयनाभिराम होरीक दर्शन होइत अछि।माता कामाख्याक मंदिर प्रांगण मे भगवान कृष्ण केर दोल यात्रा संग धूमधाम सँ फगुआ मनाओल आ खेलल जाइत अछि। एहि मे एक टा विशेष बात देखबा मे अबैछ जे रंगक प्रयोग मे अलता रंगक लाल रंगक प्रधानता रहैत छै। दोल यात्रा मे चारि पाँच बेर माताक मंदिरक परिक्रमा कएल जाइत छैक। परिक्रमा काल ऊपर सीढ़ी मे ठाढ पंडा ललना सभ, रंग आ अबीरक फुहारा स स्वागत करैत अछि। एक टा विशेष बात ई देखबा मे आओल जे एहि ठाम गाओल जाय वला फगुआ वर्तमान असमीया भाषा नहिं होइछ।ई भाषा प्राचीन मैथिली आ ब्रजबुली आदि केर मिश्रण होइछ ,जे शोधक विषय वस्तु थिक। शक्ति पीठ मे वैष्णव दोल यात्रा भक्ति मतक एक टा विलक्षण समन्वय स्थापित करैत अछि। विभिन्न ठाम स्थापित शिवमन्दिर मे सेहो फगुआ बड़ सोहनगर ढ़ंग सँ मनाओल जाइत अछि। ई भेल असमक मुख्य आबादी अहोम लोकनिक फगुआ।

एकर अलावे असम आ संपूर्ण पूर्वोत्तर मे शताधिक जनजाति लोकनि रहैत छथि जे प्रायः उत्सव प्रेमी होइत छथि। बसंतोत्सव प्रायः सभ जनजाति मे विभिन्न नाम सँ मनाओल जाइत अछि। किछु प्रकृति प्रेमी जनजाति द्वारा फूल आ पात सँ होली खेलबाक जानकारी सेहो भेटैत अछि।

मिजोरम मे पर्व कें 'कूत' कहल जाइत छैक आ नृत्य लाम कहबैत छैक। एहि ठाम बसंतोत्सव कें 'चौचर कूत' कहल जाइत छैक आ मनाओल जाइत छैक, जाहि मे एक विशेष प्रकारक नृत्य केर आयोजन कयल जाइत छैक। मणिपुर मे ई उत्सव याओसांग नाम सँ गीत-नृत्य-रंग संग धूमधाम सँ मनाओल जाइत अछि। एहि तरहें अरुणाचल प्रदेश नगालैंड मेघालय त्रिपुरा केर आदिवासी लोकनि विभिन्न नामसँ बसंतोत्सव मनबैत अछि।

एकर अलावे भारतक विभिन्न ठाम सँ आयल लोक सभ अपन अपन मूल स्थानक परंपरा अनुसार होली मनबैत अछि। मैथिल राजस्थानी भोजपुरी गुजराती पंजाबी नेपाली बंगाली आदि लोक संग असमीया लोक एहि लोक उत्सव मे एकाकार भेल सन परिलक्षित होइत अछि।

पूर्वोत्तर भारत मे ई पर्व, भक्ति, लोक संस्कृति, प्रर्यावरण, कृषि आ जनजीवनक रंगीन कैनवासक अतुल्य जिवंत छवि जकाँ बुझि पड़ैत छै।

सम्पर्क : 98640 65553



फगुआ उपाधि

वैधानिक सूचनाः- फगुआक रंग मे अतिरंजित मोन स प्रदत्त उपाधि स आनन्दित होइ त उत्तम, नइ होइ त कोनो बात नइ। अधलाह माननाइ अनिवार्यतः वर्जित अइ।

भीमनाथ झा - ज्ञानक गदाधारी
योगानन्द झा - सोनाक साइकिल
सुकान्त सोम - मँगनीमे के लीखत?
मुरलीधर झा - तमाकू अछि?
नीता झा - साँझ भ गेलै
चन्द्रमणि - हम ककरासँ कम
चन्द्रेश - स्मारिका छपाएब?
बैद्यनाथ चौधरी बैजू - संविधान मे मैथिली
दमन कुमार झा - आजीवन बालक
अशोक कुमार मेहता - आब दूरस्थ
कर्नल मायानाथ झा - आब अनुवाद
नारायण झा - ट्युशनसँ लाभ लिअ
सुरेश पासवान - एखन समय छै
अभिलाषा झा - आब नहि आशा
आशा मिश्र - लेखनसँ उचाट
रेवती मिश्र - धन्य पिताजी
बीणा ठाकुर - ठकुराइन
निरजा रेणु - आबो लिखू?
प्रो.अमरनाथ झा - पोथी किनबै?
प्रो.विश्वनाथ झा - अखन व्यस्त छी
विभूति आनन्द - प्रो सेल्फी
हरिश्चन्द्र हरित - कलममे तरूआरि
अमलेन्दु शेखर पाठक - नहि बूझल अछि
प्रेम मोहन मिश्र - रासायनिक विस्फोट
चन्द्र मोहन पड़वा - खोपक खोजमे
फूल चन्द्र झा प्रवीण - पलखतिए नहि।
अशोक ठाकुर - छोड़ल आस
चन्द्रदेव झा - कविताामे दम चाही
भवेशचन्द्र झा शिवाशुं - हमरो मोजर हो
मणिकान्त झा - गीत लेब की कविता
विद्याधर मिश्र - संयोगक सुतार
जय प्रकाश झा जनक - मंचेपर
धीरेन्द्र नाथ मिश्र - फेर.......
विष्णुकान्त झा - आब फैलसँ लिखबै
दिलीप कुमार झा लूटन - आब अपने ओंघाइत छी
लक्ष्मी सिंह ठाकुर - हिन्दीयोमे लिखैत छी
मंजर सुलेमान - मोजरे खतम
शंकरदेव झा - दुनियाँ मूर्ख छै
गुफरान जिलानी - एखन बहुत उम्मीद छै
सत्येन्द्र कुमार झा - रिहल्सलमे छी
बन्सीधर झा - हमरासँ सकब?
रमेश - सब तरहें तैयार
शिवाकान्त पाठक -वानप्रस्थमे
रमाकान्त राय रमा - जी जानसँ



अमित कुमार मिश्र - बाल वा युवा जे मानी
सुमित मिश्र गुँजन - हमरो सुनियौ
सुनीता झा - बात बातमे किताब
शिव शंकर श्रीनिवास - सबटा गुणे
शैलेन्द्र आनन्द - आब मेल करा दिअ
ईशनाथ झा - हमरासँ फराके रहू
कवि आनन्द कुमार झा - मौँछ असली छिऐ
नाटककार आनन्द कुमार झा - खाली मलंगिएटा?

अजित आजाद - ओ चाही त छपाउ
कमलेश प्रेमेन्द्र - हम आइ लिखबै
दिलीप कुमार झा - हम अपने बहुत छी
विभा कुमारी - एखन त शूरूए केलियइए
चण्डेश्वर खाँ - हमहूँ छी
मैथिल प्रशान्त - कविताामे दम छै
ऋषी वशिष्ठ - शूरूएसँ जुआएल
बीरेन्द्र कुमार झा - पोथीक टाल लगा देलिऐ
प्रो.नबोनाथ झा - आब लघुकथा लीखब
सतीश साजन - जातिवाद मुर्दाबाद
रेवती रमण झा - सुग्गा तकैत छी
महेन्द्र नारायण राम - कलममे छै दम
जगदीश मंडल - छौड़ासब फँसा देलक
सदरे आलम गौहर - हमरा गजले पसिन अछि
अंशुमान सत्यकेतु - चिन्हलहुँ ने?
शुभेन्दू शेखर - ताबत पढ़िते छी
मनोज मनुज - से कोना हेतै?
अद्यानाथ झा - कखनोक लिखा जाइत छै
रानी झा - तखन कविते सुनू
प्रितम निषाद - आन्दोलन करबै?
कमलाकान्त झा - आस नहि टुटल अछि
दीप नारायण विद्यार्थी - हमहुँ सम्पादक।
उदय चन्द्र झा बिनोद - मोन नहि लगैए
नारायणजी - अन्तर्राष्ट्रीय कविता
प्रफुल्ल कोलख्यान - हमर लेख बुझबै?
ज्ञानवर्धन कंठ - लघुकथा आकंठ
बैकुण्ठ झा - गजले ठीक रहतै

धीरेन्द्र प्रेमर्षि - हलो हम
रमेश रंजन - कथासँ नाटक तक
राम भरोस कापड़ि भ्रमर - आब काठमाण्डु
विकास वत्सनाभ - हम अन्तर्राष्ट्रीय
विभा झा - हमरो संग्रह छपतै?

कथाकार अशोक - प्रयास जारी छै
रमानन्द झा रमण - अनेरो ओतेक लिखलहुँ
श्याम दरिहरे - सटका लाउ की?

पन्ना झा - अनेरो किए लिखू?
प्रेमलता मिश्र प्रेम -आब सिनेमा
तारानन्द वियोगी - घुमा फिराक यात्री।
गंगानाथ झा गंगेश - कहब त लीख देब।
किशोर केशव - हमर नाटक
प्रो.बीरेन्द्र कुमार झा - हम अपने बड बुधियार छी
छात्रानन्द सिंह झा - एक समय हमरो रहै
अरविन्द अक्कू - नाटकक मोजरे नहि छै
पण्डित गोविन्द झा - शतकीय सत्र
गुँजनश्री - सुग्गासँ गेल्ह बुधियार
अमित पाठक - हॉलमार्क भेट गेल
मन्त्रेश्वर झा - सब शौख पूरा भेल
नरेन्द्र झा - मैथिलीक मनमोहन सिंह
घनश्याम घनेरो - सबटा अनेरो
ईन्दिरा झा - गछने त छथि
मधुकान्त झा - हँ हम काँग्रेसी
शरदेन्दू चौधरी - पोथी कहाँ बिकाइत छै?
शिव कुमार ठाकुर - एखन पाइ कहाँ अछि?
कुणाल - प्रयोग मे नाटक।
उषा किरण खान - ज्ञानपीठ कोना भेटैत छै?

रूपेश त्योंथ - सब किछु वेभपर
विनय भूषण ठाकुर - कतौ पड़वा भेटल?
अनमोल झा - लघुकथाक दशरथ माँझी
बीरेन्द्र मल्लिक - बाय बाय कोलकाता।
मिथिलेश कुमार झा - लिखबै त छापत के?
विद्यानन्द झा - हमरो चर्च हो
अमोद झा - कविताक प्रशंसक चाही
चन्दन कुमार झा - प्रमाणित कवि
अशोक झा -सबसँ पहिने हम
विजय इस्सर - नहि चिन्हलहुँ?
लक्ष्मण झा सागर - बुधियारक अन्त
कामेश्वर झा कमल - मोन भेल त लिखलहुँ
बालमुकुन्द - अबल दुबलपर सितुआ चोख
नचिकेता -कतेको के कएल निराश

केदार कानन - संकल्प लेने छी।
सुस्मिता पाठक - उपराग नहि
महेन्द्र - बिसरब जुनि
सुभाष यादव - आब विदेशे रहब
कमल मोहन चुन्नू - विमर्शक माँग छै
लिलि रे - हम जिबिते छी
राम चैतन्य धीरज - अधीर कहां छी?
ललितेश मिश्र - अंग्रेजीमे एना छै
किसलय कृष्ण - कतेक डारिपर?
निक्की प्रियदर्शिनी - हमहुँ आब पढ़बैत छिऐ
सुरेन्द्र नाथ - गजले ठीक रहतै
रघुनाथ मुखिया - बिषपिपड़ी
गिरिजानन्दन सिंह - ड्योढ़ीए तक
केष्कर ठाकुर - एकान्त साधक



प्रदीप बिहारी - अपनामे व्यस्त
मेनका मल्लिक - कोना नहि मानब?
रूपम झा - पोथी छप दियौ
कीर्ति नारायण मिश्र - कीर्ति बनल रहय
कामिनी कामायनी - ओकेजनल
प्रेमकान्त चौधरी -हमरा लोके नहि अछि

राधाकृष्ण झा - जय जानकी
अशोक अबिचल - नहि कहब
रविन्द्र कुमार चौधरी - सावधान
नरेन्द्र कुमार झा - हमरा कियो नहि पूछैत अछि
सियाराम झा सरस - प्रयास जारी छै
मनीष अरविन्द - पक्का ओरियानी
हितनाथ झा - झारखण्डे भरि
विद्यानाथ झा विदित - जतबे सुतरल
उदय चन्द्र लाल दास - हमहुँ छी
बुद्धिनाथ झा - पाठकाय नमः
अर्धनारीश्वर - थाकि गलहुँ
आशीष अनचिन्हार - कनही गायके भिन्ने बथान
ई.नमोनाथ - सबटा ज्योतिष फेल
कृष्णमोहन झा मोहन - हम किछु अलग छी
प्रमोद कुमार झा - रचना नहि सृजन
अशोक पाठक स्नेही - पूर्णतया अनियमित
शिव कुमार टिल्लू - कित कित खेलाइत छी
राजा राम प्रसाद - एखन प्रजे बुझू

राजकुमार मिश्र - कहाँ किछु
विभा रानी - मर्दानी
गंगेश गुँजन - कने बेशी रिजर्भ
देव शंकर नवीन - जय राजकमल
संस्कृति मिश्रा - आब कानूनी कवियित्री
नील माधव चौधरी - बड़क छाँहमे
शोभाकान्त - बाबूक उत्तराधिकारी
नीरज कुमार झा - ककरो मोजर नहि दैत छियनि
पंकज पराशर - विदेशीमे रूचि बेशी
शेफालिका वर्मा -हमरा सब चिन्हैए
श्रीधरम - धरम त हिन्दीए
रोमिशा - के अछि हमरासन?
विजय चन्द्र झा - देशी नहि अन्तर्राष्ट्रीय
डा.कीर्तिनाथ झा - अवहेलित प्रवासी
गौरीनाथ - हमरा के सिखाओत?
विनोद कुमार झा सरकार - यौ कत गेलै संघ?
प्रकाश झा - नाटक नहि रंगकर्म
बुद्धिनाथ मिश्र - कतेक जाल फेकू
निवेदिता झा - आब त पटना तक
बैकुण्ठ झा - खन गजल खन लघुकथा
चन्द्र मोहन कर्ण - अहर्निश सेवाम हे
विनय कुमार झा - हैदराबाद आउ
मनोज शाण्डिल्य - दार्शनिक कवि
शारदा झा - पतिसँ प्रतियोगिता
मनिष झा, रायपुर - हमहुँ मैथिल छी

●*मिथिला दर्शन डेस्क*

सुचिता

●जगदीश प्रसाद मण्डल

दोसर पड़ाव

दिनक तीन बजे। विलासदेव सुति उठि क हाथ-मुँह धोइ दरबज्जापर बैसबे कएल छला कि सुखदेव लोटामे पानि, कटोरीमे पीसल भाँग नेने पहुँचलैन। कटोरीमे राखल भाँगकेँ विलासदेव अपन हाथक आँगुरक चुटकीसँ देखए लगला जे भाँगक पीसान नीक अछि कि नहि। किए तँ विलासदेवकेँ ई बुझल छैन जे भाँगक नीक पीसान तखन मानल जाइए जखन ओ पानिमे अलैग जाइए। माने ई जे भाँगक जेहेन पीसान होइए तेहेन ओइमे नशाक मात्रा ओते बेसी होइए। चुटकीसँ देखला पछाइत विलासदेव बुझि गेला जे भाँगक पीसान नीक अछि। तहीकाल विलासदेवक लंगोटिया संगी निशाकान्त सेहो पहुँचला।

निशाकान्त आ विलासदेव संगे-संग गामक स्कूलमे पढ़ने छैथ। दुनूक जन्म सुभ्यस्त परिवारमे भेने नोकरी-चाकरीक खगता नहियेँ छेलैन, तँए आगू पढ़बकेँ ओते जरूरी दुनूक पिता नहि बुझलैन। तँए आगू नहियेँ पढ़लैन। अपन जमीन-जत्थाक कागज-पत्तर देखब, महाजनीक बही-खाताक हिसाब-बारी करब, बस एतबे खगता छेलैन।

पिताक अमलदारीमे जहिना विलासदेवक तहिना निशाकान्तक परिवारमे महाजनीक कारोबार चलैत रहैन। माने रूपैओ-पैसा आ अन्नो-पानिक सूदि-सबाइ दुनू परिवारक खानदानी पेशा छल। ओना, भैयारीमे विलासदेव असगरे छैथ मुदा निशाकान्त तीन भाँइक भैयारीमे छैथ। पिताकेँ मुइला पछाइत निशाकान्तक परिवारमे सम्पैतिक बँटवारा ल क तेहेन विवाद उठल जे महाजनीक संग-संग आधासँ बेसी जमीनो मुकदमेबाजी मे चलि गेलैन। मुदा विलासदेवकेँ से नहि भेलैन। असगर भैयारी रहने दियादी विवाद नहि उठलैन। निशाकान्तकेँ देखते विलासदेव बजला- 'आउ-आउ भयार..!'

निशाकान्त बजला- 'भयार, की हाल-चाल अछि?'

विलासदेव बजला- 'हाल-चाल की रहत..! समये तेहेन दुरकाल भ गेल अछि जे सदिखन मनमे अबैए- एहेन जिनगीसँ मरबे नीक। की समय छल आ अखन की भ गेल से बुझिये ने पैब रहल छी..!'

तै बीच सुखदेवकेँ आगूमे ठाढ़ देख विलासदेव मुँह घुमा क बजला- 'बौआ, एतबे भाँगसँ काज नहि चलतह। जेते अनलह तेते आरो नेने आबह। तै बीच हम दुनू भयार गप-सप्प करै छी।'

पिताक बात सुनि सुखदेव मने-मन विचारलक जे अपना-ले जे रखने छी माने आधा पिता-ले अनने छल आ आधा अपना-ले जे रखने छल, ताबे सएह आनि क द दइ छिऐन आ ताबत पत्तीकेँ पानिमे भीजैले द देबइ। बिनु भीजल पत्तीकेँ पीसलासँ ओ रस थोड़े औत जे भीजलमे अबैए। सएह केलक।

भाँगक गोला देख विलासदेव सुखदेवकेँ कहलखिन-

'बौआ, अपने ने ओहिना भाँग खा लइ छी, मुदा जखन दरबज्जापर भयार चलि एला तखन ओहिना खाएब उचित हएत। कनेक दूधो आ चीनियोँ नेने आबह। पाकल केरा तँ घरमे नहियेँ हेतह। तइ ले अनेरे चौकपर कथीले जेबह। चीनियेँ-दूधसँ काज चला लएह।'

पिताक बात सुनि सुखदेव आँगनसँ दोसर लोटामे दूध आ चीनीक डिब्बा आनि भाँग घोड़लक। दुनू लोटा भाँग, दुनू भयार माने विलासोदेव आ निशोकान्त पीब लेलैन। भाँग पीब ढकार करैत विलासदेव बजला- 'बौआ सुखदेव, दू कप चाह नेने आबह।'

ओना, चाहक नाओं सुनि निशाकान्त कने तारतम्य करए लगला मुदा बुझल रहबे करैन जे बिनु चाह पीने थोड़ेक देरीसँ भाँग अपन रंग अनैए मुदा चाह पीने से नहि होइए, लगले रंग आबि जाइए।

सुखदेवक हाथमे चाहक कप देख विलासदेव बजला-

'बौआ, चाह रखि एकबेर आरो आँगन जा आ पानक सभ समचा आनि ऐठाम रखि दहक, भ गेलह तोहर छुट्टी। पछाइत हम दुनू भयार गप-सप्प करैत रहब।'

पानक सभ समान सुखदेव आनि पिताक आगूमे रखि अपन भाँगक ओरियानमे चलि गेल। तैबीच दू-दू घोंट चाह दुनू गोरे पीब लेलैन। भाँगक रंग कनी-कनी दुनूक मनमे मुड़ियारी दिअ लगल रहैन। जइसँ दुनूक मन थोड़ेक फुहराम सेहो हुअ लगलैन। तेसर घोंट चाह पीब विलासदेव बजला - 'भयार, की जुग-जमाना छल आ अखन की भ गेल। होइए जे एहेन जिनगीसँ मरबे नीक..!'

निशाकान्त कचहरिया लोक। माने कोट-कचहरीक आबा-जाहीसँ जहिना बजै-भुकैक ढंग बदैल गेल छैन तहिना बोली-वाणीक शिकारी सेहो बनियेँ गेल छैथ। मुदा से विलासदेव नहि छैथ। कोट-कचहरीसँ कहियो भेँट नहि भेल छैन, भेँटो केना होइतैन, ने कहियो एकोटा केसमे मुद्दई बनि ठाढ़ भेला आ ने मुद्दालह बनला। मुदा निशाकान्त अपन भैयारीक विवादमे कोट-कचहरी जाइत-अबैत पक्का खेलाड़ बनि गेल छैथ। माछ फँसबैक घुमौआ जाल जकाँ भाषाक घुमौआ जाल फेकैत निशाकान्त बजला-

'भयार, कहलो गेल अछि ने जे 'वंश बढ़ै तँ बक्खो हुअए।'

जिज्ञासा करैत विलासदेव बजला-

'से की भयार?'

विलासदेवक जिज्ञासा देख निशाकान्त बुझि गेला जे जाल सुतरल। जहिना वेपारी सभ अपन पूजी लगा पहिने गहिंकीक मन मोहैए, माने नमुना देखा-देखा कऽ पटियबैए, तहिना निशाकान्त

अपन समांग सबहक निन्दा करैत बजला- 'भयार, जहिना बेसी समांग बढ़लासँ परिवारमे अगराही लगैए, जेना हमरा परिवारमे लागल तेना तँ भगवान अहाँकेँ नहि केलैन। केतेक सुन्दर परिवार अहाँक अछि। बेटा आई.ए.एस. क लेलैन। आब की चाही। 'बढ़हि पुत्र पिताक धर्मे..।' अहीं सन-सन धरमात्माक परिवारमे ने राधारमण सन बेटाक जन्म होइए।'

ओना, राधारमणपर विलासदेवक मन भीतरसँ जरल छेलैन्हे मुदा आगूमे चाह-पानक आकर्षण अपना दिस खींच नेने छेलैन। ताबे तक दुनू गोरे आधासँ बेसी चाहो पीब नेने छला। जइसँ भाँगक लहकी, सेहो मनमे लहकए लगल छेलैन। परिवारक विचार विलासदेवक मनसँ हटि चाह दिस आबि गेल छेलैन। बजला-

'भयार, अपना सभ की चाह पीबै छी, लोककेँ पीबैत देखै छिऐ तँ मनकेँ बुझबै छी। एकबेर सासुर गेल रही। मैझला सार मलेटरीमे रहैए ओ गाम आएल छल। ओ जे चाह पीयौलक ओहन चाह ने जीवनमे कहियो पीने छेलौं आ ने भरिसक कहियो पीब।'

विलासदेवक बात सुनि निशाकान्त बजला- 'भयार, ठीके अहाँ कहै छी। ऐठाम, अपना सबहक गाम-घरमे जे चाहपत्ती अबैए ओ कोनो चाहपत्ती छी, जहिना धानमे खखरी होइए तहिना चाहक खखरी छी। एकबेर असाम गेल रही। ओइठाम बाधक-बाध चाहक खेती देखलिऐ। अपना सब जकाँ कि ओकरा सबहक बाध अछि। पहाड़ी इलाका छै। बड़का-बड़का पहाड़ो अछि आ खेतो-पथार कि अपना सभ जकाँ चौरस अछि। ओम्हर ऊपर-निच्चाँ, ले-ऊँच खेत सभ छै, जइमे चाहक खेती होइए।' निशाकान्तक बात सुनि विलासदेव जिज्ञासा करैत बजला- 'सुनै छी, ओम्हर'आसाम'मे अपना सभसँ बेसी बरखो होइए?'

विलासदेवक विचारमे रंग भरैत निशाकान्त बजला- 'से कि कोनो चोराएल बात सुनने छी। अपना सबहक के कहए जे दुनियाँमे सभसँ बेसी बरखा ओइठाम होइए।'

'बरखा' सुनि विलासदेव बजला-

'तखन तँ अपना सभसँ नमहर-नमहर धारो-धूर हएत आ पनियाह फसलो माने पनिगर जजातो अपना सभसँ बेसी होइत हएत?'

निशाकान्त बजला- 'ब्रह्मपुत्र धारक जे नाओं सुनै छिऐ ओ असामेमे ने अछि। ओही धारक कातमे एकटा पहाड़ छै जइ पहाड़पर कामरूप कामाख्याक मन्दिर अछि। ओही इलाकामे ने देशक आन इलाकाक लोककेँ गदहा-हरिन, गाए-माल बना खेतमे चरबैए।'

तै बीच दुनू गोरे चाह पीब पानो खा नेने छला। भाँगक खुमारी दुनू गोरेकेँ चढ़ि गेल छेलैन। विलासदेव बजला- 'केहेन धार अछि ब्रह्मपुत्र?'

निशाकान्त बजला- 'केहेन धार अछि ब्रह्मपुत्र..! कहै-सुनै जोकर अछि। मोटा-मोटी इएह बुझू जे अपना सभ जैठाम रहै छी, एकरा गंगा-ब्रह्मपुत्रक मैदान कहल जाइ छै। ओहन मैदान जइमे गंगा सन पवित्र आ ब्रह्मा क सन्तान सन लोक बसैए। तखने बुझि लियौ जे केहेन धार अछि। जेकरा हिमालय पहाड़ कहै छिऐ, तेकर उत्तर होइत पहाड़सँ उतरल अछि। पहाड़क काते-कात पूब मुहेँ तिब्बत होइत बहैत आगू जा दच्छिन मुहेँ भेल अछि। वएह धार ब्रह्मपुत्र छी। देखबै तँ भ्यौन-डेरौन बुझि पड़त। तेहेन भयंकर धार अछि..!'

विलासदेव बजला- 'छोड़ू धार-धूरक गप। जेतए छै से अपन जानत। ओम्हर पानो लोक खाइए आकि एक नम्बर चाहेटा पीबैए?'

निशाकान्त बजला- 'जेते पान ओ सभ खाइए तेते अपना ऐठामक लोक थोड़े खाएत। अपना ऐठाम तँ लोक गीत गबैकाल पान खाइए आ बाँकी समय दाँत टुटै दुआरे नहियेँ खाइए। बाधक-बाध सुपारी गाछ देखबै। ओम्हरेसँ अपना सभ दिस सुपारी अबैए। जेकरा असामी सुपारी कहै छिऐ।'

निशाकान्तक बात सुनैत-सुनैत विलासदेवक मन घुमिक परिवारपर चलि एलैन। परिवारपर अबिते बजला- 'भयार, अहाँ कहलौं जे हमर समांग, सभ बक्खोओसँ बदत्तर अछि तइसँ की नीक हमर बेटा'राधारमण'अछि।'

विलासदेवक बात सुनि निशाकान्त सोचलैन जे अस्सल बात आब उठल। तँए किछु आरो अपन परिवारक निन्दा किए ने करी जइसँ विलासोदेव अपन करबे करता। जखन अपन परिवारक निन्दा केनाइ शुरू करब तखन ओइ बीचमे टेँढ़-सोझ करैत चलब जइसँ गोटी नीक जकाँ बैसत...। निशाकान्त बजला- 'से की भयार?'

एक तँ विलासदेवक मन राधारमणपर जरले छेलैन तैपर भाँगक निशा सेहो नीक जकाँ चढ़ि गेलैन। बमछैत बजला-

'भयार, बेटा-बेटी केतबो पढ़ि-लिखि लिअए मुदा जँ ओ माता-पिताक विचारमे नहि रहल तखन ओकर पढ़बक कोन मोल रहल।'

विलासदेवक विचारमे बीह फाड़ैत निशाकान्त बजला-

'भयार, नहि बुझलौं अहाँक विचार। बेटा-बेटीकेँ माए-बापक विचारमे रहब, कोनो कि नव विचार छी। सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि आ आगूओ सभ दिन होइत रहत। शास्त्र-पुराण कि कोनो झूठ कहने अछि।'

निशाकान्तक विचारसँ विलासदेवक मन जेना आरो कड़ुआ गेलैन तहिना बजला- 'भयार, की कहब! राधारमण ओही दिन चित्तसँ उतैर गेल जइ दिन अपना मने विवाह क लेलक। अहीं कहूँ जे जैठाम बीस लाख रूपैयाक कारोबार छल, माने बीस लाख रूपैया दहेजमे द रहल छल। ओ परिवारकेँ घाटा लगौलक कि नहि। भैयारीमे लोकक नेत भाइये देख ने घटै छै।'

ओना, निशाकान्तकेँ बुझल छेलैन जे विलासदेव आ राधारमणक बीच वैचारिक मतभेद छैन, मुदा तइ सभसँ अनबुझ बनि निशाकान्त गोटी चालैत बजला- 'नीक जकाँ नहि बुझलौं भयार?'

विलासदेव बजला- 'राधारमण जखन आई.ए.एस.क परीछा पासो ने केने छल, तइसँ पहिलुके बात छी। ओकर विवाह करैक विचार

भेल। बुझले अछि जे तीनू भाँइक भैयारीमे ओ सभसँ जेठ अछि। अपना जीबैत जँ तीनू बेटाक विवाह-दान नइ कऽ लेब, आ अपने कोनो राजा-दैब भऽ गेल तखन तँ अनेरे ने मुइला पछातियो एकटा कलंक कपारपर चढ़ले रहत जे फल्लाँ अपना धिया-पुताक बिआहो-दान ने करा सकल। अनके भरोसे जनमौने अछि।'

सह दैत निशाकान्त बजला- 'ई की कोनो अहींटा-क संग होइत। सभकेँ एहेन कलंक लगिते छै। समाजक मुँहकेँ कियो रोकि देत।'

निशाकान्तक बात सुनि विलासदेवकेँ बुझि पड़लैन जे भयार अपन विचारानुकूल विचार द रहल छैथ। तँए आरो सभ बातकेँ किए ने बिकछा-बिकछा विचार ल ली...। विलासदेव बजला-

'भयार, की कहब! बेटाक किरदानीसँ समाज हमरापर हँसि रहल अछि मुदा अकलहूथ बेटा-ले धैनसन..!'

विलासदेव शब्दक गहींर पन्ना ताकि जहिना चौरीमे (माने गहींरगर खेतमे, जइमे पानि बसैत होइ आ ओइमे अनेरूआ केशौर फड़ैत होइ, भलेँ ओकर ऊपरका खोंइचा देखैमे कारी लगैत हुअए मुदा ललौन सेहो होइए) केशौर उखाड़ि खाइत तहिना निशाकान्त अपन पन्ना उखाड़ि बजैक मन बनौलैन मुदा तहीकाल सुनयना चाह नेने विलासदेव लग अबै छेली कि हिरणीक आँखि जकाँ निशाकान्तक आँखि चमैक उठलैन। सुनयनाकेँ देख निशाकान्त बजला- 'भयार, घरवाली देलैन तँ भगवान हमरा देलैन। जहिना सुनै छिऐ ने जे जखन समुद्र मथन भेल, जइमे विष-अमृत दुनू निकलल। परोसनिहार बारीक केहेन जे किम्हरो लपक-लप अमृत परैस देलक आ जखन सठि गेलै तखन लपक-लप विष परसलक। सहए भेलैन हमरो घरबालीकेँ बनबैकाल विधाताकेँ। गणेशजी जकाँ जखन नमहर पेट आ नमहर माथ देलखिन तखन ओही आकारक ने आँखियो दितथिन, तेहने घरवाली हमरो कपारमे लिख देलैन।'

ओना, विलासदेव भाँगक निशामे उधिया लागल छला तँए निशाकान्तक बात नीक लगै छेलैन मुदा सुनयनाक मन कड़ुआ उठलैन। कड़ुआ ई उठलैन जे ऐठाम हम दुनू परानी माने पति-पत्नी छी मुदा निशाकान्त तँ से नहि अछि। सृष्टिक जे रचना-प्रक्रिया अछि एहेन बात बजैक की प्रयोजन। बढ़ियाँ बात जे दुनूकेँ दोस्ती छैन, अपना जगहपर छैन, केना धिया-पुतामे लोकक आम-लताम चोरा क तोड़ै छला, तइसँ हमरा कोन मतलब। मतलबक बात तँ ई अछि जे बुढ़हाकेँ बेटापर तामस-पीड़ा चढ़ल छैन, तेकरा समरस करैत दुनूक बीच समभाव पैदा करैक ने छैन। सुनयना बिना किछु बजने, दुनू कप चाह रखि चोटे आँगन दिस घुमि गेली। सुनयना आँगन पहुँचलो ने छेली कि सुखदेव आएल। सुखदेवकेँ देखते विलासदेव बजला- 'भयार, गाहीक-गाही बेटा भगवान भलेँ नहि दैथ मुदा जँ एकोटा बेटा श्रवण कुमार सन भ जाए तँ बुझी जे दस हजार बेटाबला राजा सगरसँ नीक। बेटा-बेटीक जन्म माए-बाप दइए मुदा माता-पिताक मृत्युक भार तँ बेटे-बेटीक सिर पर रहैए। एक सीमानपर हमरा खुट्टा गाड़ि देलैन। हम तँ ओतबे दिनक ने जवाबदेह भेलिऐ, जाबे आँखि तकै छी। से जँ बाँहि पुरैबला बेटा भ जाए तँ वएह ने नर्को-स्वर्गक दुआरि लग तक पहुँचा सकैए। ई नहि ने जे मुहमे ऊकसँ आगि लगा उतरी तोड़ि फेक दिअए तइसँ ओ श्रद्धाक पात्र भेल।'

अपन सुतरैत शतरंजक गोटी देख निशाकान्त बजला-

'भयार, कोनो हम फुसि बजै छी सेहो बात नहि अछि। दुनियाँ जनैए जे जहिना अहाँक पिताकेँ पचास बीघा जमीन छेलैन तहिना हमरो पिताकेँ रहैन। दुनू गोरेकेँ गामक मालिक लोक बुझै छेलैन, बेर-कुबेर, दू-सेर आ दू-टाकासँ ठाढ़ो होइ छेलखिन। मुदा देखते छी जे तेहेन करांगकुल भाए सभ भेल जे अखन तीन बीघापर आबि अँटकल छी। मुदा पिताक अमलदारी-समैयक खानदानी मलिकाना दोस्ती तँ दुनू गोरेक बीच अछिए।'

निशाकान्तक विचारकेँ विलासदेव अपन विचारमे पुरबैत बजला-

'भयार, राधारमण गामसँ अपन परिवार ल क दुनियाँ निकलल तँ निकलल। गामक सम्पैत तँ हमर भेल। जाबे हम जीबै छी ताबे तक जहिना माए-बापक जिनगीमे सुख भोगलौं तेहने सुख ने बेटो-बेटी तहिना पुरबए, सएह ने चाहिये। भलेँ नै कमाइ-खटाइए तँ की हेतइ। माए-बापक सेवा तँ करैए। अखन जे जमीन हम बेचब, तइमे एक हिस्सा माने तिहाइ जमीन तँ राधारमणेक जेतइ। तइ ले ऐ दुनू भाँइ'सुखदेव आ वामदेव'क की बिगड़त।' मुँह चटपटबैत विलासदेव आगू बजला- 'भयार, आइ जे सुखदेव भाँग पीयौलक एहेन जँ सबदिन पियाबए तखन ने।'

तैबीच सुखदेव बाजल- 'चाचाजी, मलिकाना दोस्ती की कहलिऐ?'

अपन चालिक चालबाजी पकैड़ चलाक जकाँ चलाकीक डारिपर सँ निशाकान्त सुखदेव दिस तकैत बजला- 'बौआ, जहिना तूँ भयारक बेटा छुहुन तहिना हमरो भयार-भातिजे ने भेलह। बेटा-भातीजमे कोनो अन्तर होइए। जहिना लोक अपन बेटाकेँ बुद्धिपरक विचार दैत बुधियार बनबए चाहैए तहिना ने हमहूँ चाहब। तहूमे तँ जे आइ भाँग पियौलह से तेहेन पियौलह जे मन शिवजी-महादेवक दरबारक दरबारीक रूप पकड़ा देने अछि, तैठाम हमरा अपनो तँ अपनत्वक भार माथपर आबिये गेल किने?'

निशाकान्तक अलंकारी भाषाक अर्थ सुखदेव नहि बुझि पौलक मुदा शब्दक तुक-तकिया सुनि ताक-तकैत तकनहार तँ भइये गेल। बाजल- 'चाचाजी, जहिना अंगदकेँ'माने रामायनिक बालिक बेटा'केँ, सुग्रीव सन चाचा भेटलैन जइसँ रामक दर्शनक संग सुग्रीवक साम्राज्य स्वीकारि लेलैन तइसँ अहाँ भिन्न हमरा बुझै छी। तहूमे ज्ञान-रूप धारमे नहानक बेर। ओना, लोकक बीच ईहो चलैन अछि जे कुघाट-सँ-कुघाटक केहनो कुघटिया किए ने हुअए मुदा मुँहक ज्ञान तँ दैवी ज्ञान छीहे किने तँए ओकरा ग्रहण करैमे राहु-केतुक कोनो दोष नहि।'

ओना, सुखदेवक विचार सुनि निशाकान्त खुशियाएल मुस्की मारि-मारि तरे-तर मुसुक मुस्की मारै छला। जेकरा सुखदेव अपन

बिचारक बड़हपन बुझि रहल छल, मुदा निशाकान्त मने-मन भिन्नाक छिन्ना सेहो देख रहल छला। बजला- 'बाउ सुखदेव, मलिकाना दोस्ती भेल, जेना हमरा-तोरा परिवारक बीच अछि।'
निशाकान्त अपन ओ बंशी पाथए चाहि रहल छला जइ बंशीमे दुनू दिशा घाव बनल रहैत। चाहे उनटा लागे आकि सुनटा लागै, ताकि पुनटा करब असान हएत। पुनटा भेल पुण्यपूर्ण।
तैबीच सुखदेव बाजल- 'चाचाजी, तइसँ की भिन्न हमरा बुझि रहल छी। हम तँ जहिना पिताकेँ बुझै छिऐन तहिना अहूँकेँ ने बुझै छी।'
सुखदेवक विचार सुनि निशाकान्त मने-मन चपचपेला। चपचपेला ई जे जहिना भारी वजनबला रंगा (रांग) केँ पानि जकाँ आगिपर पघिला कौड़ीक (समुद्री कौड़ी, जइसँ पचीसियो खेल आ तांत्रिक सभ सेहो चित्ती-कौड़ी भाँजि साँपकेँ पकड़ैए आ बाल-बोध खेलबो करैए।) मुहमे देलापर ठंढ़ाइते भरिया जाइए तहिना भरियाइत निशाकान्त बाजए लगला- 'बाउ..!'
तहीकाल वामदेव सेहो पहुँचल। वामदेवकेँ देखते निशाकान्त वाउए 'वाउए'पर अपन विचारकेँ मनमे मोड़ि अँटका लेलैन। मन मानि गेल छेलैन जे एक तीरसँ दू शिकार किए ने पकड़ब। महाभारतक लड़ाइमे धनुषसँ पहिने एकतीर निकलै छल आ जेना-जेना आगू बढ़ैत जाइत छल तेना-तेना संख्यामे वृद्धि होइत-होइत दस-दस हजार भ जाइ छल, तैठाम अपने भलैं अर्जुन कि भीष्मपितामह नइ छी, मुदा एकटा मनुख तँ छीहे। तखन दुइयोटा शिकार नइ पकैड़ सकब। भलैं करूणा रोग महामारीए किए ने छी मुदा व्याकरणक तँ गणेशजी जकाँ करूणाक जानकार अछिए, तँए एकलैंगिक बनि बिमारीकेँ अधा-अधी तँ अपने क नेने अछि तैठाम जँ अधेक पाछू सौंसे दुनियाँ-बेहाल छी तेकर हाल की अछि, सेहो ने सभ सुनत। मुस्की दैत निशाकान्त बजला-
'बौआ, कमलपुर गाममे अपने दुनू गोरेक परिवार सभसँ धनिको आ सभसँ इज्जतदारो पिताक अमलदारीमे रहल। ओही बराबरीक दोस्ती दुनू परिवारमे अछि। जहिना तोहर बाबा आ हमर बाबू एकठाम बैस खेबो-पीबो करैथ आ सभ तरहक काज-उदममे हमरो परिवारक सभ अबै छेला आ हमरो ऐठाम जाइ छेला, पनरह-पनरह दिन रहै छेला। मुदा आइ तँ ओ जुग नहि रहल, नवका-नवका लोको भेल आ लोकक संग सम्पैतियो भेल आ तैसंग नव-नव बिचारो तँ भेबे कएल अछि। जहिना तोहर पिताकेँ माने भयारकेँ अपने परिवारक फिरीसानीसँ पलखैत नहि होइ छैन तहिना हमरो भइये गेल अछि। तँए कनी आबा-जाही कमि गेल अछि।'
निशाकान्तक विचारमे विलासदेव अप्पन बड़हपन देख रहल छला, तँए सुनन्तू बेटा लग बजन्तू बनि बजला- 'भयार, की कहूँ। बिनु कमेने-खटेने जेहेन पितृभक्त बेटा होइए तइमे छदामो भरि कमी दुनू बेटामे'सुखदेव आ वामदेव'नहि अछि। ओना, मनमे कोनो एहेन भरमाबैबला भ्रमरक बास भ गेल होइ, से तँ हनुमान जकाँ कियो छाती फारि नहियेँ देखए देत, से तँ सम्भवो नहियेँ अछि। भाय, छाती तँ छाती छी, कखनो अपन छत्ती बनि छत्रवास बना बास करैए तँ कखनो छातीमे मुक्का मारि बेटो-मृत्युक संतोख सेहो करते अछि। मुदा किछु अछि तैयो तँ दुनू बेटा तँ हमरे ने कहौत।'
ओना, विलासदेव अपन जिनगीक नापसँ बाजल छला, किए तँ एकटा कचहरिया संगीक विचार मनमे जेना बैस गेल छैन तहिना बेर-बेर बजै छैथ जे कोट-कचहरीक खेल जहिना जिनगी भरि एक्के शब्दमे अटकौने रहैए तहिना ने परिवारोमे होइए। दस-बीस बर्खक जिनगी तँ लोक टिटहीक टाँहियोसँ निमाहि सकैए। जेहेन जे करैए से तेहेन पबैए। से कि कोनो हमरेटा बुझल अछि आकि सभकेँ बुझल छै। आब कियो अक्लबहर बनए आकि अकलथूक। से तँ ओकर ने काज भेल...।
विलासदेवक बात सुनि निशाकान्तक मन तरसा जकाँ धीरे-धीरे तरसए लगलैन, मुदा दुनू भाँइक अगवानी देख निशाकान्त अपन तरसकेँ तरसेमे समेट मनकेँ मारि चुपचाप, उजरा बौगुला जकाँ लटकलहाक पाछू दौड़ैत रहैए तहिना निशाकान्त सेहो अपने जिनगीक समरूप अपन भयारोकेँ बनबए चाहि रहल छला। किए तँ जहिना अपने निशाकान्त तीनू भाँइक भैयारीमे गामक पनचैतीसँ ल क कोट-कचहरीक मर्दन करैत पचास बीघाक फाँट सत्तरह बीघा होइए तैठाम बनरबाँटमे पड़ि तीन-तीन बीघापर तीनू भाँइ ठाढ़ छैथ। भाय, धनेक उमकी ने धनीकक धनकेँ ढाहैए। तँए कि मानो-मरजादा तइ लागल ढहि जाइए? से तँ नइ ढहैए, ओ तँ जुआनी मंत्रक सूत्र छी जे जेहेन पकड़ैए से तेहेन पबैए।
निशाकान्त बजला- 'भयार, बापक हम बड़ दुलारू बेटा छेलिऐन। ढेरबा तक माने जखन दुरागमन भ गेल तहिया तक, जहिना माइयो तहिना पितोजी सभदिन बकलेले-ढहलेल कहैत रहला आ तैसंग किछु-किछु सिखैबतो छेला। मुदा आइ जँ अपन पान-सात बर्खक कोचिंगक बेटा-पोताकेँ किछु अढ़ेबो करबै आकि सिखेबो करबै से अहाँक बोलो-बाइन बुझत तखन ने। ओइ अबोधक कोन दोख अछि। दोख अछि ओकर माए-बापक ने जे बच्चाक जिनगीक हिसाबसँ अपन जिनगीक रस्ता नहि बना सकला।'
जहिना अलबौक विलासदेव तहिना दुनू बेटा, तैठाम निशाकान्त सन उपदेशक। जे अपने परिवारकेँ ढाहि अपन पैत्रिक सम्पैत'खेत-पथार'केँ पचहत्तैर प्रतिशत दान जकाँ गमा चुकल छैथ, जीवनमे ऐसँ बेसी भइये की सकैए। पचीसो प्रतिशत तँ अपनो जीवन-ले लोककेँ चाहबे करी। निशाकान्तक मनमे ईहो उठैत रहैन जे निसभेरो राति, माने अन्हारक घन-घोरो समयमे तँ शुक्ल पक्षक इजोरियाक चान जकाँ ओहनो समयमे ने चान्दनी राति बना चानिपर चमैक अपन परिचय दैते अछि। तेतबे किए, घनघोर अन्हारमे सेहो ज्ञानचक्षुसँ प्रकाशपूँज प्रकाशमान होइते अछि।
अपन टुटैत जिनगी आ जिनगीक विचारधाराकेँ ग्राहकक ग्रास बनियेँ गेल छैन, मुदा जहिना साँपक मुँहमे पड़ल बेंग, जेकर आधासँ बेसी भाग किए ने मृत्युक अन्तक सीमा पार कऽ देने होइ, मुदा जँ मुँह उघार रहत माने साँपक मुहसँ बाहर रहत, तहूकाल

जँ कोनो फनिगाकेँ उड़ैत देखत तँ लपकबे करत। एहने अवस्थामे पड़ल विलासदेवक जिनगी बनि गेल छैन। जिनगी सोलहन्नी रोगग्रस्त भ गेल छैन। शारीरिक रोग जे होनि मुदा मानसिक रोगसँ मरनासन्न भ गेल छैथ। मुदा तैयो...। मौखिक परीक्षा जकाँ निशाकान्त बजला- 'बौआ, भोरका पान जकाँ मुँहक पान रसविहीन भऽ सिठिया गेल अछि तँए पहिने एक गिलास पानि पीयाबह, पछाइत पानो खुअबिहह। नइ तँ एक भाँइ गिलास-लोटामे पानि आनह, जइसँ भयारो पीब लेता आ एक भाँइ पान लगाबह। पानक सभ समान लगमे छहे।'

जहिना दुनियाँमे कियो पहिने अपन ज्ञान दान बेटाकेँ करए चाहैए तहिना ने अनका अढ़बैसँ माने काज अढ़बैसँ पहिने बेटाकेँ अपन बुझि अढ़ैबतो अछि। ओना, दुनू बेटाक'सुखदेवो आ वामदेवो'क मन दुनू भयारक बात-विचार सुनि दहला-भँसिया रहल छेलैहे। तैबीच सुखदेव ओम्हर पानि आनए आँगन गेल आ इम्हर विलासदेव फुसफुसा क बजला- 'भयार, ऐ अबन्ड बेटाकेँ माने वामदेवकेँ, सदिकाल सिखबै छिऐ जे बौआ माए-बापक उद्धार जेठके बेटासँ होइ छै आकि छोटके बेटासँ। राधारमणक जे हाल अछि से देखबे करै छहक, तखन तँ तोंही ने बँचलह। बीचक जँ राजा सगर जकाँ दसो हजार बेटा रहत तेकर कोनो मानि अछि। एते तक कि जिनगी भरि बाप-माइक देहपर थूको फेकत तेकरो मानि नहियेँ अछि।'

पिताक बात सुनि वामदेवक नजैर उठल। जे निशाकान्त परेख लेलैन। अपन नजैरमे निशाकान्त नजरपन भरैत, माने नजैरिक पानि भरैत बजला- 'भयार, सासुरमे जे मोहरमाला देने अछि, तेकर जानकारी समाजो आ परिवारोकेँ अखने द दियौ जे वामदेवे मुँहमे आगियो देत आ श्राद्धो-कर्मक भार ओकरे दइ छिऐ। तँए अपनबला मोहरमाला वामदेवक भेल।'

पानि पीब पान खा दुनू भयार'विलासदेव आ निशाकान्त'पुनः परिवारक गप-सप्प शुरू केलैन। अखुनका एस्टाएल नहि, विग्रहक टाइल मारैत निशाकान्त बजला- 'भयार, गाममे अहाँ-जोकर कएटा बाप भेल अछि जे अपन बेटाकेँ आई.ए.एस. बनौलक!'

अपना जनैत निशाकान्त टाइल मारि बाजल छला मुदा तीनू बापूत'विलासदेवक संग आ दुनू भाँइ सुखदवो आ वामदेव'क मनमे राधारमणक प्रति जे धारण ध नेने छल, ओ आरो धराह बनि गेल। जइसँ विपरीत भावक जन्म तीनूक मनमे जगि गेल। अखन तक निशाकान्त अपन परिवारक तीनू समांगक जिनगीक कथा तेना रत्ती-बत्ती सुना चुकल छला जइसँ रामायणिक राम-लक्ष्मणक भैयारीक सम्बन्ध नहि बनि सकल, बनबो केना करैत एक राम पिताक दंश झेलनिहार, दोसर दहेजक दंश झेलनिहार भेला। तैठाम सीताराम केना राधारमण बनि सकैए। राधारमण-ले तँ किछु आराधए पड़ै छै किने।

विचारक द्वन्द्व तीनू बापूतक मनकेँ तेना ने घुड़िया-पुड़िया रहल छल जे तीनूक बकारे हरण भ गेल छल। पगलाएल राम जहिना चिड़ै-चुनमुनीक संग गाछो-बिरीछकेँ सीताक परिचय पुछए लागल रहैथ। जे 'हे खग, हे मृग मधुकर श्रेणी, तुम देखे सीता मृगनयनी?' तहिना शान्त वातावरण देख निशाकान्त दोसर टाइल मारैत बजला- 'भयार, आब अहाँक भाग्य जगि गेल। 'बढ़हि पुत्र पिताक धर्मे' अहाँक सोलहोअना धरम राधारमणमे चलि गेल जइसँ ओकर भाग उग्र भ जगि गेल आ दुनू भाँइ'सुखदेव-वामदेव'क भाग्य सेहो ओकरे मे माने राधारमणमेमे चलि गेल, फलाफल दुनू भाँइ बिनु पानि चढ़ल लोहा जकाँ कहियौ आकि कुम्हारक आवाक अध-पक्कू वर्तन जकाँ कहियौ, कँचकुहक कँचकुहे रहि गेल।'

'कँचकुह' सुनि वामदेव बाँहिक शर्ट समटैत बाजल- 'भयार काका, अहाँ दुनू भयार जँ पीठपर ठाढ़ रहब माने पीठपोहू बनल रहब तँ एक भैयारीकेँ के कहए जे सत्तरहटा भैयारीकेँ सीखा सकै छी।'

ओना, निशाकान्त मने-मन बुझैत जे टीनक गरमी केतेकाल। कम-सँ-कम पहिने भानसो करै जोग बरतन बनह तखन अपनाकेँ खान-द्रव कहाएब। छी कागज जकाँ आ अपनाकेँ गमै छी जे सोन-चानी जकाँ हमहूँ स्वर्ण द्रव्ये छी। मुदा निशाकान्तक अकास चढ़ल मन एकाएक धरतीपर अतरलैन। उतैरते मनमे एलैन जे केकरो कहने टीन द्रव्य नहि भ सकैए सेहो तँ नहियेँ अछि। समूह रूपमे टीनोमे भानस होइते अछि। कनी ओकरा आगिपर चढ़ा, जखन ओ आगिये जकाँ लाल भ जाए तखन हाथक आँगुरसँ छुबि क देखियौ जे आन द्रव्य, भलेँ ओ सोने किए ने होइ, ओइसँ कम शक्ति टीनोमे छै। उपदेशक जकाँ निशाकान्त सुखदेवो आ वामदेवोक उपदेशी बनि भयारकेँ कहलैन- 'भयार, दुनियाँ जे बुझह, मुदा अपनो तँ इमान-धरम अछिए, चाहे अपन बेटा-बेटी हुअए आकि दुनियाँक, मुदा अपन जे मानवीय कर्तव्य अछि, तेकरो जँ उठा कातमे फेक देब, सेहो तँ नीक नहियेँ भेल।'

अपन भारक भारपन विलासदेवकेँ सेहो बुझि पड़लैन। जइसँ मनमे एकटा स्वर्ण-रूपा विचार अनायास जगि गेलैन। बजला- 'भयार, गणेशजी सन गुरू आ अष्टावक्र सन ज्ञानी कियो किए ने होथि मुदा वेद विहित विचार जे 'पिता पहिल गुरू छैथ' तेकरा कियो झुठिया देत?'

नहलापर दहला फेकैत निशाकान्त बजला- 'भयार, ताशक गेम-गेम खेलमे भलेँ नहलापर दहला फेक दहला दियौ मुदा 'ट्वेन्टी एट'मे नहले दहलाकेँ नमबैए। खाएर समय पेब अहिना टिटही अकासमे टिटियाइए तइसँ लोककेँ कोन मतलब। मतलब तँ एतबे ने अछि जे अपन परिवारक नमहर इतिहास अछि, जहियासँ मनुख घर बना परिवारक संग रहए लगला तहियाक परिवार छी।'

निशाकान्तक विचारमे विलासदेवकेँ इतिहासक कोन पन्ना भेट गेलैन से तँ विलासदेवे बुझता, मुदा मनक चपचपीमे चपचपाइत मुस्की दैत बजला- 'भयार, सभ दिन दुनू भाँइकेँ कहै छिऐ जे 'बौआ, हजारो धर्मस्थान आकि हजारो सरोवरक घाट पर किए ने

नहाएल होइ, मुदा बेटा-बेटी लेल माए-बापक सेवा सभसँ पैघ धर्मक काज छी। पिताजी जखन जीबै छेला, भरि दिनमे तीनबेर मद्यपान सेहो करै छेला। समयसँ पहिने मुस्ताइज भ हुनका मद्यपान करबैत रहिऐन। ओ त्रिकालदर्शी छेला। जखन मन उदार भ जाइ छेलैन तखन कहै छेला- 'बौआ विलास, जहिना तूँ सेवा करै छह तहिना तोरो पचास बीघा जमीन अरैज देने छिअ। मरैबेर मड़ुओ भरि मनमे सोग-पीड़ा ने अपने रहत आ ने तोहर रहत। जँ कियो कहनिहार कहत जे अहाँक परिवार देशक भार बनल अछि। से ओकरे कहने भ जेतइ। जहिना अपन देश छी तहिना ने अपन दिनो-दुनियाँ अछि, जइ पाछू लागि अपन जीवन धारण केने छी।'

दुनू भाइ'सुखदेवो आ वामदेवो'क मन तेहेन मिथि-मालिनिक मथानीमे मथा गेल जे जहिना दुनियाँक हजारो बाटमे हजारो सुख-दुख नचैत अपन छर्त्त पकैड़ लइए तहिना छर्त्त पकड़ैत सुखदेव बाजल- 'भयार चाचा, अहाँक सोझामे कहै छी जे जहिना सभ अपन माए-बापक माने माता-पिताक सेवा दुनियाँमे क रहल अछि तइसँ की हम कम छी। जहिना दुनियाँमे देखै छी तहिना करै छी, तइ ले जँ पिताजी मने-मन तकलीफ सहता से किए सहता। हुनको ने बुझए पड़तैन जे जखन आब मोबाइलेसँ पढ़ौनी सेहो शुरू भ गेल अछि, तखन स्कूल जेते खुजल तेकरो हिसाब नइ होइ सेहो केहेन हएत।'

ओना, धारक धारामे जहिना खत्ता-खुत्तीक सड़ल-जमल जमौठ पानि किए ने मिलैत होइ मुदा धाराक प्रवाहमे ओकरोमे एहेन गतिक संचार तँ भइये जाइ छै जइसँ ओकरोमे शुद्धता आबिये जाइ छै। अही अनुकूल सुखदेव बाजल। किए तँ जीवनक एक परिस्थिति ओहन अछि जे अभावक जिनगीमे लोक नहि पढ़ि पबैए। मुदा जे परिवार आर्थिक दृष्टिएँ सम्पन्न अछि, जइ परिवारमे आई.ए.एस. भ सकैए, तैठाम सहोदरे दोसर-तेसर भाए श्रमचोर केना बनि गेल अछि। जे सुखदेव अपनो ने बुझैए। जहिना ग्रहण लगलापर वा अकासमे सुर्ज-चान-तारा वा पानिक वादलक घटमान देख, देखनिहार ऊपरे-घाड़े ने देखैत रहि जाइए। ओ थोड़े बुझैए जे सुर्ज केना कतिआएल देख पड़ैए आ कि आने ग्रह-नक्षत्र किए कतिआएल। ओ तँ वएह देख सकैए जेकरा ह्मदयमे ज्योतिषक ज्योति प्रज्वलित होइन। कहैकाल तँ सभकेँ सभ कहै छिऐ 'श्रवण कुमार जे माए-बापक सेवा केलैन ओ इतिहास-पुराणक अद्वितीय घटना छी।' मुदा श्रवण कुमारक जीवनधारा आ माता-पिताक जीवनधारा की छेलैन, केहेन छेलैन आ केते प्रवाहित छेलैन सेहो ने सबहक समक्षक प्रश्न भेल। खाएर जे भेल ओ त्रेता जुगक घटनामे चलि गेला। आब कि गुरुद्वारमे बौगुला जकाँ धियान करैक बेवहार रहल, आब तँ मोबाइलसँ ज्ञानक संचरण हुअ लगल अछि।

निशाकान्त मने-मन विलासदेवोक आ दुनू भाँइ'सुखदेवो आ वामदेवो'क नब्ज नीक जकाँ पकैड़ नेने छला। झूठ केना सच बनैए आ सच केना झूठ बनैए, अही सीमापर अपनाकेँ ठाढ़ करैत निशाकान्त बजला- 'भयार, ई देहे व्याधिक घर छी।'

बजैक क्रममे निशाकान्त वैचारिक विषय तँ राखि देलैन, मुदा अपन मिसियो भरि टिप्पणी नहि देलैन जे अही व्याधिसँ ने मनुख व्याधाक रूप पकैड़ व्याधिसँ निवृति भ सकैए। आकि जिनगी बनौने छी चाहक दोकानदारक आ अकासमे उड़ैत इंजन केना लसैक गेल? दिन-राति जँ से चिन्ता करत तखन ओ ई केना बुझत जे समाजमे माने गाममे, पचास रूपैआ आमदनीक परिवार अपन भेल तँए हमरा दुनू दिस देखए पड़त। एक दिस आमदनीक बढ़ोतरी केना हएत तँ दोसर दिस अपन परिवारकेँ अपना आमदनीपर असथिर करैक सेहो अछि। जँ से नहि हएत तँ परिवार पाओल जाएत किने।

गप-सप्पकेँ अन्तिम सीमा दिस बढ़बैत निशाकान्त बजला- 'भयार, हम जहिना अपना बेटा-बेटीकेँ बुझै छी तहिना अहूँक धिया-पुताकेँ बुझै छी। भलेँ दुनू भाँइ'सुखदेवो आ वामदेवो'मानए वा नहि मानए, मुदा अपनो तँ किछु कर्तव्यकेँ निमाहैत बजलौं। आब अबेर भ गेल। पता लगल जे राधारमण जा रहल अछि, कहुना भेल तँ बेटे-भातिज ने भेल, घरसँ जखन निकैल दुनियाँ दिस बढ़त तँ कम-सँ-कम एतबो असीरवाद देब जरूरी अछिए किने जे कहितिऐ, बौआ गाम-घरक चिन्ता मिसियो भरि नहि करिहह। हम सभ अपन बुझि लेब।'

राधारमणक प्रति निशाकान्तक प्रतिक्रियाक आकलन तीनू बापूत विलासदेव एक-दोसर दिस देख-देख करए लगला। मध्यम वर्गक परिवारक मनुखकेँ समाजिक-आर्थिक दुनू दृष्टिएँ तेना वैचारिक ढाँचामे ढालल गेल जे ओ श्रमहीनक संग भोगी-विलासी सेहो बनि गेल। जइसँ परिवारक ढाँचामे व्यवधान उपस्थित भेल आ धीरे-धीरे मृत्युक कगारपर पहुँच गेल।

एक तँ कचहरिया लोक निशाकान्त, तहूमे गामक सभ जनैत जे निशाकान्त सन इरखादार दोसर गाममे कियो ने छैथ, अपन चौदह बीघा खेत बेचि कोटे-कचहरीक ज्ञान हाँसिल केने छैथ, तैसंग एहेन सेहो छैथ जे सहोदरे भाइक संग सभ किछु केलैन।

सामंजस करैत निशाकान्त बजला- 'भयार, एकटा राजा एकटा जोगीकेँ अपन दुनू बेटाक सेवा करैक भार देलैन। जोगीकेँ बिचारैमे धोखा भेलैन, एकटाकेँ अपने जकाँ जोगी बनौलैन, जे अपना घरमे रहत। दोसरकेँ राजसी जीवनसँ मण्डित केलैन। जखन दुनू जुआन भेल तखन जोगी दुनूकेँ राजाक सामने उपस्थित केलैन। हलैस क राजा-जोगीकेँ अपन हिस्सामे लऽ लेलैन। अपसोच करैत जोगी घर घुमला।'

क्रमश...

सम्पर्क :91101 08170

आस

• अमरनाथ झा

गणेश बरामदा मे धप्प स बैसि पसरि गेल। भोरे भुखले निकलल छल से आब आगि उगलैत दुपहर मे घूमल। बौआइत, ढ़हनाइत। कियो कतहु नहि भेटलै। जेना सभ बिला गेल होइ। एहन समय मे कतए के भेटतै? आ कोनो काज भेटनाय त सपना। साइट पर सेहो गेलै जतए किछु दिन सँ काज करै छल। मालिक के अता-पता भेट जैतए। काज केलहा पाइये भेट जैतए। मुदा ककरो कुनु पता नहि। फोन न. पर फोन करै तँ फोनक कोनो जबाबे नइँ दै। सौंसे सड़क सुनसान। विरान आ भयाओन लागै। जेना नगर मे कोनो राक्षस आयल होइ। देख लेतै तँ गीरि लेतै। कोनो परिकथाक खीस्सा जकाँ ओकरो डर भ रहल छै, मुदा राक्षस सँ नहि पुलिसक। जँ कतौ देखि लेतै तँ चारि डण्टा त जरूर लगेतै। नहि तँ जेना टी.भी. मे देखैछै - कान पकड़ि डण्ड-बैसकी ने करबए लगै।

ओ आँखि मुनि, मुँह पर गमछा राखि श्वास छोड़ैत दम लइये रहल छल कि रूपा आबि कहलकै- एना थाकि-हारि सुतल छै से एहि समय पर ककरो वश छै। गणेश गमछा हटा रूपा के देखए लागल। ओकर गोर मुँह रौद मे तमतमायल नव पाकल तौलाक रंग ल लेनै रहै। बिना तेलक छिट्टा सन केश सौंसे मुँह पर छिड़ियाअल। आँचर के मुँह मे चिबबैत कोरपछूआ ठाड़ छै। गोल-मोल। मुलुर-मुलुर तकैत। तेसर बरख नहि पूरल छै। ओकरा स जेठ आठ बरखक सुरज बच्चे सँ रोगाह, पेट हंडी जकाँ फूलल, छातीक हड्डी गनल जा सकैत छै। जेठ संतान बेटी। चौदह-पन्द्रह बरखक, सुनीता। नौंवा मे पढ़ैत। पढ़े मे तेज। अपना क्लास मे फर्स्ट करैछै। अखुनका हिसाबे ग्रेड 'ए' प्लस। घर मे पेटकुनिया द सुतल, मुदा नीन नहि छल। हाव-भाव सँ सै लगैत छलै, शायद कोनो बात लए रूसल छै। मुदा एहन समय मे रूसनाय की आ बौसते के?

रूपा ठेहुन सँ लटपटायल बेटा के कोरा मे उठबैत बाजल-बाबू कँ आंव भ गेलैन ह, खून अबै छन्हि। ककरो सँ देखा दितियै।

गणेश दू बरख पहिने माए के मरलाक बाद सकलदेव के अपने संगे शहर नेने आयल रहै। साठि-पैंसठि सँ बेसीक नहि हेतै मुदा अस्सी सँ कम क नहि लागै। डाड़ झुकल, गालक हड्डी निकलल आ आँखि सँ हरदम पानि खसैत। ओ चाहे छल कि बाबू कोनो तरहे एतय चलि आबै त ओ चिंतामुक्त हेत। मुदा बाप ओहनो स्थिति मे गाम छोड़ैक लेल तैयार नहि। गणेश प्रयास मे लागल रहल। अंत मे बाप सकलदेव के लगलै जे नहि जैब तँ एतय रहब कोना? जा तक पैरूख रहै, गिरहतक हरबाहि करै, नहि त आन काज। गुजर-बसर चलि जाइ। मुदा जखन देह खसलै तँ मालिक कतै दिन बैसा क खुअबितए। ओहो बुझलक-"नीत रोगी कँ कै करे खोजी, आ नीत उपास कँ कै दिए रोजी।" एक बेर बेटा एलै त सकलदेव संग लागि गेल। ओहिना जेना नेनामे गणेश, ओकर आँगुर पकड़ि निर्मली बजारक दशमी मेला देखय जाइ छल, तहिना सकलदेव बेटाक आँगुर ध जीवनक शेष मेला देखय एन.सी.आरक गाजियाबाद चलि आयल। हं! घराड़ी जे गिरहत देनै रहै तै पर ओकरे अधिकार रहै देलकै। सकलदेव बुझय, ई कनियै टा बात भेलइ। मुदा दोसरे पल ओकर आँखि नोरा जाइ। बीतल दिन मोन पड़ि जाइ आ हठात ओकरा मुँह स निकलै- "धारक कातक चास, तकर कोन बिसवास।"

देशमे अपन राज भेलाक बाद भुदानी जमीन गरीब-गुरबा, भूमिहीन कँ जखन बाँटल जाए लगलै तँ सकलदेवक बाप बलदेव कँ एतय सँ डेढ़ कोस पूब परसा छीट पर पन्द्रह कट्ठा भेटल रहै। तीन कट्ठा वासडीह सेहो। टाट-बाँसक खढ़ सँ छारल कोसिकन्हाक सुन्दर घर। सकलदेव तखन सतरह-अठारह बरखक रहै। हड़गर-कठगर। कमासुत ! मुदा अखन ओहि सभपर सनमुख कोसी बहि रहल छथिन। ई सभ जखन सकलदेव के मोन पड़ैछै तँ ओकर मोन कोसीक पानि जकाँ तड़फे लगै छै।

- 'चलू घर, बड्ड अबेर भ गेलै।' रूपाक कहब पर हठात गणेशक ध्यान भंग होइछै।

सभ दिन जकाँ गणेश घरमे जा बैसि रहल। रूपा आगूमे थारी राखि देलकै जाहिमे भात आ आलूक सन्नामे काँच मरचाइक टुकड़ी हुलकी द रहल छलै। गणेश चुपचाप खा रहल छल। आन दिन जकाँ गप्प नहि क रहल छल। ने किछु पुछनाइ, ने कहनाइ। रूपा के अपसोस भेलै, एक भोर भुखल-पिआसल गेल अखन एलै। अबैत देरी बाबूक खीस्सा ल बैस गेलै। बुढ़ शरीर किछु ने किछु तँ होइते रहतै।

ठीके गणेश सोचमे पड़ल छल। ओ कत जेतै? कोन डाक्टर सँ देखेतइ। अखनका समय। कहतइ कहीं कोरोना तँ नहि छै। पहिने ओकर टेस्ट कराऊ। ककरा सँ पाइ मांगतै? के देतइ? सभहक स्थिति तँ ओकरे जकाँ छै। कहीं कोरोना निकलि गेलै तँ कि हैत? ई सोचितहि ओ काँपि उठल। सभ सँ पहिने तँ मुहल्लाक सभ लोक एहि घर कँ अलग-थलग क देतै। आर पता नहि की सभ ओकरा दिमागमे आबै लगलै।

साइट पर रोज-रोज काज नहिये भेटै। मासमे पन्द्रहो-बीस दिन भेट जाइ तँ काज चलि जाइ। ओ फेर रूपो तँ बैसल नहि रहै। एक

घर काज ध लेने रहै। मैडम सेहो बड्ड नीक। बड्ड दयालु। देबाल पर टांगै वला बड़का टी.भी. लेलकै तँ पुरना रूपा के द देलकै। मासमे चारि-पाँच दिन नहियो जाइ तँ एकोटा पाइ नहि काटइ। एक दिन मैडम लग गेलै त एक हजार टका देलकै। कहलकै- 'देख रूपा तोहुँ हमरे जकाँ बाल-बच्चा वाली छै। खतरा हमरे टा नहि तोरो छौ। सोसाइटीमे एकोटा मेड नहि आबि रहलै-ए। मेन गेट काल्हि सँ बन्द रहतै। पास सिस्टम लागू हेतै। कोविड समाप्त होइतहि हम तोरा फोन करबौ।

गणेश कँ सेहो ई चुप्पी आब अखरि रहल छै। ओ मुड़ी उठा बेटी दिस तकैत बाजल - 'सुनीता खेलक।'

'नहि।' - रूपा संक्षिप्त जवाब द चुप्प भ गेल, जेना गणेशक पुछनाइ ओकरा नीक नहि लगलै।

'किएक।' - कहैत गणेश रूपा दिस देखए लागल।

'हिनका चान चाही।' - रोष प्रकट करैत रूपा बाजल।

'एहिमे की छै, आइ पूर्णिमा छियैहे। चान उगय दियौ। आँगनमे थारीमे पानि राखि देबै। चान उतरतै। हमर बेटी उठा लेत।' गणेश बिहुँसैत कहलक।

कतै दिनक बाद आइ गणेशक मुस्कान देख रूपाक हिआ जुड़ेलै।

'की भेलौ सुनीता। अहाँ जरूर हमर बेटी कें किछु कहने हैब। उठ बेटा खा ले।' सुनीता के बौंसैत गणेश रूपा पर तामस देखैलक। मुदा सुनीता टस-स-मस नहि भेल।

'की चाही।' - एहि बेर गंभीर होइत गणेश बाजल।

'एकरा बड़का स्मार्ट फोन चाही। स्कूल सभमे आब ऑनलाइन पढ़ाइ होइछै। पढ़ाइ की हेतै। नाटक छियै इ सभ। स्कूल की सरकार नहि बुझैछे, ई लोक एहन समयमे कतए सँ पैसा आनतै। छ मास नहि पढ़तै त कोन जुलुम भ जेतै।'

'अच्छा-अच्छा भ जेतै। पढ़तै। ऑनलाइन क्लास करतै।' अखुनका स्थितिमे गणेश आसे टा द सकै छल सै ओहो बुझि रहल छल। रूपा सेहो खूब जनै छल कि जखन दुनु साँझ चुल्हि पजरब कठिन भ गेल छै तँ दस-बारह हजारक स्मार्टफोन कतए सँ एतै।

गणेश खा कए उठल फेर बरामदा मे जा पसरि गेल। ओहिना जेना कर्त्व्यहीन आ असहाय भेलाक बाद लोक भ जाइत अछि। ओ जनै छल कि आब कनी कालमे ओ उठत आ एहि डेढ़ मास सँ ताकल जगह पर चल जायत। जेना ओ एकान्त स्थली ओकर मौलिक खोज होइ। बस्तीक सीमान्त पर नीरव एकांतमे बनल एकटा पुरान-धुरान मन्दिरक हाताक एककात सीमेन्टक चबुतराक बीच, पीपड़क गाछक पुष्ट जड़ि सँ पीठ टिका, अन्हार होइ तक बैसल रहत। एतए ओ एहि आसन्न संकट सँ उबरबाक रस्ता तकबाक लेल अबै छल वा समस्या सँ पलायनक लेल पता नहि। मुदा वैचारिक उथल-पुथल ओकर संग नहि छोड़ै छै। कखनो ओकरा असमय आ अक्षम क दै तँ कखनो अभावक जीवनक बीतल किछु पलक सुखद-स्मरण शीतल आनन्द प्रदान करै।

अखनो ओहि ऊहापोहमे लागल अछि। सुनीता कँ स्मार्टफोन केना हेतइ। कोनो इंतजाम होइतहि सभ सँ पहिने ओ सुनीता कँ स्मार्टफोन आनि देतइ। अखन ओ बापक बीमारी बिसरि गेल अछि। बाबू कँ एला सँ सुनीता कतै प्रसन्न रहै छै। स्कूल सँ एलाक बाद दादा लग बैसनाइ, गामक खिस्सा सुननाइ। आ अखन लॉक-डाउनक समयमे त सहजहिं। दादाक टहल-टिकोरा ओकर प्राथमिकता मे छै। रूपा कँ सेहो नीक लागै। गुमसुम घरक काज-धन्धा करैत दादा-पोतीक राग-उपराग सुनैत मन्द-मन्द मुस्काइति रहैत छल। कखनो दादाक मोन खराब होइ तँ सुनीता कहितइ- 'ददा हमरा डाक्टर बन दैह, तोहर सभ रोग-बियाधि छु-मन्तर।' ताहि पर दादा कहै- 'दूर बताहि ता तक हम जीबिते रहबौ।'

ओकरा मोन पड़ै छै तीन बरख पूर्व छोटकाक जन्म। रूपाक प्रसवकाल। गाजियाबादक सरकारी अस्पताल। ओ.टी.क बाहर अधीर आ व्याकुल गणेश जाइत-अबैत ओहि डाक्टरनीक पछोड़ ध लै रूपाक हाल बुझबाक लेल। ओ सभ बेर हाथक इशारा सँ कहै- 'धैर्य राखू , प्रतीक्षा करू आ आगु बढ़ि जाय।'

गणेशक जागल आँखि सपना देखए लगैत छै। अवचेतनमे ओ दृश्य पुनर्जीवित भ ओकरा पुनः अस्पतालक ओ.टी.क बाहरक बेंच पर बैसा दैत छै। अचानक ओहि डाक्टरनीक मुँह सुनीता बनि जाइछै। हलका आसमानी साड़ी पर ठेहुन तक झक-झक उज्जर कोट, गरदनिमे आला लटकल। गोल-गोल भरल चेहरा। तेजी सँ जाइत-अबैत पीठ पर दहिन-बाम झुलैत कसि कए गुहल मोट चोटी। जेना अखनो सुनीताक लाख ना-नुकुर करितौ ओकर माए गसि-गसि कए चोटी गुहि स्कूल पठबै छै। ओकरा कानमे कियो कहै छै- 'ई डा. सुनीता छियै।'

सहसा एकटा आवाज सँ ओकर ध्यान भंग होइ छै। 'नीक जगह चुनलह अछि गणेश भैया।' ओ चौंकल। आइ पहिलुक-पहिलुक ओकर सर्वाधिकार सुरक्षित एकांत मे क्यो दखल देने छलइ। नजरि घुमेलक तँ ओकरा सँ दस डेग पर ठाड़ चेतन, मुस्का रहल छल।

'आबह चैतू। हम तँ रोज साँझ कँ एतहि आबि के बैसइ छी। एहि एकांतमे नीक लगै छै। मन कँ शांति भेटै छै।' गणेश मुस्काइत बाजल।

'हाँ ! हाँ ! सैह हमहू कहलिअ। बढ़िया जगह चुनलह हइ। एहने पीपड़क गाछ नीचा तपस्या करैत भगवान बुधो कें शांति भेटल छलनि। मुदा एकटा बात कहब भैया कि तथागत गौतमक आ तोहर शांतिक खोजमे अन्तर छ।'

गणेश चेतनक गप्प कतै बुझलक से तँ पता नहि मुदा ओ हँसि कए रहि गेल।

चेतन गणेशेक संगे कतेको मास सँ साइट पर सेंट्रिंग के कार्य करैत छल। झारखण्डक दुमका जिलाक कोनो गाम घर छियै। ओ तँ कखनो नहि कहलकै मुदा लोक कहैछै कि दुमकाक एस.पी. कॉलेज सँ एम.ए. की बी.ए. केने छै। कखनो कँ गाँधी, लोहिया आ मार्क्सक गप्प करै जे ओकरा दिमागक उपर सँ निकलि जाइ। गणेश कँ लगै कि बेसी किताब पढ़ि कए ओकर माथा सनैक

गेलैए। तहन ओकरा अफसोस नहि होइ जे ओ अठवाँ पास क नौवाँमे पढ़ैत छल तखनहि अपन गामक जगेसरा संगे एतए आबि साइट पर काज करय लागल। किएक तँ पढ़ियो-लिखी क यैह काज करितै।

ओकरा चैतू दए मात्र एतबे बूझल छलै कि ओकर गंभीर रूप सँ बीमार विधवा माए गाममे रहै छै। डाक्टर कहै छै जे ओकरा कैंसर छै आ गामक लोक चेतन कँे नालायक, बेहूदा बेटा बुझै छै।

मुदा दुइयो दिन नहि बितल रहै कि ओकरा नोएडा सँ जगेसरा फोन केने रहै। आ ओ दौड़ैत-हाँफैत वस्तीक कारू सावक दोकान गेल रहै। अखबार देखलक तँ सन्न रहि गेल। अखबारक तेसर पन्ना पर मोटका अक्षरमे लिखल रहै- 'कोरोना सँ पीड़ित व्यक्तिक आत्महत्या।' ओ पढ़य लागल - कोरोना सँ पीड़ित मजदूर पंचमहला सँ कुदि आत्महत्या क लेलक। ओकर जेबी सँ ओकर आधार कार्ड भेटलै, जाहि सँ पुलिस के ज्ञात भेलै कि ओ झारखण्डक दुमका जिलाक महिया गाँवक वसिन्दा छल। नाम - चेतन कुमार, पिता - स्व. रामहरख नायक। आस-पासक किछु मजदूर सँ ज्ञात भेलै लॉकडाउन सँ पूर्व एहि साइट पर कार्य करै छल आ एहि पंचमहला बिल्डिंगक सेंट्रिंगक काज ओएह केने छल। ओकर गाम सूचना द देल गेलेए। पोस्टमार्टमक पश्चात कोरोना पॉजिटिव हेबाक कारण ओकर संस्कार प्रशासन द्वारा क देल गेले।

गणेश ओतहि बैसि रहल। गुमसुम। ओकरा किछु बाजल नहि भ रहल छलै। बेर-बेर माथमे यैह बात घुड़ियाइ - ' ओकरा तँ कोरोना नहि छलै। तहन पुलिस आ अखबार किए कहलकै कोरोना छलै, तेँ ओ आत्महत्या क लेलक। की फायदा हेतै ? मुदा दोसरे क्षण ओकरा मुँह सँ निकललै - नहि ! चैतूक माथा नहि सनकल रहै, माथा तँ सनैक गेलेए कुर्सी पर बैसनिहारक।'

ई दुःख गणेश कँे बौक बना देनै रहइ। रूपा सेहो चुप्पै रहै। ओहि घटनाक चर्चा नहि कर चाहै। मुदा गणेशक उदासीन - निर्मम मौन कखनो कँे ओकरा सहमा दइ। ओकर विभिन्न प्रकारक गप्प-सप्पक ओकर संक्षिप्त हँ, नइँ के उत्तर में गणेशक विवशता झलकै। कखनो कए ओकर विवश - कातर दृष्टिक निरानन्द भाव सँ रूपा काँपि उठए आ क्षोभ आ आक्रोश मे बरसि जाए। 'दुःख-सुख तँ जिनगी मे छैहे, ककर जिनगी एहि सँ बाँचल छै। तहन सभ दुनियामे सैह करै। छिया-छिया, ई की केलक। अपने तँ गेबै कैल पुरखो सभ पर पाप चढ़ैलक। शास्तर-पुराण तँ सैह कहैछै।'

गरीब जीबाक बाट ताकि लैत अछि। अभाव जिनगीमे सोंगर सँ काज चला लैत अछि। कहुना टटघर ठाड़ रहय। बुधियारि बेटी परिस्थिति सँ ओतबो अनभिज्ञ नहि छलीह। आलोक जे ओकरे क्लास मे पढ़ै छल, अपन स्मार्टफोन ल आबए लागल। ओकरा लोकनिक ऑनलाइन क्लास चलय लगलै। नौवाँमे पढ़ैत सुनीता कँे संविधानक ई बड़का बात 'शिक्षा प्राप्त करबाक अधिकार सभहक छै', से बुझल छलै वा नहि मुदा अपन एहि जोगार ऑनलाइन व्यवस्था सँ अनठेकाने ओकर डेग 'आत्मनिर्भर भारत' दिस बढ़ि गेल छलै।

रूपाक सहमति छलै मुदा अनिच्छा सँ। हलाँकि मातृहीन आलोकक प्रति ओकरा ह्रदयमे ममताक स्त्रोत रहै। मुदा ओकर बाप, कारूक नजरिक खोट ओकरा सँ नुकायल नहि छलै। पुरूष कँे चिन्हबाक लेल विधाता स्त्रीकँे एकटा अदृश्य आँखि देने छथिन। मुदा घोर विपन्न स्त्रीक तँ पूरा स्वत्व आँखि छैक। ओ कखनहुँ निश्चिन्त नहि रहैत अछि। फेर दोसरे क्षण रूपा अपनहि मोनमे उठैत प्रश्न सँ निरूत्तर भ जाय- 'बापक कर्मक जिम्मेवार कतहु बेटा होइ?'

ओकरा मोने छै - एक दिन भोरे-भोरे लोक उठल तँ सुनलकै रातिमे भानस करैत काल कारूक कनियाँ जरि गेलै। अस्पतालो जाइके मौका नहि देलकै। ओकर मौसी जे पहिनो अबैत रहय तकरा लोक आब प्रायः जाइत-अबैत आ समय-समय पर रहैत देखय लागल। कहबी छै ने जे 'चालि, प्रकृति, बेमाय ई तीनू मुँइने जाय।

मुदा गणेशक विचार रूपा सँ भिन्न रहै। एहन समयमे वैह पतिराखन रहै आ गणेश जखन ओकर प्रशंसामे किछु कहय तँ रूपा कँे नहि सोहाइ मुदा ओ चुप रहै। बजार आ बनिआ उधारियो देब मे पहिने अपन फायदा देखै छै, इ सामान्य बात बुझियो कए गणेश नहि बुझइ तँ इ परिस्थितिजन्य विवशता छलै से रूपा नीक-नाहिंत बुझय छल। अखनो ओ बाबू कँे चाय देबाक लेल घटल चीनी आ चायपत्तीक लेल आयल छल। दुपहर बीत गेलाक बादो ओकर दोकान पर कियो नहि छलै। कारू ओकर हँसि कए स्वागत केलकै। रूपाक मन्न खीन्न भ गेलै। कारूक द्विअर्थी संवाद कँे अनठबैत ओ चाहे छल जतै जल्दी हो ओ घर जाय। मुदा कारूक हिम्मत आइ ओकरा बढ़ल लगलै। ओकर अधम-औघर नजरि लागे जेना ओकरा सँ बलजोरी क रहल छै। ओकर निर्लज्ज दृष्टि वस्त्र कँे चिरी-चोत करैत भीतर सन्हिया गेल होइ। हद तँ तखन भ गेलै जखन समान हाथमे पकड़ाबैत ओ लक्ष्मण रेखा पार क गेल छल। फेर की छलै- कारूक गाल पर सटाक थापड़ पड़ल। अप्रत्याशित घटना सँ ओ तिलमिला गेल, जे ओ नहि सोचने छल। रूपाक लाल-लाल पैघ आँखिमे जेना खुन उतरि आयल छलै। 'कारू अपन सीमामे रह, नहि तँ अखन खाली ब्याज चुकौलियो अछि, मूल सेहो भेट जेतौ।' आ सुनिलै- 'सुकुर मना जे हम तोहर घरवाली नहि छियौ, नहि तँ अखन जेलमे सड़ैत रहितैं।' कारू सकपकाइत मुँह ताकि रहल छल। ओकर मुँह स बोली नहि फुटै जेना वाक-हरण भ गेल होइ। तामसे गारि दैत रूपा ओकरा दोकान सँ निकलि गेल।

मुदा ओकर क्रोधक ज्वाला ओहिना धधैक रहल छलै। लगै छलै बिना लावा उगलने ई ज्वालामुखी शांत नहि हेतै। घरक रस्तामे ओकरा समस्त तामस आलोक पर केन्द्रित हुअ लगलै। अखन ऑनलाइन क्लास चलैत हेतै। ओ अखन हमरे ओतए हैत। जाइत

देरि ओ एहन बापक बेटा कँे घर सँ निकालत। बहुत भेलै ऑनलाइन क्लास। जेहने बाप रहतै तेहने ने बेटा हेतै। कहबियो छैक, 'जाहि गाछक खपलोइया रहतै ताहिमे न सटतै। तमतमायल रूपाक डेग बढ़ि जाइ छै। ओकरा होइ कतेक जल्दी ओ घर पहुँचै। जखन रूपा घर पहुँचल तँ ऑनलाइन क्लास समाप्त भ गेल रहै। आलोक आ सुनीता भावी परीक्षामे बेसी सँ बेसी नम्बर आनबाक गप्प-सप्पमे लीन अछि। रूपा मोख लग ठाड़ भ जाइत अछि। शायद जीवनक ऊँच-नीच, गरम-सरद ओकर शंकालु चित्त कँे घरमे प्रवेश करबा सँ रोकि दैत छै। परीक्षामे अंक प्राप्त करबामे सुनीताक स्थान प्रथम रहै तँ आलोकक दोसर। कए-एक बरख सँ यैह क्रम रहै। आलोक कँे सुनीता सँ प्रतिद्वंदिता रहै मुदा ताहिमे कटुताक स्थान लेशमात्र नहि आयल छलै। हँ कखनो कँे आलोक ओकरा खौंझा दै।

'सुनीता दीदी एहि बेर परीक्षामे हम तोरा सँ बेसी नम्बर आनबौ। तोहर स्थान दोसर रहतौ, पहिल नहि। बहुत दिन सँ तू पहिल स्थान पर कब्जा केने छिही।' आलोक सुनीता कँे कहलक।

'से आन, इ तँ नीक बात।' संगहि सुनीता रोष देखबैत बाजल- 'मुदा ई जे तूँ हमरा दीदी कहैत रहै छै से किएक से हम तोरा सँ पाँच बरखक जेठ छियौ कि दस बरखक।'

'से बात नहि छै सुनीता दीदी। तोरा हमरा सँ बेसी नम्बर अबै छो, तँ तू हमरा सँ ज्ञानी भेलै।' 'सर' की कहै छथिन- 'ज्ञाने लोककँे महान बनबै छै।' तें तू सुनीता दीदी।'

'फेर दीदी ! बात बनेनाइ तँ कियो तोरा सँ सीखै। तँ ठीक छै, आइ सँ हमहु तोरा भइया कहबौ।'

सै तँ हमरो होइए जे तू हमरा भइया कहितैं। आलोक मुस्काइत बाजल।

'तँ अखनहि सँ कहै छियौ।' सुनीता उत्साहमे कहलक।

'हमरा नीक तँ तखन लागत जखन हम तोरा सँ बेसी नम्बर आनब आ तू हमरा भइया कहितैं।' आलोकक कहबमे आकांक्षा आ मसखरी दुनुक मिलल-जुलल भाव छलैं।

मुदा सुनीता गंभीर होइत बाजल- 'तू अपन स्मार्टफोन ल नहि अबितैं हमर पढ़ाइ पछुआ जाइत। तखन स्वतः तोरा हमरा सँ बेसी नम्बर आबि जाइतौ।'

'ई तँ चिटींग होइत। हमरा जँ तोरा सँ बेसी नम्बर एबो करैत तँ होइत जे हम अपन मेहनत आ पढ़ाइक बदौलत ई नम्बर नहि अनलहुँ अछि। लगितए जै ककरो सँ किछु छीनि लेलिए अछि जहि पर हमर अधिकार नहि अछि। हमर मोन हमरा कहियो माफ नहि करितए।' आलोकक बोलीमे दृढ़ताक संग वेदना झलकि रहल छल।

रूपा मोख लग सँ सभटा सुनि रहल छल। आत्मग्लानि सँ भरि उठैत अछि। ओकर मोन ओकरा धिक्कारे लगै छै। अपराधबोधक संगहि आलोकक प्रति ममताक हिलोड़ उठय लगै छै।

तखनहि हुलसैत गणेश अबैत अछि - 'जागेसर फोन केनै छल। लॉकडाउन खतम भ गेलै। सोम दिन सँ साइट पर काज हेतै।' सभटा ओ एकहि साँसमे कहि उठल छल।

गणेशक आवाज सुनि सुनीता आ आलोक बरामदामे आयल। सुनीता दिस तकैत गणेश कहैत अछि - 'आब सभ सँ पहिने तोहर स्मार्टफोन एतौ बेटी।' सुनीता किछु बजैत नहि अछि बस पिता गणेश दिस देखैत रहैत अछि। पिता ओकरा अखन सभसँ सम्पन्न आ खुशहाल व्यक्ति लगै छै।

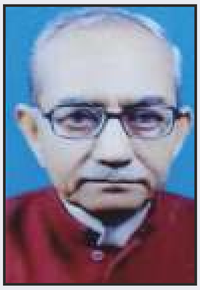
गणेशक फोन पर फेर रिंग होइछै। इ फोन रूपाक लेल मैडमक रहैत छैक। ओकरो मैडम सोम दिन सँ आबैक लेल कहैत छै।

घर जाइत आलोक सुनीता कँे कहैत अछि- 'आब तँ तोहर स्मार्टफोन आबि जेतौ। काल्हि सँ हम नहि एबौ। सुनीताक किछु कहै सँ पहिनहि रूपा कहैत अछि- 'नहि बेटा ! अखन किछु दिन आऊर अबैत रह, जा तक एकर स्मार्टफोन अबै छै।

साँझ भ गेल छै। कनिकालमे चौठक चान उगि जेतै। रूपाकँे होइछै एहिबेर अन्हरिया किछु बेसीये दिन रहि गेलै।

सम्पर्क : 91109 32551

साहित्य अकादेमी पुरस्कार-2020



कमलकांत झा
गाछ रूसल अछि
(कथा संग्रह)



सियाराम झा सरस
सोनहुला इजोतबला खिड़की
(बाल कविता संग्रह)



सोनू कुमार झा
गस्सा
(कथा संग्रह, युवा पुरस्कार)

मिथिलादर्शन परिवार दिस स पुरस्कार लेल नामित तीनू रचनाकार के बधाई।

आधुनिक विदेह आ देसिल बयनाक प्रहरी

● कैलाश कुमार मिश्र *(मानवशास्त्री)*

गतांक स आगू...

-दू-

मिथिलाक सीता पर आई हमर सोच, हमर लेख आदिक लोक आ विद्वान सब बहुत प्रशंसा करैत छथि। होइत अछि भोगेन्द्र जी रहितथि तँ कतेक भाव विभोर होइतथि? कारण ई जे मिथिलाक धिया सियाक अवधारणा हम भोगेन्द्र जीसँ, हुनकर संसर्गमे, हुनकेसँ सिखने छी। हमर पीएचडीक शोध विषय छल 'स्ट्रक्चर एंड कॉग्निशन ऑफ़ मैथिली फोक सोंग्सः एन एनालिटिकल स्टडी ऑफ़ एंथ्रोपोलॉजी ऑफ़ म्यूजिक' एहि पर हमर काज मुलतः चारि लोकक विचारसँ प्रेरित अछि - भोगेन्द्र झा, प्रोफेसर बैद्यनाथ सरस्वती, प्रोफेसर हेतुकर झा, आ प्रोफेसर डी. के. भट्टाचार्य। आश्चर्य तखन लगैत छल जखन भोगेन्द्र जी स्त्रीगण सबहक मैथिली गीतक बात करथि। कतेक गीत हुनका कंठस्थ रहनि तकर अंत नहि। सीताक जखन बात होनि तँ बाजथिः 'राम बियाहने कोन फल भेल/ सीता जन्म कनिते गेल!' से जखन कहथि त हुनकर पुरुख ह्रदयमे जेना स्त्रीगणक आत्मा घुईस जानि -

'हे भगवान!

कोन कसूर बिधना भेल बाम

कहब दुःख ककरा?'

भोगेन्द्र जी कहथिः 'जनैत छी के. के., एखनो मिथिलाक स्त्रीगण कहाँ स्वतंत्र छथि? वेदनामे बहिते रहैत छथि। एखनो जखन मैथिलानी सब कष्टमे रहैत छथि तँ दोदिल होइत बाजि उठैत छथिः 'फाटू हे धरती?' उफ़, जेना सबमे सीता बैसिल होथि! जेना धरती सब किछु सहि लेती मुदा अपन धियाक अपमान नहि! जेना मैथिलानीकेँ जनमिते कानमे कहि देल जाई छनि जे जखन सबतरिसँ थाकि जैब तँ धरतीक शरण माँगि लेब!' ई बात कहैत भोगेन्द्र जीक आंखि नोरसँ भरि जानि। मुदा ओहि नोरक ठोप देखबा लेल कियोक कहाँ भेल तैयार?

बात आगा बढ़बैत छी। भोगेंद्र जी जनक, याज्ञवल्क्य, विद्यापति, पक्षधर, वाचस्पति, मंडन, अयाची, शंकरक बात करैत छलाह। ओ लखिमा आ विश्वासदेवीक गुणक प्रशंसक छला। गार्गीकेँ आगा अनैत मैथिलानीकेँ सब क्षेत्रमे आगा आनय केर समर्थक छलाह। वैदिक संस्कृतिक पक्षधर छलाह जे कर्म आधारित साम्यवादक समाजक बात करैत अछि। हुनका पंजी व्यवस्था, मूल, मूलग्राम, बीजपुरुष सब चीज़क ज्ञान छलनि। भोगेंद्र जी कहियो कोनो मंदिर अथवा पूजा स्थलीमे जूता चप्पल पहिरने नहि प्रवेश केलनि। ओ



भोगेंद्र झा

(09.08.1922 - 21.01.2009)

पूजा भले मंदिरमे नहि करैत छलाह मुदा ह्रदयक कण-कणमे हुनका भैरवि आ भगवान बसैत छलथिन। ओ नीक परंपराक भंजक नहि संरक्षक छलाह। विद्यापतिक बाद मैथिली भाषा लेल हुनकासँ साकांक्ष कियो नहि भेल। ओ देसिल बयनाक कर्णधार छलाह। आई मैथिलीक अष्टम अनुसूची लेल सब कियो बड़का-बड़का तीर मारैत छथि मुदा एहि स्थान पर मैथिलीकेँ आनय बला मात्र भोगेन्द्र जी छलाह। हुनकर व्यक्तिगत जीवनमे भारतीय संस्कृति, वेद, धर्मशास्त्र, रामायण, महाभारत, गीता, मनुस्मृतिक छाप छलनि। ओ क़ुरान आ बाइबिल सेहो पढने छलाह। सहज मुद्रामे सिद्ध ऋषि जकाँ लोककेँ कहैत छलथिन 'हम भारतीय दर्शन, धर्मशास्त्र पढि क कम्युनिस्ट भेल छी। मार्क्ससँ अधिक कम्युनिस्ट बनेबामे हमरा लेल भारतीय दर्शन प्रभावकारी अछि'। एहि बातकेँ ओ सब लोक स्वीकार करता जे हुनका मैथिली लेल दौड़ैत, लड़ैत, संघर्ष करैत देखने छथि। हुनका लेल जनकल्याण परिवारसँ पैघ छलनि। कहियो अपन परिवार दिस ध्यान नहि देलनि।

बातक क्रममे भोगेन्द्र जी एक दिन कहलनिः 'जनैत छी के. के.? हमर नेतागिरीक कोनो फायदा तँ हमर पुत्र सबकेँ नहि भेलनि, ओकर हानि जरूर भ गेलनि। कहियो कोनो गुप्त आ महत्वपूर्ण विभाग हमरा द्वारे हमरा बेटाकेँ नहि भेटैत छनि।' उचितो छलनि कहब। आखिर एक पिता अपन बात ककरो लग तँ बाजत ने?

अतेक कहीं सिम्प्लीसिटी भेलैक अछि? एक कम्युनिस्ट जीवन भरि गाँधीवादी विचारधाराक पोषक बनल रहल। सत्य आ अहिंसाक गुणगान करैत रहल। मोटका खादी धोती, दुसुत्ती खादीक कुर्ता, गोल गला गंजी, बंडी आ उपरसँ खादीक गमछा। इएह छलनि भोगेंद्र जीक जीवन भरिक ड्रेस कोड अथवा वस्त्र विन्यास। स्मरण नहि आबि रहल अछि जे एकर अतिरिक्त हुनका कहियो कोनो आन वस्त्र अथवा अही वस्त्रमे कनि ताम-झाम संग कतौ देखने होई!

राजनीतिक अलग चक्र चलैत छैक। लोक ओहि चक्रमे फसैत अछि। उबरैत अछि। नव समीकरण कखनो-कखनो सब किछुकेँ समाप्त क दैत छैक। एहने सन समयक फेरमे भोगेन्द्र जी सेहो फसलाह। उचिते फसलाह। सब दिन सीताक चर्च करब तँ सीताक दुखो ने सहब! चलू इतिहासमे चलैत छी संगे-संगे। 1976 मे मधुबनी लोकसभामे नब परसीमन लागू भेलै। 1976 मे

एक बात आरो भेलैक - पूर्वी लोकसभाक झंझारपुर नाम देल गेलैक, जकरा जयनगर लोकसभा कहल जाइत छलैक आब ओ मधुबनी लोकसभा क्षेत्र भ गेलैक। अहि परसीमनसँ झंझारपुरमे कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ इंडिया (सीपीआई) कमजोर भ गेलैक। जेना सब समीकरण ढनमना गेल हो! आब देखू की होइत छैक एकर परिणाम?

इमरजेंसीक बाद जनतादलक लहरि भेलैक, जाहिमे हुकुमदेव नारायण यादव चुनावमे विजयी भेलाह। भोगेंद्र जी चुनाव हारि गेलाह। आपसी कलहक कारण जनता दलमे टूट भेलैक आ 1980 ईस्वीमे मध्यावधि चुनावक घोषणा भेलैक। जनमानसमे एक बेर फेरो इंदिरा गाँधी लेल करुणा जागि गेलैक। परिणाम ई भेलैक जे कांग्रेसक उम्मीदवार सफिकुल्लाह अंसारी मधुबनी लोकसभासँ चुनाव जितलाह। अहि तरहेँ एक बेर जनतादलक लहरिमे भोगेंद्र जी, हुकुमदेव नारायण यादवसँ चुनाव हारलाह आ मध्यावधि चुनावमे 1980 मे इंदिरा लहरिमे कांग्रेसक उम्मीदवार सफिकुल्लाह अंसारीसँ। ताहिसँ की! ओ तँ निरंकार ऋषि छलाह। निष्काम भावसँ अपन काजमे लागल रहलाह - ने जीतक दम्भ होनि हुनका ने हारिक अपमान। सब दिन एक समान। ई कहब सहज छैक, मुदा एकरा जीवनमे आनब दुष्कर। भोगेंद्र जी अतबे सहजतासँ एकरा जीवनमे अनलथि। मानि लेलनि जे पांच वर्ष धरि जनजागरण अभियान, अध्ययन, मैथिली संस्कृतिक संरक्षण, गरीबक उत्थान हेतु काज आ पार्टी आ कैडरक निर्देशक पालन करैत रहताह।

भोगेंद्र जी लेल विधना किछु अलगे विधान लिखने छलथिन। चारिए मासमे तत्कालीन सांसद सफिकुल्लाह अंसारीक एकाएक निधन भ गेलनि। फेर चुनाव भेलैक आ भोगेंद्र जी एहि बेर ठोसगर मार्जिनसँ चुनाव जीतलनि आ अपन धोती, गमछा, कुरता आ बंडी संगे दिल्ली लेल बिदा भेलाह।

आब छल हुनकर लगातार विजय होबाक समय। 1980 सँ 1996 धरि मधुबनी लोकसभामे सबतरि ओ विद्यमान रहलनि। चुनाव लडैत रहलाह आ जीतैत रहला। मात्र 1984 मे इंदिरा गाँधीक नृशंस हत्याक कारण जनतामे कांग्रेसक प्रति जे भावनात्मक संवेदनाक लहरि उठलै ताहि लहरिमे भोगेंद्र जी सेहो उधिया गेलाह आ 1984 के बाद बला चुनाव हारि गेलाह। एकबेर फेरो बिना जीत हारक चिंता केने भोगेंद्र जी जनसरोकार अभियानमे लागि गेला। मूल मन्त्र एखनो एकै टा -

किए मस्तक को ऊँचा, रहे पराजय-जय में एक सामान ।
छीनते नही यहाँ के लोग कभी, उस बैरी का अभिमान ।।

भोगेंद्र जी लोकसँ तारतम्य बैसबैत रहलाह। लोकक बात सुनैत रहलाह। लोकक दुःख आ सुखक बुझैत रहलाह। पते नहि चललनि जे 5 बर्ष कोना बीत गेलैक। फेर 1989 मे चुनावक डंका बजलैक -

'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।'

भोगेन्द्र जी चुनावक तैय्यारीमे जुटि गेलाह। अपन भाषण कहियो मैथिली छोडि आन भाषामे नहि देलनि। लोक सबके नारा सेहो मैथिलीमे बनब आ बाजयके निवेदन करथि, निर्देश करथि। एक नारा जे एखनो स्मरण आबि रहल अछि ओ ई छलैकः

'उपजल गहुमक सीस मनोहर, ताहि पर हंसुआक धार।
जय कहू अन्नदाता के, जय किसान बोनिहार'।।

हुनकर किसान, मजदूर, बोनिहार, अन्नदाता सब अपन प्रिय, निष्ठावान, इमानदार नेताक चुनावमे मोहर लगा विजयी बनौलक। 1989क चुनाव नीक जकाँ जीत गेलाह। दिल्ली आबि गेलाह। दिल्लीमे पानि लेल, नदी लेल, नहरि लेल, बांध लेल, भारत आ नेपालक सहमतिसँ मिथिलाक कल्याण लेल आ मैथिली भाषाक अष्टम अनुसूचीमे स्थान दिएबाक लेल काज करैत रहलाह। गाड़ी-घोड़ा त छलनि नहि, ताहि पैरे-पैरे चलैत रहलाह। मिथिलाक अलख जगबैत रहलाह। ओहि पैरे बटोहीक तुलना कुनो महग कारमे बैसल लोक किन्नहु नहि क सकैत छल! ओहि पैरमे मैथिली माय केर अदृश्य घुघरू बान्हल रहैक आ कानमे विद्यापतिक माधबके बाँसुरीक टेर - घुघरूक झनकार आ माधबक बाँसुरीक टेरमे मस्त भेल मिथिला पुत्र भोगेंद्र जी चलैत रहैत छलाह।

1991 मे मध्यावधि चुनाव भेलैक। भोगेंद्र जी समरभूमिमे कूदि पड़लाह। हुनकर अस्त्र छलनि ईमानदारी, मैथिली भाषा आ नदीक जुड़ावक काज। जनता कखनो हुनका पर तामस करनि, कखनो हुनकर शिकायत करनि, कखनो हुनका नाम पर खौंझे अपन माथा कपार फोड़ै मुदा जखन वोटक बात भेलैक त सब पार्टीक समीकरण तोडैत भोगेंद्र जी कैं वोट देलकनि। परिणाम ई भेल जे भोगेंद्र जी 1991क लोकसभा चुनाव फेरो जीत गेलाह। दिल्लीक 34 गुरुद्वारा रकाबगंजक बंगला एहि मैथिल पुत्रक अभिवादन लेल ठाढ़ छल। भोगेंद्र जी सांसद बनि दिल्ली आबि गेलाह।

भोगेंद्र जीक कथाक आदि अंत बुझब बड़ असंभव! नव बात कहि लेब तँ पुरान प्रसंग आगामे ठाढ़ भ जायत। 1989क चुनाव जीतला बाद भोगेंद्र जी निर्णय लेलनि जे ओ लोकसभाक सांसदक सपथ मैथिलीमे लेताह। मैथिली तँ अष्टम अनुसूचीक भाषा नहि छल। फेर भोगेन्द्र जी एहि भाषामे कोना शपथ लितथि? भोगेन्द्र जीक तर्क छलनि; 'भले मैथिली राजनीतिक कारणे अष्टम अनुसूचीक भाषा नहि अछि, अछि तँ ई भारतक प्राचीनतम भाषा। तैं हम अपन मातृभाषामे शपथ लेब'। ओहि समय विश्वनाथ प्रताप सिंह भारतक प्रधानमंत्री छलाह। ओ भोगेंद्र जीक बहुत सम्मान करैत छलथिन। विश्वनाथ प्रताप सिंह तुरत लोकसभाक मातहत अधिकारीसँ बात केलनि। हिनकर मातृभाषा मैथिलीक प्रति समर्पण देखि मातहत अधिकारी एहि बात लेल सहमति द देलथिन जे ओ मैथिलीमे शपथ ल सकैत छथि। आब एक समस्या आबि गेलनि। समय कम छलनि। राति भरि जागि क सपथ पत्रक

अनुवाद करैत रहलाह। जखन अनुवाद भ गेलनि तँ अतेक आनन्दित भेला जेना जीवनक सर्वस्व भेट गेल होनि! एहि तरहे मैथिल पुत्र भोगेंद्र झा अपन लोकसभा सदस्यके पद आ गोपनीयताक शपथ भारतीय इतिहासमे प्रथम बेर अपन देसिल बयना, मैथिलीमे पढि एक इतिहास बनौलनि। 1991क चुनाव जीतला बाद सेहो भोगेंद्र जी शपथ मैथिलीमे लेलनि।

भोगेंद्र जी ओना त अपन पार्टीक अनुशासित सिपाही छलाह मुदा किछु विशेष क्षणमे जखन लगलनि जे वोटक राजनीतिक कुचक्रमे फँसि, पार्टी गलत दिशा दिस जा रहल अछि जे अनैतिक आ मर्यादाक बिपरीत छैक, तँ अपन आत्माक अवाज़सँ काज लेलनि। हार-जीतक भावसँ उपर उठि गेलाह। एकर दुष्परिणाम भोगय पड़लनि। उदाहरण बहुत अछि मुदा एक उदाहरण जे हुनकर लोकसभामे घुसबाक बाट सदाक लेल बंद क देलकनि, तकर जिक्र करब अनिवार्य। अगर एहि बातक चर्च नहि भेल त भोगेन्द्र झा क व्यक्तित्व बुझब आ हुनका पर चर्च करब व्यर्थ। 1996 ईस्वीमे चारा घोटालाक चर्च चहुँदिस रहैक। भोगेन्द्र जीक इमानदार ह्मदय जेना झकझोरि देलकनि। फेर की, ने आव देखला ने ताव, आन ठाम के की बात, झट दनि सोझे संसद परिसरमे लालू प्रसाद यादवक चारा घोटाला कांडक विरोधमे अनशन पर बैसि गेलाह। ई डेग भोगेन्द्र जीक राजनीतिक यात्रा आ संसद भवनमे हुनकर प्रवेश लेल पटाक्षेप क देलकनि। ईमानदारीसँ लेल गेल डेगक अतेक पैघ सजा अपना आपकेँ जातिहीन, धर्महीन, वर्गहीन पार्टी कहय बला दल द सकैत अछि तकर कल्पनो नहि कएल जा सकैत छल! मुदा सत्य तँ सएह छल। बिहारमे राष्ट्रीय जनता दल (राजद) आ सीपीआई केर बीच चुनावी गठबन्धन भेलैक। तामसे आमिल पीने लालू प्रसाद यादव अपन आ पार्टीक प्रभुत्व देखबैत टिकट बट्बारामे भोगेंद्र जीक नाम काटि देलथिन। मधुबनी लोकसभासँ भोगेंद्र जीक राजनीतिक शिष्य कॉमरेड चतुरानन मिश्रकेँ सीपीआई दिससँ टिकट भेटलनि। चतुरानन जी जनताक वोटसँ कम आ गठबन्धनक वोटक अधिक प्रभावसँ जीत गेलाह। लालू प्रसादक छत्रछाया बनल रहलै। लोकके भोगेंद्र जीक कमी खटकैत रहलै। मजदूर, किसान, जनता सब नहु-नहु सीपीआई सँ विमुख होबय लागल। भोगेंद्र जी सिद्ध ऋषि छलाह। चुप रहलाह। 1996क बाद कहियो सीपीआई मधुबनीसँ चुनाव नहि जीत सकल। अपन कएल गेल पापकेँ पार्टी भोगैत रहल जेना भोगेन्द्र जीक श्राप लागि गेल हो?

भोगेंद्र जी पार्टीक नीति, सत्ताक प्रति एकाएक उमरल लोभ आदिसँ दुखी रहैत छलाह। आजुक आयाराम-गयाराम नेता जकाँ नहि छलाह; ताहि अतेक भेलाक बादो पार्टी संगे अपन संबंध नहि विच्छेद केलनि। पार्टीक समर्पित सिपाही बनल रहलाह। जीवनक अन्तिम साँस धरि।

भोगेंद्र जी स्कूलमे पढैत छलाह ताहि समय धकजरीमे एक जमींदार ओतय एक गरीब मजदुरक शोषण अपना आंखिसँ देखलनि। व्यवस्थाक प्रति ह्मदय चिचिया-चिचिया क विरोध करय लगलनि। आ ओही दिनसँ भोगेंद्र झासँ कॉमरेड भोगेन्द्र झा भ गेल छलाह। स्वतंत्रता सेनानी त छलाहे।

दोसर प्रसंग फेरो हुनकर मैथिली भाषामे भाषण आ मैथिली भाषासँ अगाध प्रेमसँ सम्बंधित अछि। एकर वर्णन ऐतिहासिक स्र्यैं महत्वपूर्ण अछि। एक बेर भोगेंद्र जी मधुबनीक मुसलमान बहुल क्षेत्र भौआरामे भाषण दैत छलाह। भोगेन्द्र जी केर भाषण तँ मैथिलीमे छल हएत। एकाएक भीड़मे सँ किछु युवक भाषणक बीचमे बाजि उठलः 'भोगेन्द्र बाबू, मैथिली ना चलत। हिन्दीमे बोलू!'

भोगेन्द्र जी पूर्ण निरगुनक लोक रहथि। हँसैत बजलाः 'बाह! अहाँ अपने मैथिलीमे बाजू आ हमरा कहैत छी हिन्दीमे बोलू? से कोना हैत? हम अहाँक भाषामे बोलब।'

युवक सब सेहो जेना अडि गेल। आब हिंदीमे बाजलः 'हिंदी में भाषण दीजिये, हिंदी मे।'

मुदा भोगेंद्र जी मैथिलीमे बजैत रहलाह। अंतमे तामसे घोर होइत युवक सब भोगेन्द्र जीकें डर देखबैत बाजलः 'अगर हिंदी मे नही भाषण दीजियेगा तो एक भी मुसलमान का वोट नही मिलेगा। सोच लीजिये भोगेन्द्र बाबू क्या करना है?'

भोगेंद्र जी बिना कुनो राग द्वेष के बजलाः 'हम तँ मैथिली छोडि आन भाषामे अपन भाषण नहि देब। अगर अहाँ सब नहि वोट देमय चाहैत छी तँ नहि देब, मुदा हमर भाव अटल अछि'। दुर्भाग्यसँ भोगेन्द्र जी ओ चुनाव हारि गेलाह। मुदा एहिसँ भोगेन्द्र जी सन सधल सिद्धांतवादीक कुन फ़र्क पड़ैत छैक? भाषाक नाम पर एम जी रामचन्द्रन, करूणानिधि, जयललिता, ठाकरे परिवारक लोक कत सं कत चलि गेल मुदा हमरालोकनि अपन विवेक भोगेंद्र जी लेल कत छोडि अयलहुँ???

नश्वर शरीरक त्यागः ई वसुधा ककरो कहाँ बनेलक अछि अमृतपुत्र?

भोगेंद्र जी आत्मबलसँ जीबैत छलाह, दैहिक बले नहि। 87 बरखक अवस्थामे जीर्ण कायासँ निधोख भेल दरभंगा, मधुबनी, पटना, दिल्लीक यात्रा करैत रहलाह। मधुमेहकेँ कहैत रहलथिन : 'जतेक उत्पात मचेबाक छौ मचा ले। हमर यात्रा जीवनक अन्तिम साँस धरि चलैत रहतौ। जिद्दी तोरासँ रे मधुमेह, हम अधिक छी। तों की सकबैं हमरासं?' आ, दैवक चमत्कार देखू, सएह भेलनि। 11 जनवरी 2009क दिन संजीव झा नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर अपन पत्नी संग कतो यात्राक उद्देश्यसँ ठाढ़ छलाह। हुनकर दृष्टि एक असहाय बूढ़ पर गेलनि जे कदाचित सीढी चढ़बामे असमर्थ बुझेलनि। ओ झट द ओहि बुजुर्ग लग मदति करबाक भावनासँ पहुँच गेलाह।

संजीव पुछलथिनः 'बाबा! हम मदति क दैत छी?'

बुढाः 'हौ बौआ, पानि पियाबह? बड़ जोर पियास लागल अछि।'

संजीव तुरत एक बोतल पानि आनि देलथिन। कृशकाय शरीरधारीक बोल एकाएक संजीव पहिचानि गेलाह। 'हे भगवान! ई तँ भोगेंद्र झा छथि!' संजीव सोचलनि। तुरत चरण स्पर्श केलथिन आ अपन परिचय दैत कहलथिनः 'बाबा, हम विजय चन्द्र झा क जेठ बालक संजीव छी। चलू हमर डेरा पर। हम फोनसँ बाबूजीकेँ बजा दैत छी?'

भोगेंद्र जीः 'नहि हमरा मधुबनी एक केसक मादे जएबाक अछि। हम चलि जाएब। हमर आरक्षण भेल अछि। हमरा भूख लागल अछि। किछु खेबाक इच्छा भ रहल अछि।'

संजीवः 'ठीक छै बाबा। की खैब?'

भोगेंद्र जीः 'दालि भात तरकारी खेबाक इच्छा अछि। आनि सकैत छह?-

'हाँ बाबा देखैत छी।' से कहैत संजीव अपन पत्नीकेँ हाँक देलनि। कहलथिन 'की बटखर्चा अछि?' संजीवक पत्नी कहलथिन, 'पूरी तरकारी'। आब संजीव तमसा गेलाह। 'ई की आनि लेलौ?' बाबाक तँ भातक इच्छा छनि!'

भोगेंद्र जी बीचहिमे बाजि उठलाहः 'कोनो बात नहि। तोहर घरमे लक्ष्मीक वास छह। हिनकर हाथक चीज़ अपूर्व हेतैक। लाबह पूरी तरकारी।'

संजीव पूरी तरकारी देमय लगलथिन। भोगेंद्र जी 6 पूरी आ तरकारी अपने हाथे ल लेलथिन। 4 टा अपने लेला आ 2 टा पूरी आ तरकारी अपना संगक व्यक्ति के देलथिन। खूब ह्मदयसँ संजीव आ हुनक पत्नीकेँ आशीर्वाद देलथिन। फोनसँ संजीवक माए कृष्णा झासँ सेहो गप्प केलनि। कहलथिनः 'अहाँ बड़ भाग्यशाली छी जे एहेन बेटा पुतोहू भेटल अछि जे राति दिन अहाँक सेवा करैत अछि।' अपन जीवन मृत्युसँ संघर्ष करैत डैलेसिस पर जीबैत कृष्णा जीक जीवन किछु दिन आरो जीबक जेना भोगेंद्र जीक बात सुनि वरदान भेट गेलनि! विजय चन्द्र झासँ सेहो गप्प केलथिन। सब कियो हुनका निवेदन केलथिन जे दरभंगा नहि जा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान दिल्लीमे भर्ती भ जाथि। भोगेन्द्र जी ककरो सुनयनबला थोड़े ने छलाह? चलि देलनि तँ चलि देलनि - 'मै तो रमता जोगी राम'। विजय चन्द्र झाक आत्मा जेना कानि उठलनि। तमसाइत बाजि उठलाहः 'जाऊ, अपटी खेतमे प्राण खतम करू। ई अहाँ आ हमरा सबहक बीच कहीं अन्तिम वार्ता ने भ जाय!' ताहिसँ की? भोगेन्द्र जी बिदा भ गेलाह दरभंगा। संजीव हुनकर घावसँ बहैत शोनित पोछि देलथिन। मुह पानिसँ धो देलथिन।

ट्रेन जखन उत्तर प्रदेशक बलिया स्टेशन गेलैक तँ हिनकर स्थिति बहुत खराप भ गेलनि। हुनका साँस लेबामे दिक्कत होनि आ देहक दहिना भागमे लकवा सेहो मारि देलकनि। संयोगसँ ओही ट्रेनसँ जनेश्वर मिश्र यात्रा करैत छलाह। हिनका तुरत प्राथमिक उपचार कराओल गेल। मधुबनीक डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेटकें फोन कएल गेलैक। पार्टी ऑफिसमे सूचना गेलैक। हिनका दोसर ट्रेनसँ उतारि बलियाक स्थानीय अस्पतालमे भर्ती कराएल गेलनि। 13 जनवरी कऽ दरभंगा मेडिकल कॉलेजमे स्थानांतरित कएल गेलनि। तावेत धरि बेहोश भ गेल रहथि। दरभंगामे हालतमे कोनो सुधार नहि भेलनि। अंतमे दिल्ली अनबाक निर्णय भेलैक। बिहार भवनसँ गाड़ी रेलवे स्टेशन पर ठाढ़ रहैक। तुरत भोगेंद्र जीकेँ दिल्लीक अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थानमे आनि भरती कएल गेल। इलाज चालू भेलैक। एक त अधिक उम्र, दोसर अतेक रुग्णता। फेरो आंखि नहि तकलनि। अंततः 21 जनवरी 2009 ई. क 87 वर्षक दीर्घ अवस्थामे मैथिल पुत्र अहि धराकेँ छोड़ि ओहि लोकक यात्रामे चल गेलाह। हुनक मृत शरीरकेँ मधुबनी ल गेलनि लोक। समस्त इलाकामे गाड़ी घुमल। जनताक नेताकेँ जनता कनैत गर्म गर्म नोरसँ निहारैत रहल। हिनक पैतृक गाम बरहामे अन्तिम संस्कार भेलनि। बरहा गामक माटिमे 9 अगस्त 1922 ईस्वी क जनमल बच्चा भोगेंद्र, आब महान भोगेंद्र, मिथिला मैथिलीक शान, कॉमरेड भोगेंद्रक नामसँ बिख्यात भेलाक बाद पुनः अही गामक माटिमे अग्निमे विलीन होबाक हेतु पार्थिव शरीर संग उपस्थित छलाह। शांत भेल - बिना कोनो उचा-बर्च के! नश्वर शरीर अग्निमे विलीन भ गेलनि। एक युगक अंत भ गेल। जनताकेँ बुझल रहैक 'लोक तँ धरती पर अबैत अछि, जाइत अछि मुदा एहेन लोक कहाँ अबैत छैक?' ओ जीवित मानव धरोहर छलाह। ओ हम्मर, हिनकर, अहाँक, हुनकर, सबहक छलाह। भोगेंद्र जीक ईमानदारी, मैथिलीक प्रति सिनेह, पानिक समस्याक चिंता किछु एहेन तथ्य अछि जकरा सब कियो, सब पार्टी, सब विचारधाराक लोक पसिन करैत छल। आइओ हुनकर नाम लैत एक सहज, इमानदार, कर्मठ आ निष्काम सेवकक छवि मोटका खद्दरक धोती, कुर्ता, गमछा, बंडी धारण केने उभरैत अछि। हमरा तँ लगैत अछि जे जनक एहने छल हेताह, तैं ने विदेह भ गेलाह!

भोगेंद्र जीक मिथिला सँ आ एतएक संस्कृतिसँ कतेक प्रेम छलनि तकर एक बानगी हमरा स्वर्गीय प्रोफेसर हेतुकर झा सुनेलनि। जखन पहिल चुनाव भोगेंद्र बाबू कांग्रेसक प्रतिनिधिकें ध्वस्त करैत जीत गेलाह तँ सोझेदरभंगा महाराज कामेश्वर सिंह लग गेलाह आ कहलथिन्हः 'सरकार, आई हम कॉंग्रेससँ अहाँक अपमानक बदला चुका लेलहुं।' ई सुनैत महाराज भाव विह्वल होइत भोगेंद्र जीकेँ ह्मदयसँ सटा लेलथिन। ई छलाह भोगेन्द्र जी आ हुनकर मैथिली संस्कृतिसँ सिनेह।

पितृव्य भोगेन्द्र जी के हमर विनम्र नमन....

संपर्क : 80762 08498

प्रबोध नारायण सिंह

•*डॉ. सत्येन्द्र सुमन* (*व्याख्याता*)

जीवन मे घटित कोनो एहन विशेष प्रकारक घटना भरि जीवन बिसराइत नहि अछि।

आइ सँ लगभग चारि दशक पूर्व जखन हम स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया में पंचम वर्षक विद्यार्थी छलहुँ, तखन हमरा डॉ. प्रबोध नारायण सिंह, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता सँ भेंट करय कँ सुअवसर भेंटल छल।

हमर नेतृत्व मे दस गोट विद्यार्थीक जत्था परिभ्रमणक क्रम मे विश्वभारती शांति निकेतन सं होइत कलकत्ता विश्वविद्यालय गेल छल। शांति निकेतन हिन्दी विभागक आचार्य ओ अध्यक्ष डॉ. राम सिंह तोमरक दर्शनक लाभ लैत हमरा सभ डॉ. प्रबोध बाबूक दर्शन कर गेलहु।



डॉ. प्रबोध नारायण सिंह
(12.02.1924 – 02.03.2005)

प्रबोध बाबू हिन्दी विभागक अपन कक्ष मे बैसल छलाह। सभ विद्यार्थीगण ओतय जाए क्रमबद्ध भ क हुनक चरण-वंदन कएने छलाह। सभ सँ ओ नाम-पता पुछने रहथि। विभागीय गुरू-शिष्य होमय कारण हमरा सभक मध्य एकटा विशेष निजताक बोध भ गेल छल। ताहि सँ बेशी जे हम सभ गोटे बिहारक मूल निवासी छलहुँ। एतय ईं कहय मे हमरा कोनो संकोच नहि जे प्रबोध बाबू ओहि काल मे हमर विश्वविद्यालय कँ हिन्दी एम.ए. परीक्षाक परीक्षक सेहो होइत रहथि। तँ चरण-वंदन मे हमरा सभक लोभ सेहो समाहित भेल छल। हम लघुशंका करय कँ बहाना बना ओतय सं घसकि गेल रही। हम ताबत धरि इएह कक्ष मे प्रवेश नहि कएने रही जाबत धरि सभ गोटेक परिचय समाप्त नहि भ चुकल छल। हम अपन परिचय देमय लगलहुँ। नाम - सत्येन्द्र कुमार सिंह, हाल-मोकाम-गाम-सैदनपुर मसाढ़ी, जिला-पटना। हिन्दी प्रतिष्ठा मे हम प्रथम श्रेणी मे उच्च स्थान पएने छी। कविता, कहानी, नाटक सेहो लिखय छी। हाँ, अलबत्ता नाम कहय काल हम सत्येन्द्र कुमार धरिक उच्चारण तँ सामान्य रीतिए कइने रहि किन्तु सिंह क उच्चारण मे बलाघात कएने छलहुँ। भाषा विज्ञानक प्रकांड विद्वान प्रबोध बाबू हमर भावक आशय समझि-बूझि किछु नहि कहलनि तइयो ओ मंद-मंद हंसैत एतबे अवश्य बाजलखिन- एहि भावनाक विकास करैत आगू बढ़ू, भविष्य उज्ज्वल भ जाएत। फेर ओ पूछलनि- 'अहाँक गाम सैदनपुर भेल कि मसाढ़ी?

जी, हिन्दीक प्रकांड विद्वान आचार्य केसरी कुमारक गाम। रिश्ता मे ओ बड़ चाचा लगैत छथि।' सगर्व हम कहने रही किएक तँ किछु लोभ समायल छल। हम सफेद झूठ बाजि गेल रही। केसरी बाबूक नाम सँ हमर किछु विशेष प्रभाव हिनका लग जमैत, तँ कारणे हम अपन गाम मसाढ़ी कँ विलोपित करि कँ सैदनपुर गाम वासी केसरी बाबूक चर्चा कएने छली। मुदा ओ सभ जानैत छलाह।

विद्यार्थी दल कँ सभ गोटेक जलपान-चाय कराबय लेल ओ चपरासी कँ आदेश देने रहथि। एहि मध्य हमरा प्रति हुनक विशेष दृष्टि जेना निजता बोध करा रहल छल। ओ कहने रहथि- "अहाँक देखि कँ हम बुझने रहिअइ जे मिथिलाक लोग छी किन्तु अहाँ खाँटी मगध छी।"

"मिथिला सँ तँ हमरा दूर-दूर धरि कोनो सम्बन्ध नहि अछि।"

"किए, मिथिलाक भाषा आं संस्कृति अहाँ के नीक नहि लगैत अछि।"

"नहि-नहि। दुनू महान अछि। मुदा हम मैथिली भाषा नहि जानैत छी।"

"झूठ, सरासर झूठ। अहाँ विद्यापतिक पदावलीक रीति काव्यात्मक अध्ययन' पर लघु शोध-प्रबंध लिखि रहल छी। एक माह पूर्व हम अहाँक हिन्दी विभाग मे पीएच.डी.क मौखिकी परीक्षा लेबय लेल गेल रही, तखन पता चलल रहय। विद्यापति पर शोध कयनिहार मिथिलाक संस्कृति आर मैथिली भाषा सँ विलग नहि रहि सकैत अछि।

नवीन भाव बिचार, गहन अनुभूति, आशा-अकांक्षा, कल्पना-बिम्ब आओर गंभीर संवेदना लेने हम ओहि काल ओतय सँ विदा भेल छलहुँ। आइ प्रबोध बाबू हमरा सभक लग नहि छथिन तइयो हुनक विशाल व्यक्तित्व आ उदात्त चरित्र हमर मोन-मस्तिष्क कँ ज्वार-भाटा जकाँ उद्वेलित करि रहल अछि।

प्रबोध बाबूक प्रखर बुद्धिमता, दूरदर्षिता, छिपल मेधा खोजय वला मेधाविता, विपुल तेजस्विता आदिक संपदा आइ दुर्लभ भ' गेल अछि। सौभाग्यः स प्राप्त हुनक आशीवार्द आइयो हमर कवच-कुंडल बनल अछि।

हुनक स्मृति कँ शत-शत नमन।

इतिहासकार प्रोफेसर द्विजेन्द्र नारायण झा

●राधा माधव *(अध्यापक)**



04 फरवरी 2021 कें सायंकाल आदरणीय प्रोफेसर द्विजेन्द्र नारायण झा एहि नश्वर शरीर कें त्यागि चिरशून्य मे विलिन भ गेलाह।

कलकत्ताक प्रेसिडेंसी कॉलेज सँ बी.ए. (आनर्स) इतिहास कय, पटना विश्वविधयालय सँ एम. ए. , पी. एच. डी. कयलनि आ धुरंधर इतिहासकार , आदरणीय श्रीयुत रामशरण शर्मा जीक नेतृत्व में रेभेन्यू सिस्टम इन पोस्ट मौर्य एवं गुप्तकाल पर अपन पोस्ट- डॉक्टोरल थिसिस पर डॉक्टरेट प्राप्त कयलनि। प्रेसिडेंसी प्रवास सँ झा साहेब इतिहासक मार्क्सवादी व्याख्या संग बंगला भाषा मे मातृभाषा सदृश सहजता प्राप्त कयलनि। झा साहेब पटना स्कूल ऑफ हिस्टोरियंसक परम्पराक अग्रणी ओ यशस्वी इतिहासकार रहथि आ बिहार- मिथिलाक तीन-चारि टा महान रत्न इतिहासकार (श्री उपेंद्र ठाकुर , श्री रामशरण शर्मा, श्री राधाकृष्ण चौधरी आ श्री विजय कुमार ठाकुर) के परंपरा में बहुत शीर्षस्थान पर बिराजैत छथि।

हुनकर प्रथम इतिहासग्रंथ 'Revenue System in Post Maurya and gupta Times' कलकत्ताक पोथी पुष्तक सँ 1968 प्रकाशित भेलनि जाहि पर शीघ्रहि अप्रैल 1968 में रोमिला थापर लंदन सँ अपन रिभ्यू छपौलनी। 1977 में एनशिएन्ट इंडियाः एन इंट्रोडक्टरी आउटलाइन (दिल्ली) छपलनि जे दिल्ली विश्वविद्यालयक बी. ए. इतिहास ऑनर्स क सिलेबस के सेहो छुबैत छलैक, बहुत प्रसिद्ध भेलैक, बड्ड बिकलैक आ तकरे विस्तृत रूप 1997-98 मे एनशिएन्ट इंडियाः इन हिस्टोरिकल आउटलाइन छपलैक। एहि ग्रंथ मे प्राचीन भारत आ मध्यकालीन भारतक शुरुआत, जेकरा मार्क्सवादी इतिहासकार लोकनि छठम-आठम शताब्दी मानैत छथिन, तक भारतक सामाजिक-आर्थिक ओ सांस्कृतिक विकास के रेखांकित कयलखिन जे राज्यक निर्माण मे भौतिक तत्व ओ आधार कतेक दूर धरि भूमिका निभौलकैक। 1979 में स्टडीज इन आल इंडियन इकोनोमिक हिस्ट्री छपलनि। 1993 मे इकोनोमी एन्ड सोसायटी इन अर्ली इंडियाः इस्सूज एंड पैराडाइज्म आ 1996 मे सोसायटी एन्ड ऑडियोलॉजी इन इंडियाः एश्शेज इन ऑनर ऑफ प्रोफेसर आर.एस.शर्मा, छपलनि। 1987 मे एकटा संपादित पुस्तक अयलनि 'फ्यूडल सोशल फारमेशन इन अर्ली इंडिया' जाहि मे विद्वतापूर्ण भूमिका मे शर्माजी द्वारा स्थापित 'भारत मे सामन्तवाद' के ऐतिहासिक उत्पत्ति सम्बन्धी विभिन्न इतिहासकार लोकनिक खण्डन-मण्डन कय आर.एस.शर्मा - बी.एन.एस यादव - डी.एन.झा त्रय द्वारा सामन्तवादक सिद्धान्तक भित्ति के आर मजगूत कयलखिन। यैह विचार पुनः 2000 ई. मे 'द फ्यूडल ऑर्डर : स्टेट, सोसायटी एण्ड आइडियोलोजी इन अर्ली मेडिएवल इंडिया' नामक पुस्तक मे देखाइछ जाहि मे 20 टा विशिष्ट इतिहासकार लोकनिक लेख लेलखिन आ भूमिका मे भारत मे सामन्तवाद (5th-6th cen. AD सँ 10th-12th cen.) केर उत्पत्तिक की की कारण छल से वर्णित अछि। एहि मे प्रमुख अवधारणा अछि, शर्मा द्वारा उपस्थापित ' कलयुग-संकट'। एकरा अनुसार, राजा लोकनि, सैन्य- अधिकारी एवं ब्रह्मण के भूमिदान केलनि। ई दान , हुनका लोकनि के आर्थिक- राजनीतिक- न्यायिक अधिकार संग देल गेलनि। जाहि स ओ सब राजा ओ कृषक- समुदाय क बीच शक्ति संपन्न सामंत बनि गेलाह आ राजाक शक्ति विकेन्द्रित भेलैक।

मुदा जे ग्रन्थ झा साहेब के सबस बेसी विवादित इतिहासकार बनओल क से छल 2001-02 मे छपैबला 'The Myth of the Holy Cow ; London आ 2004 में Holy Cow : Beef in Indian Dietary Traditions। 2005-06 मे झा साहेब विश्वभारती विश्वविद्यालय, शान्तिनिकेतनक इंडियन हिस्ट्री कॉग्रेसक जेनेरल प्रेसिडेन्ट चुनल गेल रहथि। संगे कलकत्ता मे साहित्यकार राजकमल चौधरी संग जीयल जीवनक खूब चर्च करैत रहथि। निगम बोधघाट मे शव दाह स्थल। हुनकर भागिन आ हमर मित्र बिरेन्द्र झा कहलनि, 'जे आई कैक मास सँ 'हौहैंठीवाली गाम ल चल... हौ हैंठीवाली जायब।' गाम देखबाक बड्ड मोन होइन। मुदा हैंठीवाली गाम आ बिदेसरथान देखनाई संभव नै भेलनि। हम आदरणीय झा साहेब कें अपन व्यक्तित्वक निर्माण मे सहायक बनबाक हेतु ह्रदय सं आभार व्यक्त करै छियनि। हुनकर यश चिरस्थायी छइन्ह।

सम्पर्क : 98213 98999

**सिनियर एशोसिएट प्रोफेसर दिल्ली विश्वविद्यालय*

चिनगी आन्दोलन ओ त्याग

● *मनोज पाठक*

चिनगी उठय
वयस्क ओ बुढायल सोनितमे आवश्यक नहि।

रेवाज अछि पुरान
अइ देशक।

बुढायल वाजश्रवा
सत्तामे धंसल, कुर्सीमे फंसल
करै छथि राज,
चलबै छथि पाट
ओ यज्ञमे
दान दै छथि बुढायल गाय।

अपन बुढायल बापके
अधर्मसं बचेबाक लेल
चिनगी चमकल छल
पुत्र नचिकेताक करेजमे
आ
पिताक आदेश पर
मृत्युके दुआरि पर
निधोख पहुंचि गेल छलाह नचिकेता

आ
नाचिकेत अग्नि।

आइ तक बनल अछि
प्रतिमान

चिनगी, धधरा, आन्दोलन ओ आत्म आहुतिक।।

चिनगी बनैत अछि धधरा अवश्य
सत्तामे धंसल कठहंसी
मूक होइत छैक अवश्य

चिल्होरि जे बनैछ कंठीधारी
बगुलाक बाना ध
हंस स्वरूप अभिनयसं करैछ मोहित
बेर बेर।

मुदा ई अभिनय
कालक कसौटी पर
जखन परखल जाइत अछि
सत्तामे अटकल
स्वार्थ नीति
लोकविरूद्ध जा
अपन गति
प्राप्त करैछ अवश्य।।

ई देश
ई कोस ,
पग पग भूमि
एतुका
सिन्चित भेल अछि
त्यागसं

बनल अछि
एहि भारतक भूमि
अदौ कालसं
त्यागसं

त्यागे टा सर्वोपरि शक्ति
अजर अमर
एहि संस्कृतिक

त्यागे सं नान्हिटा नचिकेता
केने छलाह अपन कुलक उद्धार।

त्याग
ओ
आहूतिये सं
दधीचिक प्राण ओ अस्थि
निर्मित कयने छल
अमोघ अस्त्र
बज्र सारंग ओ पिनाक।

त्यागेसं
सिद्धार्थ बनलाह तथागत
देलनि आधुनिक विश्वके
एक नव जीवन दृष्टि।

त्यागे पर टिकल अछि
वर्तमान
सनातन भारतीय संस्कृति।

के मतिभ्रमी
बिसरत
तेगबहादुरक आत्म बलिदान?

त्याग
घर छोड़लासं
वा
परिवार छोडलासं
नहि होइत छैक।

त्यागब आवश्यक होइत छैक
अपन वृत्ति
अपन वासना
अपन पूर्व संस्कार
अनन्त भोगक लिप्सा।

नचिकेत
अग्निक वाहक
गोविन्द राय देने रहथि
पहिल आहुति अपन पिताक
तत्पश्चात
अपन निज रक्त संतानक
आजीवन
धेने रहला बाना
पंच ककार, पंच प्यारे
करैत रहला त्याग।

आ बांजल रहल
सनातन भारतीय धर्म ओ संस्कृति
जीबैत रहल अपन वैविध्यमे।।

त्याग
सर्वोपरि शक्ति अदौ कालसं

महा शक्तिशाली
भगवती गायत्रीक अवगाहक
विश्वामित्र
ताबति धरि रहला पराजित
जाबति धरि त्यागल नहि
राज शक्ति पर आश्रित
अपन बुद्धि, मेधा ओ वृत्ति।

सत्तामे धंसल आपादमस्तक
भ्रममे फंसल कठहंसी
मूक होयत अवश्य

ध्यान रहय बगुलाभगत
त्याग
अभिनयसं नहि
भेस धेलासं नहि
मोन कर्म आ वचनसं
एकरूप भेलासं होइ छैक।

कालक कसौटी
भेस आ बानाक करै छैक फैसला

चिल्होरि बनल बगुला
अपन गति प्राप्त अवश्य।।

सम्पर्क : 98103 25390

बिप्लव

• रामलोचन ठाकुर

श्रीमान बेताल राजक पैर थकमका गेलनि। पार्क लेकादि मे छौंड़ा -छौंडीक लीला ओ देखि चुकल छलाह. परंच एत्तौ से आरम्भ भ जायत तकर कल्पनो नइ केने छलाह। बम्बे डाईंगक प्रिंटक हाइ-कलर कुर्ता आ प्रिन्ट लूंगीक परिधान आ बब कट केश राशि विनु तेलक हवा मे उड़िआइत, ठेहुन पर माथ झुकेने जेना कोनो अभिसारिका अपन प्रेमीक प्रतीक्षा मे बैसल हो। हुनका अपना आंखि पर सन्देह भेलनि त जेबी स अपन जीड़ो पावरक चश्मा बहार क पहीर नीक जकां देखलनि।

-हलो मिस्टर बैताल!

-अरे! विक्रमादित्य तों? कह की हाल-चाल?

-भाइ बड़ पैघ समस्या आबि गेलए।

-समस्या!

-हं, सभ विरोधी-ए भ गेलए। समस्त जनता हमरा विरोध मे संगठन केलकए। ओ सभ हमरा विरोध मे सभा करे-ए, नारा लगबैए आ हमला कर चाहैए। हम त आब नीक जकां घुमियो-फीरि ने सकै छी।

-ओ समस्या त ठीके पैघ छैंक किन्तु घबरेबाक प्रयोजन नहि। हम त छिहे।

मिस्टर बैताल अपन पाइप **धरौलनि** आ दुकन्हा पर,जा के बैसि गेलाह। विक्रमादित्य सेहो जेबी स बोतल निकालि एक घोंट देलथिन आ एुनः सिगरेट लेसलनि।

मिस्टर विक्रमादित्य! आब त तों बोतल-सेवन सेहो करे छ तखन ई साधारण समस्या स घबड़ायब?

—आखिर बात की छइ से नहि बुझल **मीता**। डाक्टरक परामर्श स स्वास्थ रक्षार्थ एकर शरणागत भेल छी हम।

-खैर बात जे होउक। ध्यान स सुनह। आइ हम तोरा ओही डॉक्टर व्यास विरचित 'वृहदारण्य पुराण के एगो लघुकथा सुना रहल छियह

-खिस्सा!

-हं, हमरा आशा अइ जे तोहर समस्याक समाधान ओकरा द्वारा भ जेतह। पहिने आब एगो समाचार द दियह-मिस्टर व्यास के सहित्य-शिरोमणिक उपाधि हाले मे **भेटलनिहैं**।

-ओ कि जिबीते छथि?

-भारतीय दर्शनक अनुसार आत्मा अमर होइछै ने। खैर आबे कथा सुनह। एकर शीर्षक थिक 'बिप्लव'।

-सी. बी. आइ. प्रधान कौआ कुमार कानगोई, जंगलाधिपति श्रीमान 108 शेर सिंह के समाद देलकनि जे समस्त बनैया जानबर मिलि क एगो संघक स्थापना केलकए आ सब दिन कोनो ने कोनो मिटिंग करैए। जनता के सरकारक विरोध मे भड़काओल जाइए सरकारक सभ दोखक भंडा फोड़ क चुकलए। शेर सिंह के तकर बाद उकासी बन्न। सात दिन तक अपन गुफा गहवर स बहरो नहि भेलाह। कौआ दिनानुदिनक समाद कहि जाथिन। मुदा भूख स छटपटाय लगलाह त एक दिन अपन प्राइवेट सेक्रेटरी चमचा प्रधान श्रीमान **शृगाल** शर्मा आ कौआक संग विचार विमर्श केलनि। दोसर दिन प्राते एगो बकरी के 'किडनैप्ड' क लेल गेल। सांझ होइत-होइत ई खबरि समस्त जंगल मे दावानल जकां पसरि गेल। दोसर दिन समाचार पत्र सभ मे सेहो छपल आ साझखन विराट प्रोसेशन बहार भेल राजभवन दिस। जखन राजभवन लग पहुंचल त शेर सिंहक अवस्था शोचनीय। काटू त खून नहि। ओ अपन प्राइवेट सेक्रेटरी आ कौआ स विचार केलनि आ तदनुसार श्रीमान **शृगाल** शर्मा उपस्थित भेला प्रोसेशनकारी समक्ष आ कनिए कालक बाद मुस्काइत शेर सिंह लग हाजिर भेलाह। तुरंते **किडनैप्ड** बकरी के आनल गेल आ शेर सिंह ओकरा गरदनि पर प्रहार केलनि। टटका रक्त मांस स उदर भरि चैन सँ राति भरि सुतलाह। तकर बाद स रोजाना एक दू गोट बकरी, हरिण क हरण होइत रहल आ विरोधी सभ प्रोसेशन बहार करैत रहल। कहियो **शृगाल** आ कहियो शेर सिंह स्वयं ओकरा समक्ष उपस्थित भ भाषण द सम्मान पत्र ग्रहण करैत रहलाह।

कहियो काल कोनो चमचा के प्रधान बना कोनो कमोशन बैसा देल गले हरण वा मरण केस के जांच करबाक निमित्त। सी. बी. आइ. क कार्य व्यस्तता बढ़ि गेल। शेर सिंह चैनक बंसुरी टैरैत रहलाह। ई क्रम चलैत रहल।

-वाह मोता वाह। कमाल के कथा कहलह। हमरा त ओइ डाक्टर व्यास के लेखनी चुमि लेवाक मन होइए -विक्रमादित्य पोन झारैत बजलाह।

-सत्ते पैघ डिगरी ओहिना नहि भेटै छैक योर आनर। हमर विचार अइ जे हुनका एक दिन बजा प्रीतिभोज भोज देल जाय। एखन हमरा स्टाक मे भेंट 69 आ ओल्ड स्मगलर **प्रयाप्त** अइ। परंच दुखक बात ई छैक जे ओ देवलोक मे छैथ आ देवगण हुंनका छोड़ि नइ सकैत छथिन।

-तखन?

-तखन किछु नहि। तोरा अपने राज मे व्यासक खोज करवाक छह आ ओकरा दरबार में सम्मानक संग नीक तनखा पर नियुक्ति करबाक छह। पद राष्ट्रकवि क बना **सकैत** छह,

राइट यू आर मोता ' जानथि बाबा बैद्यनाथ जे झूठ कहैत होइयह। हमरा पूर्ण विश्वास अछि. ज ई बुद्धि इण्डियन ब्रेन में नइ आबि सकैए। तोरा 'इम्पोटेंट' ब्रेन प्राप्त छह।

-खैर देरियो स चिन्हलह त। अच्छा हम एखन चली। कैकटा काज अइ।

-बेश।

आ करमर्दन केलाक बाद बेताल एक दिस आ डांर लचकबैत विक्रमादित्य दोसर दिस बिदा भ गेलाह।



संघर्षक प्रतिमान अछि दुलारी देवी

• **प्रो. महेन्द्र लाल कर्ण** (संस्कृतिकर्मी)

'की कहु —नीक साड़ी सब पेटी मे अछि लेकिन नहि पहिरै छी, लोक सभक बोल आ नजरि नहि सहल होइत अछि। हे घर सँ माँजी ओतय-सेवा मिथिला, जँ कहियो नीक साड़ी पहिर जायब त भरि रस्ता लोकक नजरि आ बोलीये सुनि मरि जायब।' नब्बे के दशक मे स्वंय दुलारी हमरा सँ अपन दर्द, भरि आँखि नोर नेने कहने रहय।

हँ ,हम बात कय रहल छी पद्मश्री सम्मान लेल नामित मधुबनी जिलाक राजनगर प्रखण्डक रांटी गाम मे मुसहर मुखिया के परिवार मे 27 दिसम्बर 1967 मे जन्म लेनिहार दुलारी अर्थात दुल्ला,दुल्लो के विषय मे। लोक सभ स्नेह सँ दुलारी देवी के उक्त उपनाम सँ सम्बोधित करैत छैक।

दुल्लो अइछो बड़ निश्छल, ह्रदय के निर्मल आ कोमल।

मिथिला मे कहबी छैक जे राजा के सेवने कान दुनु सोन आ बनियां के सेवने छटाँक भरि नोन।

दुलारी के दादा, पिता आ समस्त परिवार पदमश्री महासुंदरी देवीक परिवार सँ जुड़ल छल। आंगन, घर-बाहरक सभटा कार्य परिवारक सदस्य जँका दुलारिक परिवार सम्हारैत रहय। महासुंदरी जी के चौधरिया परिवार मे लिखिया कार्य होइत रहय जे दुलारी के बड़ आकर्षित कयलक आ ओ अपन घर आ बाहर लकड़ीक कोयला सँ चीरा, लाइन पारय लागल, माय धनेश्वरी देवी खिसिया क बाजय गे भरि घर, आंगन की करिया चीरा पारय छैं? बाप ओहिना करजा मे छौ और भ जेतौ। अहि बीच बाबा नागार्जुन के विलाप कविताक पाँती चरितार्थ भेल—किदन कहाँ दन भेल आ वियाह भ गेल। बारहे बरिस मे दुलारिक विवाह बेनीपट्टी प्रखण्डक बलाइन कुसमौल गांव मे भ गेल। कायस्थक परिवार सँ भेटल शिक्षा-संस्कार दुलारी के सासुर मे कतौ नहि भेटल। मलाह जातिक पारंम्परिक कार्यादि दुलारी के रास नहि अएलैक, ताहि पर 6 मासक बेटी नहि रहलै, ओ घुमि कय नैहर आबि गेल से फेर कहियो सासुरक मुंह नहि देखलक।

अहि संकटक घड़ी मे महासुंदरी जी आ कर्पूरी देवीक स्नेह, ममता दुलारी के भेटल। दुलारी कर्पूरी देवीक सेवा मे लाइग गेल। अहि बीच भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय द्वारा 6 मासक मिथिला चित्रकला प्रशिक्षण महासुंदरी जी ओतय प्रारम्भ भेल जाहि मे दुलारी सेहो शामिल भेलीह। एकर बाद स्वनामधन्य गौरी मिश्राक (माँजी) सेवा मिथिला सँ जुड़ि मिथिला चित्र बनाबय लगलीह।

माँ जी के ओतय जे नीक पेंटिंगक आर्डर आबय त ओ दुलारी सँ बनाबय कहथिन। अहि बीच कर्पूरी देवी जी के ओतय विशेष परिस्थिति मे दुलारी के अहर्निश सेवा देबय पड़लनि जाहि सँ सेवा मिथिला गेनाइ छोड़य पड़लनि। आब नीक पेंटिंग वास्ते सेवा मिथिला के आर्डर दुलारी घरे सँ बना देबय लगलीह। बाद मे दुलारिक बनाओल कागज दुलारिक घरे सँ 15-20 हजार मे बिका जाईन।

नजदीक सँ जानय वला जनैत छथि जे कर्पूरी देवी जी के व्यवहार, निश्चछलता, कोमलता आ हुनकर लिखियाक प्रभाव सम्पूर्णता में दुलारी पर पड़ल। चौबीसों घण्टा दुलारी कर्पूरी जी के संग रहैत छलीह। महासुंदरी जी के कचनी आ कर्पूरी जीक भरनी दुनु दुलारिक पेंटिग मे स्थान पबैत अछि। दुलारी कहैत अछि जे



लिखिया मे हम जाबैत रंग नहि भरैत छी त सन्तोष नहि होइत अछि।

मिथिला चित्रकला मे दुलारी पद्मश्री प्राप्त करय वाली सातम कलाकार छथि। अहि सँ पूर्व जगदम्बा देवी (1975), सीता देवी (1981), गंगा देवी (1984), महासुंदरी देवी (2011), बौआ देवी (2017) आ गोदावरी दत्त (2018) पद्मश्री सम्मान सँ सम्मानित भेल छथि।

दुलारी देवीक जीवन अत्यंत संघर्ष पूर्ण रहल अछि। दुलारिक सन्दर्भ मे गीता वुल्फक पुस्तक' फॉलोइंग माई पेंट ब्रश'आ मार्टिन लि कॉजक फ्रेंच भाषा मे लिखल पुस्तक आ मिथिला मे दुलारी की जीवन गाथा व कलाकृतियाँ' प्रकाशित अछि। सतरंगी नामक पुस्तक मे दुलारीक पेंटिंगक सेहो खास स्थान अछि। संगहि इग्नू के लेल मैथिली मे तैयार कयल गेल आधार पाठ्यक्रम के मुख्य पृष्ठ के लेल दुलारिक बनाओल चित्र के चूनल गेल। पटना मे बिहार संग्रहालय मे कमला नदीक पूजा पर दुलारी द्वारा बनाओल पेंटिंग अचम्भित करैत अछि। दुलारी 1999 मे ललित कला अकादमी पुरस्कार, 2012-13 मे बिहार राज्य पुरस्कार सँ सेहो सम्मानित भेलीह।

संपर्क : 82100 09816

ॐ एयरपोर्टाय नमः ॐ तिलौड़ियै-तिसियौड़ियै स्वाहा!

● वीरेन्द्र नारायण झा

सरकार कोनो काज करए, लोक खिधांस शुरू कइये दैत अछि। अइ मे दोष ककरो नहि छैक। कियो पंचैती करए जे सरकार बैसले ठाम मोछे पिजेतै आ कि कोनो काजो करतै! जखन कि पाँच साल धरि शिलान्यास, उदघाटन आ मंत्रीमंडलक विस्तार सन काज में अपस्यांत रहिते अछि। एमहर जनता-जनार्दन लग ने नोकरी-चाकरी, खेती-बारी आ ने रोजगार छैक, तखन तँ कुटीचाली करबे करत। नोकरी भेटि जाओ, सरकारक गुणगाने मे आफिस छोड़ि फरार रहत।

से कहै छी, सरकार जखन झंझारपुर लेल मेडिकल कॉलेज आ दरभंगा लेल हवाइ सेवा शुरू करबाक घोषणा केलक, तँ जनता मुह बिचका लेलक। अइ बेर लोकक कहब रहैक जे ई सभ चुनावी घोषणा छी। वोट ल लेत, आ सरकार बनेलाक बाद जनता सँ मुह चोरा क' बिनु फेविकोल लगौने कुरसी सँ सटि जायत!

मुदा से नहि भेलै। तर्क छोड़ि सरकार सतर्क रहए। दुनू काजक विधिवत चुमाओन चुनाओ सँ पर्व भए गेल आ पुरने सरकार के पाग पहिरा देल गेल। आ एमहर समिया वालीक चट्टी चलबा काल खुशी सँ चट-चट बाज लागल। एक तँ एलान रहैक जे चप्पलो पहिरै वला हवाइ जहाज मे सफर क सकैए आ दोसर जमाय आब सासुर आबि सकताह। ट्रेन में बेसी समय लागि जाइत छनि से एनाइ संभव नहि भए पबैत छनि। विश्वविख्यात अंतरराष्ट्रीय कंपनी में दिवा-रात्रि सेवारत छथि, दू-चारि देशक भार छनि। हुनका सासुर एबा लेल जहाजे चाही ने। से सरकार ओमहर सुविधा देलक आ सासु माँ एमहर भगवती कँ पातड़ि देलनि। भगवती प्रसन्न भेलथिन आ एरोड्रम पर हवाइ जहाज दौड़-उड़ लागल। कबुला-पाती पूर्ण भेलनि। अइ बेर जमायक अएबाक खबरि सुनि सासु माँक आँखि प्रसन्नता सँ नोरा गेलनि। नोर रखले रहैत छनि, एहन बेर लेल।

गे माय गे! कहू त! ओझा कतेको साल पर आबि रहलाहए आ से कतहु हाले मे बनल एरोड्रम पर उतरताह। जहाज कोना ऊपर सँ नीचा दौड़तै, जँ चक्का पीच पर धँसि जाय, तखन? किछु छै, एखन खूब पक्का त नहिएं भल हेतै ने। जँ कतौ खाधिए भए गेल होय! कोनो ठाम हवाइ जहाज कोना पानि पर स्लिप क क पहाड़ मे धक्का मारि देने रहैक। दरभंगो मे तँ सभ दिन पानिक खिचाड़ि रहिते छै। आ जँ पिछड़ि क' बम्बई लौटि गेलै, तँ जमाय जन्म भरि एबो नहि करताह...! हे भगवती! हमहूँ की अनट-बिनट सोचह लगलहुँ! धौर! एहनो जुलुम कतौ भेलैए! दुनू कान कँ ऐंठैत बजलीह, हे जानकी माय! आब ई गप्प सभ माथ मे आबैए नै देबै, खाहे केहनो खराब से खराब समाचार देखी-सुनी। एन एच 57 पर ट्रक-बसक टायर कतबो फटै आ कि चलैत लोक कँ ठोकर लगै, हम सुनबे नै करब। सुनब तँ अनठिआ देबै।

हमहूँ केहन बताहि छी। की-कहाँ सोच' लगलहुँ आ दू पहर दिन बीति गेल। जकरा घर मे जमाय अबै वला छै, ओकर अपन साक्षात सासु सरकारी चौकीदार जकाँ सुस्तायल-ओंघायल रहत! 'गे माय! ओझा जी कँ गाम-घरक बनल दनौड़ी, तिलौड़ी, तिसियौड़ी, चरौड़ी, मुरौड़ी, अदौड़ी, फुलौड़ी कुम्हरौड़ी, आलू-सबुजदाना पापड़, बिरिया, कोबी सुखोंत, उसना चाउरक रोटी, रान्ह कैल रोटी, आमक फाड़ा-कुच्चा अचार, खटमिट्ठी, खेसारी- बथुआ-केरावक साग बड्ड पसिन्न छनि'। बेटी कहैत छलनि, 'माँ गे, तोहर जमाय कँ खाय काल जँ बिरिया द' देबहीं तँ ओ बिरयानी छोड़ि देतै। चाय संगे दनौड़ी-चरौड़ी भेटि जाय तँ ओ बजारक स्नैक्स दिस ताकै नहि छै।'

गाँव मे चर्च-बर्च होमए लागल जे ककर घरक बेटा-जमाय हवाइ जहाज सँ पहिल फ्लाइट मे दरभंगा आबि रहलथिन्हए। ताहि मे समिया गामक मुन्ना विकास, फार्स्ट फ्लाइटक फार्स्ट टिकट ल क फार्स्ट क्लास फार्स्ट केलनि। गाँव मे उत्सव वला वातावरण छल। मुन्ना कँ पार्टी लागि गेलनि। एहि मे चप्पलधारी सभक सहयोग सेहो छल। एनएचक संग हवाइ जहाजक सपना पूर भेलै से सभक मोन महो-महो छल आ तेँ चुनाओ में विपक्षक सपना अकास मे उड़िया गेल।

मुदा ताहू स्थिति मे जमाय बाबू एक दिन सासुर मे प्रगट भेलाह। हर्षित महतारी (सासु) अद्भुत रूप निहारी! तत तिलकोड़ तरल खुएलथिन कि ओझा जीक पेट डिस्को करए लगलनि। मुदा फार्स्ट-एड जोगार रहनि, ठीक भए गेलाह।

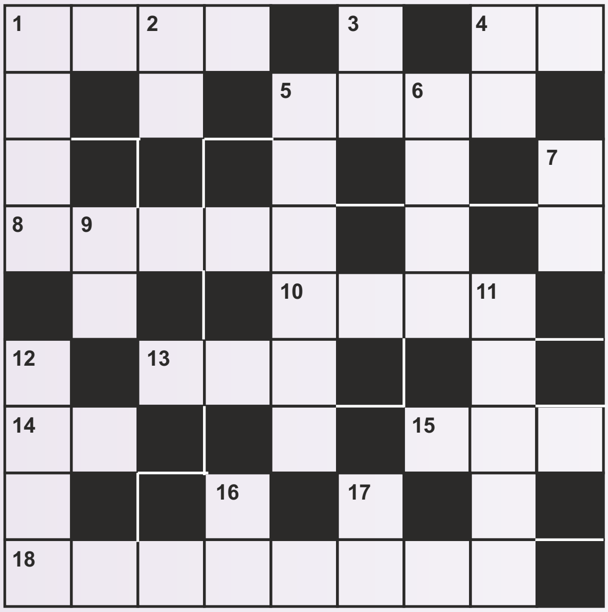
जयबा काल सासु-ससुर जमायक आबेस आ बिदाइ मे नाना प्रकारक व्यंजन सांठि देलथिन। ओझा जी सोचलनि, जत लब्धम तत प्राप्तम! विदा भए गेलाह।

एयरपोर्ट पर लगेज तौलल गेल। ओझा जीक सामान निर्धारित ओजन सँ बहुत अधिक छल, जकरा उघबा लेल ओइ वस्तुक दाम सँ हजारो रुपैआ बेसी देमए पड़ितनि। आ एयरपोर्ट पर सदयः परिचित पंडित जी तँ पेटे ल क जा रहल छलाह। से सब व्यंजन हुनके दान क देलनि, मंत्र-पाठक संग; ॐ एयरपोर्टाय नमः ॐ दनौड़ियै स्वाहा! ॐ तिलौड़ियै स्वाहा! ॐ चरौड़ियै स्वाहा! अंत मे अधिकम भारस्वरूप सर्व सामग्रियै स्वाहा! ॐ एयरपोर्टाय नमः!

ओझा जी मुह लटकेने जहाज दिस विदा भेलाह आ पंडित जी हुनक पछोड़ धेलनि, चप्पल फटफटबैत, मुस्की छोड़ैत!

सम्पर्क : 79034 25262 / 98352 95040

वर्ग-पहेली : 66



बामा सं दहिना

1. स्थानीय लोकक लेल निजी क्षेत्र मे 75 प्रतिशत आरक्षण केर व्यवस्था केनिहार राज्य।
4. कथा-विवाहक प्रस्ताव।
5. 1983 केर क्रिकेट विश्वकप मे विकेटकीपर।
8. हाथ मे पहिरबाक गहना।
10. विवाह सं पूर्वक दिन स्नान।
13. राजस्थानक लोकप्रिय पकवान।
14. रत्नक मात्रा अभिव्यक्ति लेल शब्द।
15. परिकल्पना, अवधारणा।
18. भाषा सम्मान सं पुरस्कृत पहिल मैथिल कवि।

ऊपर सं नीचा

1. हर जोतनिहार।
2. पहर, चतुर्थांश काल।
3. बीघाक बीसम अंश।
4. थोड़बे।
5. आभास कुमार गांगुली एहि प्रसिद्ध गायक केर मूल नाम अछि।
6. धनिक, प्रभावशाली।
7. चैती फसिल।
9. तरहत्थी मे पिठार लगाए अंकित छाप।
11. डाक सं टाका पठाएब।
12. विषहीन सांप।
16. सत्य,यथार्थ।
17. पक्का घर।

वर्ग-पहेली : 66 क उत्तर अगिला संख्या मे

बाल-गीत

फहरत कीर्ति दिगन्त

•*हितनाथ झा*

खूब खाउ, खूब खेलाउ,
खूब मन सँ जे पढ़ैछ।

रहि विनम्र, गुरूजन लग नत जे,
तखनहि शीर्ष चढ़ैछ।

घड़िक सुई सन जे अनुशासित,
सदिखन लक्ष्य पबैछ।

ज्ञानक अन्त न होइछ कखनो,
पढिते भूख बढ़ैछ ।

रुचि अनुकूल विषय अहाँ चूनू,
पहुँचू लक्ष्य अनन्त।।

मातु-पिता-सकलो समाज मे,
फहरत कीर्ति दिगन्त।

वर्ग-पहेली : 65 क उत्तर

प	रा	क्र	म	दि	व	स		ह
र			ही			क्ष	त्रि	य
को	वै	क्सी	न		स	म		व
टा					मा			द
	भा	व	ना	कं	ठ		स	न
	भ		रा			य	म	
भा	ट		य	म	क		दा	
मि		प	ण		व		ओ	छ
नी	प	ल			ई	रा	न	

• *कुमार राधारमण*
58ए, भारी उद्योग एवं सार्वजनिक उद्यम मंत्रालय,
उद्योग भवन, नइ दिल्ली-110001, सम्पर्क : 90158 44228